MANOHAR MEMORIAL COLLEGE OF EDUCATION FATEHABAD, HARYANA

''प्रगतिशील नारी के बढते कदम''

An Edited Book

ISBN # 978-81-958181-9-8

Dedicated to Women Empowerment

Invited Manuscripts

प्रगतिशील नारी के बढ़ते कदम

An Edited Book

ISBN # 978-81-958181-9-8

मुख्य संपादक

डॉ. जनक रानी

प्राचार्या

मनोहर मैमोरियल शिक्षण महाविद्यालय

फतेहाबाद (हरियाणा) भारत

प्रगतिशील नारी के बढ़ते कदम

ISBN: 978-81-958181-9-8

संपादक

सुमन लता

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग

मनोहर मैमोरियल शिक्षण महाविद्यालय

फतेहाबाद (हरियाणा) भारत

सह–संपादक

डॉ. कविता रानी

असिस्टेंट प्रोफेसर, इंग्लिश विभाग

मनोहर मैमोरियल शिक्षण महाविद्यालय

फतेहाबाद (हरियाणा) भारत

डॉ. गुंजन बजाज

असिस्टेंट प्रोफेसर, कॉमर्स विभाग

मनोहर मैमोरियल शिक्षण महाविद्यालय

फतेहाबाद (हरियाणा) भारत

सुनीता तलवार

प्रवक्ता, हिंदी विभाग

मनोहर मैमोरियल शिक्षण महाविद्यालय

फतेहाबाद (हरियाणा) भारत

© 2023, IJRTS Takshila Foundation
This book is an accurate reproduction of the original. Any marks, names, colophons, imprints, logos, or symbols or identifiers that appear on or in this book, except for those of IJRTS Publications, are used only for historical reference and accuracy and are not intended to designate origin or imply any sponsorship by or license from any third party.

Limits of Liability and Disclaimer of Warranty
The authors and publishers of this book have tried their best to ensure that the derivations, procedures & functions contained in the book are correct. However, the author and the publishers make no warranty of any kind, expressed or implied, with regard to these derivations, procedures & functions or the documentation contained in this book. The author and the publishers shall not be liable in any event for any damages, incidental or consequential, in connection with, or arising out of the furnishing, performance or use of these derivations, procedures & functions. Product names mentioned are used for identification purposes only and may be trademarks of their respective persons or companies.
The disclaimer of warranties and limitation of liability provided above shall be interpreted in a manner that, to the extent possible, most closely approximates an absolute disclaimer and waiver of all liability. Publisher may be reached at ijrtstakshilafoundation@gmail.com

ISBN: 978-81-958181-9-8
Price: ₹ 999

Published by Dr. Vipin Mittal for IJRTS Takshila Foundation,
71-75 Shelton Street, Covent Garden, London WC2H 9JQ ENGLAND
Printed in India
by Mittal Printers, SCF#10, Opposite DRDA, Jind-126102 INDIA
Bound in India
By Satyawaan Binders, SCF#09, Opposite DRDA, Jind-126102 INDIA

हमारी संस्कृति में माना गया है कि यत्र नार्यस्तु पूज्यंते तत्र रमंते देवता । यही कारण है कि राम से पहले सीता, श्री कृष्ण से पहले राधा और नारायण से पहले लक्ष्मी का नाम लिया जाता है और नारी का शक्ति रूप में पूजन किया जाता है ।इसी प्रकार हमारे यहां शिव के अर्धनारीश्वर स्वरूप को पूजा जाता है। अर्धनारीश्वर यानी आधा शरीर पुरुष का और आधा शरीर नारी का, तभी उनका शिव स्वरूप पूर्ण माना जाता है। कहने का अभिप्राय यह है कि शिव के बिना शक्ति का और शक्ति के बिना शिव का कोई अस्तित्व नहीं है।

आज हमारे लिए यह गर्व की बात हैं कि अनेक उच्च पदों पर नारी अपना स्थान बना चुकी है । आज वो मंत्री, प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति पदों तक के पद को सुशोभित कर अपने शक्ति स्वरूप का परिचय दे रही है। शिक्षा के क्षेत्र में आज वह पुरुषों से कहीं आगे अपना स्थान बना कर विज्ञान ,व्यापार ,अंतरिक्ष, राजनीति और अध्यात्म के क्षेत्र में नए–नए कीर्तिमान स्थापित कर रही है ।आज भारतीय नारी हर क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रयासरत है। आज वह अपनी सीमित दायरे से निकलकर अपनी योग्यता व रचनात्मकता के बल पर अनेक महत्वपूर्ण कार्य कर रही है।

महिलाओं का यह आत्मनिर्भरता केवल देश की ही नहीं, बल्कि दुनिया की भी जरूरत है। रिश्तों को सहेजते हुए भी महिलाएं अपने पैरों पर खड़ी होकर अपने शक्ति स्वरूप का परिचय दे रही है।

आज नारी से कोई भी क्षेत्र अछूता नहीं है, वह प्रत्येक क्षेत्र में उसने अपनी प्रतिभा दिखा कर आगे बढ़ने के लिए प्रयत्नशील है। आवश्यकता इस बात की है, कि नारी की प्रगति की निरंतरता बनाए रखने के लिए ,अपनी दूरदर्शिता का परिचय देते हुए आगे बढ़े और स्वयं का सम्मान करें और दूसरों के दृष्टिकोण में परिवर्तन लाने का भी प्रयास करें। इसमें कोई संदेह नहीं है कि नारी अपना आसमान खुद तलाश लेगी, और साथ ही अपने सम्मानजनक स्वरूप को बरकरार रखेगी।

प्राक्कथन

समाज के युवाओं को नयी दिशा देने के लिए स्व०– मनोहर बतरा जी की स्मृति में मनोहर मैमोरियल ही महाविद्यालय, फतेहाबाद (हरियाणा) 24 जून 1970 को अपने पवित्र अस्तित्व में आया । इस महाविद्यालय की शुरुआत कला-संकाय से हुई । क्षेत्र में भावी शिक्षक निर्माण के उद्देश्य से वर्ष 2004 मे मनोहर मैमोरियल शिक्षण महाविद्यालय अस्तित्व में आया। इसी श्रृंखला को आगे बढ़ाते हुए वर्ष 2007 में डी.एल. एड. कोर्स और वर्ष 2022 में चार वर्षीय बी.ए.बी.एड एकीकृत कोर्स शुरू किया गया। यह शिक्षण संस्थान समाज में सांमजस्यपूर्ण शैक्षणिक माहौल बनाये रखने में निरंतर प्रयासरत है। इस उद्देश्य के लिए महाविद्यालय का महिला प्रकोष्ठ लैंगिक असमानताओं को दूर करने, महिलाओं को उनकी वास्तविक क्षमता को पहचानने और समाज की प्रतिस्पर्धा में नारी को सशक्त करने में निरंतर प्रयासरत है। महिला प्रकोष्ठ नारी के समग्र क्षेत्रों का विकास के लक्षित समूह में बी.एड, बी.ए.बी.एड और डी.एल.एड के साथ आस–पास के समुदाय की महिलाओं और आस–पास के प्राथमिक और माध्यमिक छात्रों को शामिल करता है। इसके साथ–साथ महिला, छात्रों और स्टॉफ सदस्यों के बीच सम्मानजनक और मैत्री पूर्ण संबंधों स्थापित करने में निरंतर प्रयासरत है। महाविद्यालय इसी जागरूकता अभियान के तहत महिलाओं के समग्र विकास के लिए पुस्तक का प्रकाशन कर रहा है। जिसका शीर्षक – ''**प्रगतिशील नारी के बढते कदम ''** रखा गया है। इस पुस्तक में समाज से सजृनशील लेखकों, छात्रों, शिक्षाविदों के आलेखों का संकलन किया गया है। निश्चित ही इसके दूरगामी परिणाम समाज हित में होंगे। महाविद्यालय पुस्तक प्रकाशन में सहयोग देने वाले सभी युवा लेखकों के सफल व उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

संदेश

Prof. Arti Gaur
Dean of Colleges
NSS and YRC Coordinator
Chairperson, Department of Business Administration
CDLU, Sirsa

मुझे यह जानकर बेहद प्रसन्नता हुई कि मनोहर मैमोरियल शिक्षण महाविद्यालय फतेहाबाद के महिला प्रकोष्ठ द्वारा ''**प्रगतिशील नारी के बढते कदम**'' शीर्षक पर शैक्षणिक सत्र २०२२–२३ में पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है। महाविद्यालय का यह प्रयास रचनात्मकता व सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में अवश्य सहायक होगा।

नारी ने आज विज्ञान, व्यापार, खेत, शिक्षा, सैन्य, मेडिकल, कला, राजनीति आदि कार्यों में नये कीर्तिमान स्थापित किये हैं। आज वो अपने सीमित दायरे को छोड़ कर अपनी योग्यता के बल पर निंरतर समाज निर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है। नारी के बढ़ते कदमों को गति देने के लिए महाविद्यालय के महिला प्रकोष्ठ का यह सहरानीय प्रयास है। जिसके दूरगामी परिणाम निश्चित ही राष्ट्रहित में होंगे।

शुभकामनाओं सहित

संदेश

संजीव बत्रा

उप-प्रधान

मनोहर मैमोरियल शिक्षण महाविद्यालय

फतेहाबाद (हरियाणा)

अत्यन्त हर्ष व गौरव का विषय है कि मनोहर मैमोरियल शिक्षण महाविद्यालय फतेहाबाद के महिला प्रकोष्ठ द्वारा ''**प्रगतिशील नारी के बढते कदम**'' विषय पर पुस्तिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

आज विश्व के प्रत्येक क्षेत्र को अग्रणी लाने में महिलाओं की भूमिका सर्वविदित है। हमारे सनातन धर्म ग्रन्थों वेदशास्त्रों ने 'यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते तत्र रमयन्ते देवता' का संदेश देकर समाज को नारी के प्रति सम्मान व आदर्श भाव बनाए रखने के लिए सचेत किया है। वर्तमान परिपेक्ष्य में राजनीति, प्रशासन, कानून, खेल, शिक्षा, चिकित्सा, विज्ञान, धर्म, अध्यात्म, पर्यावरण सरंक्षण आदि प्रत्येक क्षेत्र में नारी नें अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है।

हालांकि, समाज में महिलाओं के उत्थान संबंधी विचारधारा पर रूढ़िवादी सोच का प्रभाव पिछले लंबे अरसे से प्रतिबिंबित रहा है। धीरे–धीरे साक्षरता और जागरूकता के बाद महिलाओं के संदर्भ में सोच को एक नई दिशा मिली है।

निःसंदेह, समाज की महिलाएं निरंतर अपनी मेघा शक्ति व सजग के प्रयासो के परिणाम स्वरूप निरंतर नए कीर्तिमान स्थापित कर रही है।

शिक्षण महाविद्यालय का उपाध्यक्ष के नाते मैं व्यक्तिगत रूप से व शिक्षण समिति की ओर से इस पुस्तिका के सफल प्रकाशन के लिए महिला प्रकोष्ठ के प्रभारी को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ और यही कामना करता हूं कि नारी शक्ति नित–नवीन बुलंदियों को प्राप्त कर, देश–विदेश समाज व परिवार का नाम रोशन करें।

संदेश

डा0 जनक रानी (प्राचार्या)

मनोहर मैमोरियल शिक्षण महाविद्यालय

फतेहाबाद (हरियाणा)

''जब है नारी में शक्ति सारी, तो फिर क्यों नारी को कहे बेचारी''

भारतीय महिला–इस शब्द को सुनते ही हर नागरिक के मन में एक छवि उभरने लगती है। इस बात में कोई संदेह नहीं है कि स्वतंत्रता के 61 वर्ष में महिला वर्ग में बड़ी तेजी से परिवर्तन हुए है। आज महिलाएं अपने सीमित दायरे से निकलकर अपनी रचनात्मकता और योग्यता के बल पर विकास प्रकिया में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। नारी जीवन का बदलाव बड़ा ही सराहनीय है। आज की भारतीय नारी को देखकर बड़ा ही गर्व महसूस होता है कि आज कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है जिसमें उसने सफलता हासिल ना की हो। आज लैंगिक समानता की धारणा पुरषों व महिलाओं के बीच समानता की मांग कर रही है। भारत जैसे देश के लिए महिला सशक्तिकरण इसकी वृद्वि व विकास में एक बड़ी भूमिका होगी।

''मंजिलें बहुत है मुश्किल
और कारवां बहुत है कम
मौसम चाहे जिस करवट बैठे
न रूकने देना तू अपने कदम।''

संपादकीय

सुमन लता

सहायक प्रवक्ता, प्रभारी महिला प्रकोष्ठ

मनोहर मैमोरियल शिक्षण महाविद्यालय

फतेहाबाद (हरियाणा)

नारी शब्द अपने आप ने बड़ा ही गरिमामय शब्द है। उसे समग्र सृष्टि की अधिष्ठात्री माना गया है। ये वो शक्ति है जो पत्नी के रूप में जीवन में रंग भरती है; मां के रूप में व्यक्तित्व का निर्माण करती है; बेटी के रूप में दायित्व का बोध करवाती है; बहू के रूप में घर को स्वर्ग बनाती है।नारी अपने विभिन्न रुपों से पुरुष के जीवन को अलंकृत करती है। भारतीय संस्कृति में नारी को अत्यंत महत्वपूर्ण व उच्च स्थान प्रदान किया गया है। वेदों में नारी के शील, गुण, कर्तव्य, अधिकार और सामाजिक भूमिका का बहुत ही सुंदर वर्णन किया गया है। वेद उन्हें घर की सम्राज्ञी कहते हैं और उन्हें देश की शासक, पृथ्वी की सम्राज्ञी तक बनने का अधिकार देते हैं। अनेक महान नारियों के उदाहरण हमें मिलते हैं जो हमारे लिए प्रेरणा स्रोत हैं। जैसे –: अपाला, घोषा, सरस्वती, सर्पराज्ञी, सूर्या, सावित्री, अदिति, दाक्षायनी, लोपामुद्रा, विश्ववारा, आत्रेयी आदि ये ऐसी महान शक्तियां है ,जिन्होंने अपने ब्रह्म ज्ञान व कौशल से को विश्वको एक नई दिशा दी।

हमारी संस्कृति में माना गया है कि यत्र नार्यस्तु पूज्यंते तत्र रमंते देवता । यही कारण है कि राम से पहले सीता, श्री कृष्ण से पहले राधा और नारायण से पहले लक्ष्मी का नाम लिया जाता है और नारी का शक्ति रूप में पूजन किया जाता है ।इसी प्रकार हमारे यहां शिव के अर्धनारीश्वर स्वरूप को पूजा जाता है। अर्धनारीश्वर यानी आधा शरीर पुरुष का और आधा शरीर नारी का, तभी उनका शिव स्वरूप पूर्ण माना जाता है। कहने का अभिप्राय यह है कि शिव के बिना शक्ति का और शक्ति के बिना शिव का कोई अस्तित्व नहीं है।

निसंदेहः पुरुष भी समाज निर्माण में उतना ही सहयोग करते हैं जितनी नारी ।पुरुष और नारी दोनों एक ही गाड़ी के पहिये है। जब तक इन दोनों पहियों में आपसी संतुलन बना रहता है, तब तक जीवन –रूपी

गाड़ी निर्बाध रूप से आगे बढ़ती रहती है ,लेकिन जैसे ही असंतुलन पैदा होता है ,वही समाज के विकास में अनेक बाधाएं आ जाती है।

भारत में प्राचीनकाल में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं था, लेकिन धीरे–धीरे सांस्कृतिक पतन के कारण लैंगिक भेद बढ़ा और महिलाओं का समाज में स्थान गौण होता गया । इसमें विदेशी आक्रमण एवं अनेक कुप्रथाओं का भी योगदान रहा है। अपने जीवन को दूसरों को संभालने में न्योछावर करने वाले इस शक्ति को कई बार पुरुष प्रधान समाज द्वारा दीन– हीन समझ कर पतन की ओर ले जाया गया है। इसकी संजीव अभिव्यक्ति हमें बीसवीं शताब्दी के कथा– साहित्य में मिलती है। इन उपन्यासों, नाटकों ,कहानियों आदि विधाओं में नारी की मनोःसंघर्ष को बखूबी उभारा गया है।

अगर वर्तमान समय की बात करें तो हम यह मानते हैं कि समाज निरंतर प्रगति कर रहा है, लेकिन क्या वास्तव में समाज प्रगति कर रहा है? जो नारी शक्ति का स्वरुप थी, वह लगातार उत्पीड़न का शिकार हो रही है। शिक्षा से वंचित हैं, भ्रूण हत्या के लिए मजबूर होती हैं, जिनके पास काम के साधन नहीं हैं या भुखमरी में भी जी रही हैं और आए दिन उसे लैंगिक असमानता के कारण उत्पीड़न का शिकार भी होना पड़ रहा है। नारी की शक्तियों का कहीं छिप जाना प्रगति का सूचक नहीं है, बल्कि पतन का सूचक है और हमें जगाने के लिए महिला सशक्तिकरण दिवस मनाने तक की आवश्यकता महसूस होती हैं। लेकिन नारी की यह स्थिति समय, समाज ,समुदाय विशेष में अलग–अलग रही हैं। माना कि हमारी सरकार का ध्यान महिलाओं की स्थिति सुधारने की ओर गया और अनेक योजनाओं के माध्यम से विशेष प्रावधान रखे गये। समय के साथ महिलाओं की भूमिकाओं ने कई बड़े बदलाव आया है।एक समय था जब भारतीय महिलाओं की भूमिका सिर्फ घर की चारदीवारी तक सीमित थी, आज उनकी सोच ने घर की चारदीवारी को तोड़ते हुए स्वतंत्रता की ओर बढ़ी है। पिछले कुछ सालों में महिलाएँ कई क्षेत्रों में आगे आयी हैं। उनमें नया आत्मविश्वास पैदा हुआ है और वे अब हर काम को चुनौती के रूप में स्वीकार करने लगी हैं । नारी ने आज अपनी योग्यता का लोहा मनवाते हुए जीवन के विभिन्न आयामों में अपने स्वरूप को प्रदर्शित भी किया है और साबित किया है कि वो किसी भी कार्य को करने में पुरुष से कम नहीं है। पुरुष प्रधान समाज द्वारा बनाई गई सभी दकियानूसी धारणाओं को उसने चुनौती भी दी है । इसी प्रकार अगर हम कुछ ऐसी महिलाओं की बात की बात करें ,जिन्होंने भारतीय इतिहास में अपना नाम अंकित किया है ,उन्होंने पुराने चले आ रहे दबाव और घुटन को समाप्त करके नये समाज की स्थापना की। महाभारत की ऐतिहासिक पात्र द्रौपदी को कौन नहीं जानता। जिन्होंने अधर्म की बुनियाद को खत्म करने ना जाने कितने समझौते किए, लेकिन शक्ति स्वरूपा वो नारी अपने निश्चय पर अडिग रही। उन्होंने एक नए सिरे से भारत निर्माण में बहुत बड़ी भूमिका निभाई। सावित्रीबाई फूले भी दलित थी ,उनके संघर्षों और हिम्मत की वजह से आज नारी स्वतंत्र शिक्षा ले पा रही है। किरण बेदी, पीटी उषा, कल्पना चावला, सानिया मिर्जा, शबाना आजमी, भक्ति शर्मा, अरुणिमा सिन्हा, साइना नेहवाल, पूजा ठाकुर, रश्मि बंसल, तानिया सचदेव जैसी असाधारण महिलाओं को लेकर हम गौरवान्वित महसूस करते है। इन महिलाओं ने साबित

किया है कि वे किसी से कम नहीं हैं। ऐसे बहुत सारे नारी शक्ति के उदाहरण हमारे सामने हैं जो हमारे लिए प्रेरणा स्रोत है।

आज हमारे लिए यह गर्व की बात हैं कि अनेक उच्च्व पदों पर नारी अपना स्थान बना चुकी है ।

आज वो मंत्री, प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति पदों तक के पद को सुशोभित कर अपने शक्ति स्वरूप का परिचय दे रही है। शिक्षा के क्षेत्र में आज वह पुरुषों से कहीं आगे अपना स्थान बना कर विज्ञान ,व्यापार ,अंतरिक्ष, राजनीति और अध्यात्म के क्षेत्र में नए–नए कीर्तिमान स्थापित कर रही है ।आज भारतीय नारी हर क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रयासरत है। आज वह अपनी सीमित दायरे से निकलकर अपनी योग्यता व रचनात्मकता के बल पर अनेक महत्वपूर्ण कार्य कर रही है।

महिलाओं का यह आत्मनिर्भरता केवल देश की ही नहीं, बल्कि दुनिया की भी जरूरत है। रिश्तों को सहेजते हुए भी महिलाएं अपने पैरों पर खड़ी होकर अपने शक्ति स्वरूप का परिचय दे रही है।

हमारा आधुनिक भारतीय समाज नारी में व्याप्त दोहरी भूमिका के कारण नारी जीवन में भी अनेक समस्याएं भी उठ खड़ी हुई है। पश्चिमी सभ्यता की चकाचौंध ने उसे कई तरह से प्रभावित किया है। सोशल मीडिया ने एक तरफ जहाँ स्त्रियों के लिए अभिव्यक्ति और अस्मिता के हक मे एक सकारात्मक पहल की है, वहीं इसका नकारात्मक पक्ष यह भी है कि विज्ञापन, फिल्मों और टीवी सीरियल में नारी की जो छवि बिगाड़ी गई है, उसके परिणाम स्वरूप मानसिक तनाव व मूल्यों का पतन भी हमें देखने को मिलता है। अर्धनग्नता को भी बढ़ावा मिला है। स्वतंत्रता और शारीरिक सुंदरता की चाह ने सही गलत के विवेक का हनन किया है और खासकर युवा पीढ़ी में इसका प्रभाव अधिक देखने को मिला है।

अंततः हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि नारी वास्तविक रुप से तभी सशक्त होगी, जब वह अपनी योग्यता के बल पर आगे बढ़ने के साथ शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर भी बल देगी। अपने आप पर समाज का एक अहम हिस्सा समझेगी। माना आज नारी से कोई भी क्षेत्र अछूता नहीं है, वह प्रत्येक क्षेत्र में उसने अपनी प्रतिभा दिखा कर आगे बढ़ने के लिए प्रयत्नशील है। आवश्यकता इस बात की है, कि नारी की प्रगति की निरंतरता बनाए रखने के लिए ,अपनी दूरदर्शिता का परिचय देते हुए आगे बढ़े और स्वयं का सम्मान करें और दूसरों के दृष्टिकोण में परिवर्तन लाने का भी प्रयास करें। इसमें कोई संदेह नहीं है कि नारी अपना आसमान खुद तलाश लेगी, और साथ ही अपने सम्मानजनक स्वरूप को बरकरार रखेगी।

इस पुस्तक की संपादक मैं सुमन लता शोधपूर्ण और सारगर्भित लेख प्रेषित करने के लिए आदरणीय लेखकगणों का हार्दिक धन्यवाद करती हूँ। यदि इस पुस्तक के माध्यम से समाज जागृति में थोड़ी-सी भी सफलता मिली, तो हम अपने इस श्रम को सार्थक समझेंगे । यत्र-तत्र रही त्रुर्टियों के लिए क्षमा भाव रखते हुए अपने बहुमूल्य सुझाव अवश्य प्रेषित करते हुए हमें अनुगृहित करें।

प्रगतिशील नारी के बढ़ते कदम

ISBN: 978-81-958181-9-8

INDEX

Sr.No.	Topic	Written by	Page No.
1	संपादकीय	सुमन लता, सहायक प्रोफेसर	v-vii
2	नारी सशक्तिकरण	डा0 जनक रानी (प्राचार्या)	1-3
3	समाज निर्माण में महिलाओं की भूमिका	सुनीता तलवाड़, प्रवक्ता डी०एल०एड० विभाग	4-6
4	महिलाओं के बढ़ते कदम	सुरेन्द्र सोनी 'काकड़ौद', शिक्षक	7-9
5	वर्तमान परिवेश में महिलाओं की सशक्त उपस्थिति	डॉ. भरत लाल, सहायक प्रोफेसर (हिंदी)	10-12
6	वर्तमान परिवेश में महिलाओं की सकारात्मक भूमिका	डॉ. रमेश कुमार, सहायक प्रोफेसर (हिंदी)	13-16
7	महिलाओं के बढ़ते कदम	रोहताश कुमार सहायक प्रोफेसर (हिंदी)	17-18
8	नारी के बढ़ते कदम और चुनौतियाँ	डॉ.राजा राम सहायक प्राध्यापक हिंदी,	19-21
9	महिलाओं के बढ़ते कदम	डॉ प्रवेश सूद प्राचार्य शांति शिक्षण महाविद्यालय	22

10	कामकाजी महिलाओं का जीवन संघर्ष	अमनप्रीत कौर सहायक प्रव क्ता,	23-24
11	महिलाओं के बढ़ते कदम में सरकार का योगदान	सुनीता रानी, प्रवक्ता (डी०एल०एड० विभाग)	25-30
12	कुछ आम औरतों की भी सोचें	डा. ज्योति, सहायक प्रोफेसर	31-32
13	नारी शक्ति	काजल छात्रा (बी. एड.)	33-36
14	महिलाओं के बढ़ते कदम	शोभा रानी पूर्व छात्रा	37-38
15	महिला सशक्तिकरण	प्रोमिला छात्रा (बी. एड.)	39-41
16	भारत में महिला सशक्तिकरण की ओर समग्रता में निरंतर बढ़ते कदम	संदीप छात्रा (बी. एड.)	42-43
17	भारत में महिलाएं	मनीषा रानी छात्रा (बी. एड.)	44-47
18	नारी महिमा	सोमा राम डारा,	48-49
19	Progressive Women(Pragtisheel mahilaye)	Preet kaur	50-52

20	Women Empowerment: A Seed to be Sown IN Early Childhood, in Every Household	Nishma Rani	53-54
21	Women Empowerment :The winds of Change	Sapna Jain	55
22	Being A Women	Tanvi Monga	56-59
23	ਔਰਤ ਤੇ ਕਾਨੂੰਨ	ਡਾਕਟਰ ਅਨੀਤਾ	60-67

प्रगतिशील नारी के बढ़ते कदम
ISBN: 978-81-958181-9-8

नारी सशक्तिकरण

डा0 जनक रानी (प्राचार्या)
मनोहर मैमोरियल शिक्षण महाविद्यालय
फतेहाबाद (हरियाणा)

''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः'' अर्थात् जहाँ स्त्रियों की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते है। यहा स्त्रियों की पूजा का अर्थ है – स्त्रियों की मान मर्यादा की रक्षा अथवा उनके अधिकारों की समुचित रक्षा। यह पँक्ति इस बात को भी सिद्ध करती है कि प्राचीन भारत में नारी जाति का स्थान गौरवपूर्ण था। उस समय को गृह–लक्ष्मी और गृह देवी के रूप में जाना जाता था। प्रत्येक परिवार में नारी को समान कर दृष्टि से देखा जाता था। जीवन के बड़े से बड़े धार्मिक काम में भी नारी को पुरूष के बराबर स्थान दिया जाता था।

पुरातन युग में नारी को श्रद्धा व विश्वास का रूप समझा जाता था। हमें अनेक ऐसे उदाहरण मिलते है जो यह सिद्ध करते है कि प्राचीन काल में नारी तथा पुरूष के अधिकार व कर्त्तव्य बराबर थे। कैकयी ने बड़ी कुश्लता से युद्ध में फंसे हुए अपने पति राजा दशरथ को निकाला था। उसी प्रकार द्रोपदी निरंतर अपने पतियों को विद्वतापूर्ण परामर्श देती थी। द्रौपती स्वयंवर भी यह सिद्ध करता है कि उस काल में स्त्रियों को अपने पति वरण करने की भी स्वतंत्रता थी। पृथ्वी की सी क्षमता, सूर्य जैसा तेज, समुद्र सी गंभीरता, चंद्रमा सी शीलता, पर्वतों की मानसिक उच्चता आदि गुणों के कारण नारी घर में तथा बाहर भी समान की अधिकारिणी थी।

समय के परिवर्तन के साथ–साथ सभी कुछ बदलता है। भारत में मुसलमान के आक्रमण के समय तो उसकी दशा और भी दयनीय हो गयी। जिसके कारण उसे घर की चार दीवारी में बंद होना पड़ा। वह केवल भोग विलास की दासी बन मात्र बन गयी। स्त्री का प्रेम व बलिदान ही उसके लिए विष बन गया। समाज के ठेकेदारों ने नारी का बराबरी का दर्जा समाप्त कर दिया। अतः उसका पद गौण बन गया। उसे पर्दे में कैद रखा जाने लगा। उसका शिक्षा का अधिकार उससे छीना जाने लगा। इस परिवर्तन के पीछे तत्कालीन राजनैतिक परिस्थितियाँ थी। उसकी स्थिति इतनी दयनीय हो गई कि उसे पुरूष की दासी बनकर अपमान तथा यातनापूर्ण जीवन जीने पर विवश होना पड़ा। अतः अनमेल विवाह, बाल विवाह तथा सती प्रथा जैसी बुराईयाँ पनपने लगी। पर्दा प्रथा ने भी नारी के सम्पूर्ण जीवन को हिला कर रख दिया। उसका दायरा चूल्हे तक सीमित हो गया। तुलसीदास ने नारी के बारे में यहाँ तक कह दिया थाः–

ढोल गवार शुद्ध पशु नारी

ये सब ताड़न के अधिकारी।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद नारी जाति को ऊँचा उठाने का भरसक प्रयास हुआ है। संविधान द्वारा उसे पुरूष के बराबर का दर्जा दिया गया है। प्रत्येक लडकी को अपने पिता की जायदाद से बराबर का हिस्सा पाने की व्यवस्था है। आज स्त्रियाँ स्कूलों व कॉलेज में शिक्षा ग्रहण कर रही है व प्रत्येक व्यवसाय में पुरूश के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर काम कर रही है। विदेशों में भी आज की नारी अपनी अद्भुत छाप छोड़ रही है। स्व. डा. कल्पना चावला, जिन्होने भारत की कभी ना मिटने वाली अद्भुत यादें छोड़ी है। स्व. भारत की प्रधानमंत्री श्री मती इन्दिरा गाँधी ने तो अपनी निर्माम हत्या से दो दिन पूर्व यह कहा थाः– ''अगर मैं देश की सेवा करते हुए मर जाती हूँ तो मुझे नाज़ होगा, मुझे विश्वास है कि मेरे खून की बूँद का हर कतरा इस राष्ट्र को मजबूती देगा व अखण्ड. भारत को जीवित रखेगा।''

महाकवि ''मैथिलीशरण गुप्त'' ने चाहे नारी को 'अबला' कहकर भले ही संबोधित किया, पर आज की नारी पुर्णतया 'सबला' है। आज की नारी की दोहरी भूमिका है। वह आज की चारदीवारी में बंद होकर पुरूष की

ISBN: 978-81-958181-9-8

दासी बनकर केवल उसके भोग की वस्तु नहीं है। आज तो वह शिक्षा, चिकित्सा, सेना पुलिस, उद्योग धन्धे, प्रशासन जैसे अनेक क्षेत्रों में अपनी प्रतिमा एंव योग्यता का परिचय दे रही है। आज उसकी दोहरी भूमिका है–एक ओर वह गृहणी है, परिवार के उतरदायित्व से बंधी है तो दूसरी ओर अपनी अधिकारों तथा स्वाभिमान की रक्षा करने के लिए अपनी स्वतंत्र जीविका भी चला रही है। वह पुरूष प्रधान समाज में रहकर भी अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाए हुए है।

आज की नारी को अपने अधिकारों का भली भांती ज्ञान है। आज वह दीन हीन नहीं, सबंल, समर्थ तथा स्वाबलम्बी है। नर व नारी समान है। वर्तमान युग की नारी ने अपनी बुद्धि, योग्यता तथा आत्मविश्वास से भली भाँती सिद्ध कर दिया है कि आज वह अबला नहीं सबला है। परावलबी नहीं स्वाबलम्बी है, वह पुरूश के उपयोग की वस्तु नहीं, उसकी सहयोगिनी है। घर की चारदीवारी में बंद रहकर यातना सहने वाली मूकदर्शिका नहीं, सामाजिक जीवन की आधारशीला है। आज जीवन के हर क्षेत्र में– शिक्षा, चिकित्सा, सेना, पुलिस, उद्योग–धन्धे, प्रशासन, राजनीति, विज्ञान, समाज सेवा, व्यापार आदि सभी विभागों व क्षेत्रों में उसने अपनी प्रतिभा से यह सिद्ध कर दिया है कि नर व नारी समान है। नारी के इन्हीं गुणों का मूल्याकन करने के लिए सन् 1975 का वर्श 'अर्न्तराश्ट्रीय महिला वर्श' के रूप में मनाया गया था। ठीक ही कहा हैः–

''कोमल है कमजोर नहीं

शक्ति का नाम ही नारी है।''

नारी का सम्पूर्ण समाज में अविस्मरणीय योगदान तो कभी भी शब्दों में आंका नही जा सकता है क्योंकि नारी ही समाज की धुरी है। नारी उत्थान के बारे में नारे तो बहुत लगाए जाते है, लेकिन नारी का स्थान कितना ऊँचा उठा है यह समाचार पत्रों से मालूम होता है। आज की कन्या को पराया धन की संज्ञा दी जाती है। दहेज की बली न जाने कितनी औरते चढ़ जाती है, संख्या भी नहीं की जा सकती है। आग की बली तो एक बहू चढ़ती है, बेटी नहीं, लेकिन एक बेटी व बहू औरत ही है, लेकिन यह प्रश्न चिह्न सदा लगा रहता है, कन्धे से कन्धा मिलाकर चलने वाली नारी को हीन दृष्टि से देखा जाता है। आदमी के बराबर धन कमाने वाली औरत अपनी इज्जत के मामले में हर दम भयभीत रहती है। हिंसा का तांडव उसे कभी भी अपने जाल में लपेट लेगा। लोगों की मानसिकता में कोई विशेष परिवर्तन नहीं दिखाई देताा। बड़े नगरों से निलकर अगर बाहर के गाँव में झांका जाए तो मालूम होगा यहां नारी की स्वतंत्रता नाममात्र ही है। आज भर गाँव के लोग अपनी बेटी को शिक्षित करने से कतराते हैं क्योंकि उन्हें यह लगता है कि पढ़ी लिखी लड़की के लिए वर पाने की मुश्किलें आएगी।

क्या कभी किसी ने गौर किया है कि औरतों को मिलने वाले सारे आर्शीवाद मर्दों के लिए ही होते है। औरत को कभी भी लम्बी उमर का आर्शीवाद नहीं दिया जाता बल्कि सुहागन होने का दिया जाता है। घरेलू औरत सुबह चार बजे से लेकर रात के ग्यारह बजे तक काम में जुटी रहती है। अगर उससे पूछा जाए कि वह क्या करती है तो जवाब मिलेगा–कुछ नहीं। वह अपने द्वारा की गई मेहनत से अनजान है। संस्कृत के श्लोक में कहा गया है कि पढ़ती हुई नारी व गाता हुआ मर्द कभी भी अच्छा नहीं लगता। यह पंक्ति हमारे सामाजिक ढ़ांचे की पोल खोलती है।

हम भारतीय अक्सर पश्चिम को कोसते है कि वहां शादियाँ नहीं टिकती। हम भारतीय समाज की प्रशंसा इसलिए करते नहीं थकते कि यहां नारी अगर नरक की आग में जल रही हो तो भी तलाक नहीं लेती। भारतीय नारी विवाह को एक अध्यात्मिक रिश्ता मानती है। जिससे तोड़ लेने से पाप लगता है। नारी जीवन की इस दासता भरी जिन्दगी के पीछे कौन जिमेवार है। नारी तू नारायणी वाक्य क्या हमारे खोखले समाज को निदंनीय नहीं कर रहे? आधुनिक समाज तो क्या मार्यादा पुरूषोतम श्री राम जी ने भी सीता जी (पवित्र देवी) को अग्नि परीक्षा के लिए मज़बूर नहीं किया था? औरत की सम्पूर्ण दुःख भरी दासता के पीछे हमारा समाज ही जिम्मेवार है। क्या समाज की शक्ति औरत दुःखी रहेगी तो समाज पनपे गा? निःसंदेह एक प्रश्न चिह्न लग कर रह जाएगा। जरूरत है नैतिकता की संयम की, ताकि नारी को समान दृष्टि से देखा जाए।

ISBN: 978-81-958181-9-8

समाज के उत्थान के लिए नारी जाति का कोमल होने के साथ–साथ शक्तिवान होना भी जरूरी हैं क्योकि नारी शक्ति ही सम्पूर्ण समाज की धुरी है। नारी में ताकत की कमी नहीं है। वह मर्द से ज़्यादा संवेदनशील है। यदि हर पुरूष में नारी की संवेदनशीलता आ जाए, तो दुनिया बहुत बेहतर हो जाएगी।

बंधन टूटना अच्छी बात है परन्तु इन्हें तोड़ते हुए यह ध्यान अवश्य रखना होगा कि कहीं समाज न टूट जाए। इस नए मुक्त माहौल को बड़ी सावधानी से तैयार करना होगा। ताकि नारी 'सम्पूर्ण नारी' बन सके तथा समाज के लिए प्रेरक चिह्न साबित हो। कहा जाता है :–

''हर दर्द की पहचान होती है, खुशी चंद लम्हों की मेहमान होती है, वही बदलते है रुख हवाओं का, जिनके इरादों में जान होती है।''

Improving Skillset

ISBN: 978-81-958181-9-8

समाज निर्माण में महिलाओं की भूमिका

सुनीता तलवाड़,
प्रवक्ता डी०एल०एड० विभाग,
मो. 9467956551
मनोहर मैमोरियल शिक्षण महाविद्यालय
फतेहाबाद (हरियाणा)

पुरातन काल से ही महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। महिलाएं हमारे समाज का आदर्श और गर्व हैं। वे संपूर्ण मानवता की शक्ति और संघर्ष की प्रतीक हैं। महिलाएं स्वतंत्रता, सामरिकता और समानता के लिए संघर्ष करती रही हैं। उनके साहस, बुद्धिमत्ता और संघर्षशीलता से उन्होंने सभी को आश्चर्यचकित कर दिया है। महिलाओं ने हमेशा से अपनी प्रगति के लिए लड़ाई लड़ी है और सफलता हासिल की है। चाहे वह शिक्षा, सामाजिक सुधार, राजनीति घर हो या कोई भी क्षेत्र हो। उनकी सक्रिय भूमिका सामाजिक परिवर्तन और विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। महिलाओं के अपने बलिदान और नेतृत्व के कारण ही आज वे सफलता के शिखर पर खड़ी हैं। महिलाओं का सम्मान, समर्पण और सशक्तिकरण हमारे समाज को विकास और प्रगति का मार्गदर्शन तो करता ही है साथ ही साथ सहनशीलता का भी परिचय देता है। इसलिये हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि महिलाओं को समानता, स्वतंत्रता के अवसर हम उन्हें दें ताकि हम एक समृद्ध, न्यायपूर्ण और समान समाज का निर्माण कर सकें। जिससे हमारे घर, समाज देश और भी सुदृढ़ हो सके । जब समाज के स्त्री व पुरुष दोनों पहिये मजबूत होंगे उन्हें स्वतंत्रता होगी तो एक स्वस्थ समाज बनने में कोई देरी नही लगेगी क्यूंकि महिलाएं सबसे बड़ा हिस्सा है अपने परिवार को स्वस्थ व मजबूत करने का अगर वह मजबूत है तो परिवार के बच्चे, पुरुष सभी मजबूत होंगे।

महिलाएं हमारे समाज की आधारभूत स्तंभ होती हैं और उनका महत्व व्यापक और अविच्छिन्न है। महिलाएं समाज के सभी क्षेत्रों में अपनी अद्भुत प्रतिभा, सामरिकता और साहस दिखाती हैं। उनका योगदान उन्नति, समृद्धि और समानता को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण है।

महिलाएं परिवार का आधार होती हैं, वे माता, पत्नी और बहन के रूप में परिवार को प्रेम और समर्पण से संभालती हैं। माता की ममता और देखभाल बच्चों के विकास के लिए महत्वपूर्ण है। पत्नी के रूप में वे परिवारिक संघ में सद्भाव, समानता और सहयोग का संदेश देती हैं। बहन के रूप में वे संगठन क्षमता, समझदारी और सप्रेम सिद्ध करती हैं। महिलाओं के बिना परिवार अस्तव्यस्त हो जाता है और एक स्थिर, समृद्ध और स्थायी संगठन नहीं बन सकता।

समाज में महिलाएं महत्वपूर्ण नेतृत्व भूमिका निभाती हैं। वे शिक्षा, स्वास्थ्य, विज्ञान, कला, साहित्य और अन्य क्षेत्रों में अपनी पहचान बनाती हैं। उनकी सामरिकता, संघर्षशीलता और उत्साह समाज को प्रेरित करते हैं। महिलाएं अपने दृढ़ संकल्प, अद्वितीय योग्यता और सामर्थ्य के साथ कुछ भी करने में सक्षम हैं। उनकी बुद्धिमता, निर्णय क्षमता और संघटनशीलता समाज में प्रगति और उच्चतम स्तर की सोच को प्रदान करती हैं।

महिलाएं न केवल अपनी पारंपरिक भूमिकाओं में महत्वपूर्ण हैं, बल्कि वे आधुनिकता और तकनीकी विकास के क्षेत्र में भी नऐ मिशनों को संभाल रही हैं। वे उद्यमिता के क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं, स्वयं को आत्मनिर्भर

ISBN: 978-81-958181-9-8

उद्यमी बना रही हैं और नए रोजगार के स्रोत स्थापित कर रही हैं। महिलाएं नए नव विचारों, तकनीकों और व्यापारिक मॉडलों के माध्यम से स्वतंत्रता और आर्थिक स्वायत्तता को उन्नत कर रही हैं, जिससे घर व राष्ट्र को भी सहायता मिल रही है।

इसके अलावा महिलाएं आदर्शों की स्थापना करती हैं। वे दृढ़ संकल्प, उत्साह, सहनशीलता और समर्पण की प्रतीक होती हैं। उनकी सफलताएं, प्रेरणा, और सहानुभूति समाज को उन्नति और सकारात्मकता की ओर प्रेरित करती हैं।

जब समाज के हर क्षेत्र में महिलाओं का महत्व निर्विवाद है और उनसे सहयोग, समृद्धि मिल रही है तो हमें महिलाओं के सामरिकता, समर्पण और प्रतिभा का सम्मान करना चाहिए। उन्हें सशक्त बनाने, स्वतंत्रता के अधिकारों का समर्थन करने, और उनकी समानता को सुनिश्चित करने की जरूरत है। महिलाओं को शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वतंत्रता, और न्याय के अधिकार प्राप्त करने का अवसर देना चाहिए ताकि हम एक समृद्ध, सम्मत, और समानतापूर्ण समाज का निर्माण कर सकें।

- **सम्मान (Respect):** महिलाएं समाज के आधारभूत स्तंभ होती हैं और उन्हें सम्मान की प्राथमिकता मिलनी चाहिए।
- **सशक्तिकरण (Empowerment):** महिलाएं सशक्त और स्वतंत्र होनी चाहिए, ताकि वे अपने सपनों को पूरा कर सकें और समाज में सक्रिय भूमिका निभा सकें।
- **जीवनशैली (Lifestyle):** महिलाओं की जीवनशैली महत्वपूर्ण होती है। उनकी स्वस्थ, शिक्षित और सक्रिय जीवन शैली परिवार और समाज के लिए महत्वपूर्ण है।
- **योगदान (Contribution):** महिलाएं समाज, अर्थव्यवस्था और संस्थानों में अपना महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। उनके नेतृत्व, कार्यक्षमता और समर्पण के कारण समाज में प्रगति होती है।
- **समानता (Equality):** महिलाओं को समाज में पूर्ण समानता के साथ जीने का अधिकार होना चाहिए। वे आर्थिक, सामाजिक और न्यायिक रूप से समान अवसर प्राप्त करने के लिए अधिकृत होनी चाहिए।
- **परामर्श (Guidance):** महिलाएं न सिर्फ अपने परिवार को बल्कि समाज को भी मार्गदर्शन करने की क्षमता रखती हैं। उनकी संवेदनशीलता, बुद्धिमत्ता और अनुभव समाज की अनमोल संपत्ति होती है।
- **प्रेरणा (Inspiration):** महिलाएं अपनी सफलताओं, और अपने बच्चे के लिए साहसिकता और सामरिक प्रभाव के कारण अन्य महिलाओं के लिए प्रेरणा के स्रोत होती हैं।
- **मातृत्व की भूमिका:** महिलाएं मातृत्व की भूमिका को धारण करती हैं और एक नई पीढ़ी को जन्म देने की शक्ति रखती हैं। उनका स्नेह, देखभाल और प्यार हमारे जीवन को पूर्णता प्रदान करता हैं।
- **परिवार के आधार स्तंभ:** महिलाएं परिवार के आधार स्तंभ होती हैं। वे परिवार के लिए संगठनशीलता, समानता और समर्पण के साथ काम करती हैं। उनकी सेवा, त्याग और प्रेम परिवार को एकजुट और मजबूत रखते हैं।
- **शिक्षा और संघर्ष का प्रतीक:** महिलाएं शिक्षित होने का अधिकार रखती हैं। उनका संघर्ष और मेहनत दूसरों को प्रेरित करता है। अपने बच्चे के लिए सबसे अधिक रोल मॉडल बनती है और समाज में सामरिक और आर्थिक रूप से प्रगति को बढ़ावा देती है, क्योंकि शिक्षित महिला ही अच्छे तरीके से सहयोग कर पायेगी।

ISBN: 978-81-958181-9-8

- **सामाजिक और आर्थिक विकास का अवसरः** महिलाओं को सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए समान अवसर प्राप्त होने चाहिए। उन्हें शिक्षा, रोजगार, उद्योग, न्यायिक सुरक्षा और अधिकारों की सुरक्षा का अधिकार होना चाहिए ताकि वह अपनी बात किसी से भी बिना किसी झिझक से साँझा कर सकें।
- **सामाजिक परिवर्तन के जीवनदायीः** महिलाओं का सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन में एक महत्वपूर्ण योगदान होता है। उनकी आवाज, समर्पण और नेतृत्व सामाजिक परिवर्तन को दिशा देता हैं और समाज को सुधारने में मदद करता है।

परिवार में महिलाएं माता, पत्नी और बहन के रूप में सम्पूर्ण प्रेम और समर्पण के साथ अपना रोल निभाती हैं। वे घर को गहनता, उन्नति और प्यार का केंद्र बनाती हैं।

समाज में महिलाएं शिक्षा, स्वास्थ्य, विज्ञान, कला, साहित्य और अन्य क्षेत्रों में अपनी पहचान बनाती हैं। उनका सामरिक, राजनीतिक और सामाजिक समर्थन समाज को प्रेरित करता है और समानता की ओर बढ़ाता है। महिलाएं संघर्षशीलता और उत्साह की प्रतीक होती हैं।

महिलाएं अपने नेतृत्व कौशल, संगठन क्षमता और निर्माणकारी योग्यता से बड़े पदों पर आगे बढ़ती हैं। वे व्यापार, प्रशासन, ज्ञान और कला के क्षेत्र में उदाहरणीय सफलता प्राप्त करती हैं।

महिलाएं देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। वे स्वदेशी उद्यमों, नव विचारों और नए रोजगार के स्रोतों की रचना करती हैं, जिससे आर्थिक स्वायत्तता मजबूत होती है।

इंदीवर (श्यामलाल बाबू राय) की चंद लाइनों के साथ मैं अपने विचारों को विराम देना चाहूंगी।

"कोमल है कमजोर नहीं तू
शक्ति का नाम ही नारी हैं
जग को जीवन देने वाली
मौत भी तुझसे हारी हैं
कोमल है कमजोर नहीं तू
किसी बात में कम तो नहीं
अधिकारों की अधिकारी हैं
नारी को कोई कह न पाये
अबला हैं बेचारी हैं
तुझे इतिहास बदलना हैं
जग को जीवन देने वाली
मौत भी तुझसे हारी हैं।"

Improving Skillset

ISBN: 978-81-958181-9-8

महिलाओं के बढ़ते कदम

सुरेन्द्र सोनी
'काकड़ौद', शिक्षक, सामाजिक अध्ययन,
राजकीय आदर्श उच्च विद्यालय, शिक्षा विभाग, चंडीगढ़

दुनिया की आधी आबादी नारी शक्ति की है। भारतीय दर्शन, वैदिक परंपरा के अधीन अर्धनारीश्वर के विचार का वाहक रहा है। कहा भी गया है कि ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः''। उपलब्ध पुरातन कालिक साहित्य, विभिन्न दृष्टांतों एवं ऐतिहासिक कथाओं के जरिए हम नारी की शक्ति एवं सामंजस्यता का अनुमान लगा सकते हैं। आधुनिक एवं निवर्तमान परिपेक्ष्य में विश्व और दुनिया इस दिशा में अग्रसर है कि नारी सतत् रूप से अपने गौरव और सम्मान के साथ राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं अन्य पटल पर भी बढ़–चढ़कर नेतृत्व करें और यह मात्र चंद उदाहरणों तक सीमित ना रह कर वास्तविकता की कसौटी पर खरा उतरे।

महिलाओं को समाज ने ना जाने कब धीरे–धीरे परावलंबी बनाकर खुद को उनके संरक्षक की भूमिका में ला दिया और इस बहाने से ही उनका शोषण भी होता रहा। फलस्वरूप, उन्हें समाज की अहम भूमिकाओं से वंचित किया जाता रहा। उनसे उनके सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक अधिकार भी धीरे–धीरे छिनते गए और न जाने वे कैसे घर की चारदीवारी में कैद होती गई।

इसके संबंध में बहुत–से सवाल मानसिक पटल पर उठना और प्रश्नवाचक बन चित्त–सागर में तैरते रहना अवश्यंभावी है:

क्या महिलाएँ खुद हेतु बनाए जाने वाले नियमों एवं कानूनों को बनाने वाली संस्थाओं का नेतृत्व कर रही थी?

क्या महिलाओं को पुरुषवादी सोच द्वारा अर्थिक अधिकारों से जानबूझकर किये गए प्रयासों द्वारा सदियों तक वंचित नहीं रखा गया होगा?

क्या उन्हें राज्यों, रियासतों एवं साम्राज्यों के राजत्व से दबाकर, डराकर व सताकर दूर नहीं रखा गया होगा?

क्या आज भी महिलाएँ स्वतंत्र निर्णय लेने में सक्षम हैं? यदि हैं, तो किस हद तक और किस स्तर तक?

यदि तराजू के दोनों बराबर पलड़ों में से एक (पुरुष) को पूर्वर्ती रूप से 'ईश्वरीय' मान लिया जाए तो क्या हम उस तराजू से विधिवत न्याय की अपेक्षा कर सकते हैं?

इन सवालों के उत्तर पाने के लिए हमें इतिहास के बहुत से पहलुओं एवं साक्ष्यों में उतरना होगा–

यदि महिलाएँ अपने 80–90 वर्ष के जीवन काल में पुत्री, वधू एवं दादी–नानी आदि भूमिकाओं में रहकर भी केवल परिवार की युगान्तरकारी और सदियों पुरातन परम्पराओं की अनुपालना करते–करते सिर पर केवल मैला ढोती रही होय अपने समकालीन तनिक तथाकथित उच्च जाति के 'मैले–व्यंग' सुनती रही होय कमाई

ISBN: 978-81-958181-9-8

के रूप में एक घर से दैनिक रूप में मात्र दो रोटियाँ और पालतू पशुओं हेतु लस्सी की अनुकंपा पाती रही होय मुँह अँधेरे उनके झाड़ू की बुहार से साफ किये गए आँगन में शुभ कार्य होते रहे हो, पर उन्हें बदले में कुछ तीवल और गालियों से लिपटी मिठाई मिली हो और जिसे पाकर परिवार की दावत हो पाती रही होय उनके 'परमेश्वर' को कोई समानांतर खाट नसीब न होती रही हो और इज्जत पर धावे अलग से बोले जाते रहे हो! उन महिलाओं व उनके परिवार में शामिल महिलाओं के कदम यदि आगे बढ़े होंगे तो कितनी पीड़ाओं, दुखों, तकलीफों के उपरांत ऐसा हुआ होगा या अभी तक सहस्त्र वर्षों से 'शबरी–सी' शिला बने उनके कदम स्वतंत्र भारत की जमीन पर पड़े होंगे भी या नहीं!

यदि एक समूह या समुदाय का प्रारब्ध ही यह सुनिश्चित कर दिया जाए कि उक्त जाति की महिलाओं द्वारा बस किसी के देहांत पर शोक गीत–गायन हेतु या किसी शुभ घड़ी पर भौंडे नृत्य कर आजीविका हेतु बुलाया जाता हो। सामाजिक रूप से तो ऐसी जाति या समुदाय में जन्म लेना ही उनके मार्जिनलाइजेशन या हाशिएकरण का कार्य करता है। यह तब तक चलता रहेगा जब तक किन्हीं उत्थानवादी कदमों द्वारा उन्हें हेतु समानतापूर्ण सोपानों का परिमाप लेकर उनका निर्माण नहीं किया जाता।

अक्सर महिलाओं को अपना पूरा जीवन पुरुषों की इच्छाओं पर न्यौछावर करना पड़ता रहा। यदि वह शराबी हो, तो भी! व्यभिचारी हो, तो भी! गाली गलौज करने वाला हो, तो भी! झगड़ालू हो, तो भी! एक पीढ़ी ऐसे चलता रहे समझ में आ सकता है मगर पीढ़ी दर पीढ़ी पुत्र, पिता बनकर इसी व्यथा–कथा का कथानक और परिपाटी लिखता रहे तो इसे केवल सड़ी हुई औपनिवेशिकता को निर्ममता से आगे बढ़ाना कहेंगे जिस हेतु राष्ट्रीय स्तर पर क्रांति अपेक्षित है और लक्ष्मीबाई, अहिल्याबाई, सावित्रीबाई, भगत, सुभाष, बिस्मिल, खुदीराम, आजाद, बाल–पाल–लाल बनकर इस हेतु निर्णायक लड़ाई लड़ने की आवश्यकता है।

महिलाओं के बढ़ते कदमों में सदियों से ही बेड़ियाँ बाँधी जाती रही है और समय–समय पर उन्होंने या अन्य संवेदनशील व्यक्तित्व ने उनकी दास्ता–मुक्ति हेतु अहम भूमिका निभाई है। महिलाओं को बचपन से ही विश्व भर में इस जलालत के साथ सदियों से जीना पड़ रहा है कि पुरुषवादी हिंसात्मकता हमेशा उनकी अस्मिता पर धावा बोलकर उनकी इज्जत लूट, सब कुछ लुट जाने का स्वाँग भर उन्हें इसका दंश देकर बार–बार जलील करते रहे और उन्हें केवल उपभोग की वस्तुओं की भाँति प्रयोग कर उनके साथ बदसलूकी करते रहे। एक साथ कई–कई महिलाओं को अपने द्वारा थोपे गए तथाकथित कानूनों की आड़ में शोषण करते रहे और पाक साफ भी बने रहे। महिलाओं ने निरंतर गुलामी का जीवन जिया है। उनको देह व्यापार, बाल विवाह, पर्दा पर्था, बहु विवाह, सती पर्था, लैंगिक अपराध आदि अप्राकृतिक प्रथाओं का सामना और पालन करना पड़ा जिसकी पीड़ा हम साहित्य की विभिन्न विधाओं में अभिव्यक्त होते हुए पाते हैं। प्रिंट और इलेक्ट्रानिक मीडिया ने नारी के सम्मान के विषयों और समीचीन मुद्दों को सिद्दत से चर्चा हेतु पेश किया है और न्याय सुनिश्चित करवाने हेतु विभिन्न सामाजिक दबाव समूहों को आमंत्रित किया है।

महिलाओं के बढ़ते कदमों को हमेशा से ही पूर्वाग्रहों, दुराग्रहों एवं अपेक्षाओं के काँटों भरे सोपान मिले हैं और जो महिलाएँ अपने लहूलुहान कदमों को पीड़ा से भरे जख्मों सहित घिसट–घिसटकर संघर्षरत रही और किसी भी कुर्बानी हेतु हमेशा तैयार रहीं, उन्होंने अपने और आने वाली पीढ़ियों हेतु रक्तिम मगर सुनहरी तहरीर लिखी और शासकों और अत्याचारियों के साथ–साथ मात्र मूकदर्शक बने रहे लोगों को सबक सिखाते हुए नई राह बनाई ताकि उस राह पर उनकी बेटियाँ, वधुएँ एवं बुजुर्ग महिलाएँ सम्मान और गर्व से अपने कदम बढ़ा सकें। इसकी परिणीति भर है कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में कोई भी क्षेत्र महिलाओं के नेतृत्व से अछूता नहीं है। यह सब आंदोलन और क्रांतियों की तरह बदला है।

ISBN: 978-81-958181-9-8

विश्व के विभिन्न राष्ट्रों में युवा महिलाओं ने राष्ट्र प्रमुखों के पदों की शोभा बढ़ाई है। साइकिल से लेकर जहाज उड़ाने, अंतरिक्ष में अपनी उपस्थिति दर्ज करवाने, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक स्तरों पर छा जाने और खुद को भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक रूप से दृढ़ बनाने में महिलाओं ने कमर कस कर मेहनत की है।

लोकतांत्रिक भारत में शक्तियों के संघीय बंटवारे में केंद्रीय, राज्य एवं स्थानीय स्तर पर महिलाओं हेतु समानता, स्वतंत्रता एवं शोषण के विरुद्ध अधिकार आदि के लागू करने के सुखद परिणाम रहे हैं मगर अब तक इसका शत–प्रतिशत क्रियान्वयन शेष है। न्यायपालिका में देश की आजादी के 75 वर्ष बाद भी प्रथम महिला प्रमुख न्यायाधीश के पद पर आसीन होने का इंतजार है।

देश में प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, विदेश मंत्री, वित्त मंत्री आदि प्रमुख पदों पर प्रथम महिला आसीन हो चुकी हैं मगर सेना प्रमुख के पद पर अभी भी इनके पहुँचने का इंतजार है। नियुक्तियों में महिलाएँ समान अवसर का लाभ उठा पुरुषों के मुकाबले उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रही है। प्रशासनिक सेवाओं से लेकर पायलट तक के पदों की गरिमा महिलाएँ बढ़ा रही है। कार्यपालिका और न्यायपालिका में नए कीर्तिमान स्थापित किए जा रहे हैं जबकि विधानपालिका में अभी तक 50% जनसंख्या को 33% आरक्षण का इंतजार है और इस हेतु उन्हें पुरुष प्रधान व्यवस्था की ओर देखना पड़ रहा है जबकि इसके विपरीत सशक्त महिलाओं को धरातल पर कार्य कर अपना प्रतिनिधित्व बढ़ाने की आवश्यकता है। इस दिशा में उन्हें विभिन्न राजनीतिक दलों में सक्रियता से कर्मशीलता का प्रदर्शन करना होगा ताकि उन्हें अपने अधिकारों हेतु किसी का मुँह न ताकना पड़े। यह सब बेटियों हेतु शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा और सहयोग के उज्जवल मार्ग तैयार करके किया जा सकता है। सरकारें महिलाओं के सम्मान हेतु कार्य कर रही है, चाहे उनकी गति धीमी है, मगर कदम सुदृढ़ हैं। इस दिशा में किए गए कार्य देश भर में शौचालयों का निर्माण, महिलाओं हेतु विभिन्न संस्थाओं की स्थापना, महिलाओं में विशिष्ट कौशलों का विकास, नारी उद्यमिता के अवसर, यूनिकॉर्न को बढ़ावा देना आदि हैं। आत्म सुरक्षा हेतु रक्षा प्रशिक्षण, विमेन हाइजीन विषय पर प्रशिक्षण देना आदि महिलाओं के सशक्तिकरण हेतु उठाए और बढ़ाए जाने वाले कदम हैं।

अन्ततोगत्वा, जब तक किसी भी स्तर पर महिलाओं का शोषण एवं दमन होता रहेगा तब तक उनके कदम आगे बढ़ने को प्रतीक्षारत ही रहेंगे। हालांकि, अब समाज से अधिकतर उदाहरण ऐसे आते हैं कि जैसे मंजर बदल रहा हो। मगर जिन्होंने सदियों की विभीषिका झेली है और उसके उपरांत भी जिजीविषा से भरे हैं उनके हेतु सामाजिक सुरक्षा के उपायों के बारे में सम्मानजनक रूप से सोचा जाने की आवश्यकता है। सरकार के प्रतिनिधियों को सरकार द्वारा बनाए गए कानूनों, सामाजिक समरूपता एवं विभिन्न कानूनों में किए गए बदलावों के प्रचार एवं प्रसार हेतु संवेदनापूर्वक कार्य करने की आवश्यकता है। खासतौर से ग्रामीण भारत में महिलाओं की स्थिति मुगलकालीनता और औपनिवेशिकता के दायरों और दकियानूसी पुरुष–सुलभ विचारधाराओं से बाहर नहीं निकल पा रही है। शिक्षा की समकालीन अलख जगा कर और तदुपरांत अवसरों की समानता को लैंगिक भेदभाव के बिना लागू कर यह संभव हो सकता है।

जागरूक युवाओं एवं अन्य स्वच्छचित्त, मुक्त–दर्शन और मानवतावादी सामाजिक संगठनों द्वारा फिर से ईश्वर चंद्र विद्यासागर, दयानंद, विवेकानंद, राजा राममोहन राय, फुले, ओमप्रकाश वाल्मीकि आदि बन कर महिलाओं के चिरकालिक और आधिकारिक गौरव को लौटाने में सहायता करनी होगी ताकि उनका हर कदम अपने समकक्ष से मुक्त रूप से कदमताल करते हुए आगे बढ़ पाए। इसके हेतु जमीनी स्तर पर कार्य करने होंगे क्योंकि कदम जमीन पर ही टिकते हैं और पंख आसमान में उड़ने में सहायक होते है।

ISBN: 978-81-958181-9-8

वर्तमान परिवेश में महिलाओं की सशक्त उपस्थिति

डॉ. भरत लाल, असिस्टेंट प्रोफेसर (हिंदी)
चौधरी मनीराम गोदारा राजकीय महिला महाविद्यालय,
भोडिया खेड़ा (फतेहाबाद)
मोबाइल 9416715280

भारतीय समाज में जीवन–मूल्यों एवं आदर्शों का विशिष्ट महत्व है। 'वसुधैव कुटुंबकम' का सिद्धांत भारतीय संस्कृति का मूल मंत्र रहा है। पुरुष प्रधान समाज होने के कारण महिलाओं के योगदान को विस्मृत कर दिया गया। ग्रामीण परिवेश में व्याप्त रूढ़िवादिता के चलते महिलाओं को उपेक्षित किया गया । जीवन की वास्तविकता को समझने के लिए मानवीय दृष्टिकोण अपनाना वर्तमान युग की माँग है। जहाँ तक महिलाओं की सामाजिक भागीदारी का प्रश्न है तो इस दिशा में आमूलचूल परिवर्तन हुए हैं। वर्तमान परिवेश में महिलाओं ने सामाजिक बंधनों को दरकिनार करते हुए नए आयाम स्थापित किए हैं ।

पारिवारिक संरचना को सुव्यवस्थित बनाए रखने में महिलाओं की महत्वपूर्ण भागीदारी रही है। शिक्षा के क्षेत्र में तो महिलाओं का योगदान अविस्मरणीय है । भारत की प्रथम महिला शिक्षिका सावित्रीबाई फुले की महती भूमिका की चर्चा करना अनिवार्य है । शिक्षा की अलख जगाने में इनका विशिष्ट योगदान इनका रहा है । विषम परिस्थितियों में रहते हुए भी शिक्षा ग्रहण की तथा उपेक्षित, पीड़ित महिलाओं के लिए आशा की किरण बनकर उभरी । इस कार्य में उनके पति महामना ज्योतिबा फुले का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है । सावित्रीबाई फुले को वर्तमान परिवेश में महिलाओं के लिए प्रेरणा–स्रोत कहा जाए तो इसमें अतिशयोक्ति न होगी । 'महिला को केवल घर संभालना होता है' इस मिथक को तोड़ने का कार्य आज की नारी सफलतापूर्वक कर रही है।

किसी भी प्रकार के परीक्षा–परिणामों पर दृष्टिपात करें तो यह तथ्य सामने आता है कि 'छात्राओं ने बाजी मारी' अथवा सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया आदि । यह इस बात का परिचायक है कि शिक्षा ही सामाजिक बेड़ियों को तोड़ सकती है ।

अक्सर देखा गया है कि महिलाओं के साथ दोयम दर्जे का बर्ताव किया जाता है। उन्हें अपने कार्यालयों में बड़ी जिम्मेदारी देने से मना कर दिया जाता है, पर सबके साथ ऐसा नहीं है। समाज में महिलाओं के कई ऐसे उदाहरण भी हैं, जो छोटी उम्र की लड़कियों के लिए प्रेरणा है। इनमें ऐसी भी लड़कियाँ है जिनका खुद का परिवार ही उनका साथ देने को तैयार नहीं था लेकिन उन्होंने अपने बलबूते पर समाज की विचारधारा को बदल कर रख दिया।

उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु देश–विदेश में महिलाएँ अवसर तलाशने में जुटी हैं । संविधान निर्माता डॉ. बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर सदैव महिलाओं के हकों को लड़ाई लड़ते रहे । उनके संघर्ष का ही सकारात्मक परिणाम आज देखने को मिल रहा है । भारतीय संविधान में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए अनके प्रावधान किए गए हैं । अम्बेडकर जी द्वारा महिलाओं को समाज की मुख्य धारा में लाने का प्रयास सराहनीय रूप से देखा जाता है।

ISBN: 978-81-958181-9-8

मताधिकार दिलाना, लैंगिक भेदभाव को समाप्त करना व समानता के अधिकार को दिलाने में उनकी एक महत्वपूर्ण भूमिका रही ।

प्रतियोगिताओं के माध्यम से सरकारी सेवा में आकर अपनी सशक्त कराने में महिलाओं ने अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया। वरीयता सूची में सम्मानित स्थान प्राप्त करना यह सिद्ध करता है कि सामाजिक विकास में महिलाओं का अतुलनीय योगदान है।

बैंकिंग के क्षेत्र में भी महिलाओं ने महत्वपूर्ण भागीदारी सुनिश्चित की है है। एक समय था जब वित्त और बैंकिंग के क्षेत्र में पुरुषों का आधिपत्य था ।इस अवधारणा को महिलाओं ने बदल कर रख दिया है । अंशुल कांत ऐसा उदाहरण है, जिन्हें वर्ष 2019 में विश्व बैंक समूह की मुख्य वितीय अधिकारी और प्रबंध निदेशक दायित्व सौंपा गया ।

विभिन्न खेलों के माध्यम से आज विश्व स्तर पर महिलाओं की महत्वपूर्ण भागीदारी रही है। खासतौर पर ओलंपिक खेलों में तो इनका योगदान काबिले तारीफ है । महिलाओं ने यह सिद्ध कर दिया है कि आने वाला समय इनका अपना है । भारत में आमतौर पर लड़कों को भी खेलों हेतु प्रोत्साहित किया जाता रहा है । सानिया मिर्जा, एमसी मैरीकॉम, पीटी उषा आदि सशक्त महिलाओं ने यह सिद्ध कर दिखाया है कि उन्हें सहानुभूति नहीं बल्कि सहयोग की आवश्यकता है। सामाजिक परिवर्तन के साथ ही बालिकाओं को खेलों की ओर अग्रसर किया जाए महत्वपूर्ण माना जाता है

विभिन्न जनसंचार माध्यमों में सम्पादक, एंकर के रूप में भी महिलाओं की श्रेष्ठ भूमिका रही है । विभिन्न चौनलों के साथ–साथ स्वतंत्र पत्रकार के रूप में भी महिलाएँ अपना भविष्य संवार रही हैं । राजनीति के पक्ष पर दृष्टिपात करें तो इनके जज्बे को सलाम है । राजनीति का क्षेत्र इतिहास से वर्तमान तक पुरुषों के एकाधिकार का क्षेत्र रहा है। बदलते परिवेश में द्रौपदी मुर्मू जी का देश के राष्ट्रपति पद पर विराजमान होना हम सब के लिए गर्व एवं गौरव का विषय है ।

कृषि के क्षेत्र में भी महिलाओं की भागीदारी रही है । भारत कृषि प्रधान देश है। नवाचारों की अपनाते हुए आधुनिक तकनीक से जुड़कर महिलाओं ने होकर कृषि के क्षेत्र में भी नवीन आयाम स्थापित किए हैं । संगीत एवं कला के क्षेत्र में भी संगीत सम्राज्ञी लता मंगेशकर जी का नाम इतिहास के पन्नों पर स्वर्णिम अक्षरों में अंकित है ।

ग्रामीण परिवेश में शिक्षा–व्यवस्था का अभाव ही रहा है । आमजन अपनी जरूरतों को ही पूरा करने में लगा रहता है । धीरे–धीरे इस धारणा में बदलाव आ रहा है। लोग शिक्षा के महत्व को समझ रहे हैं। शिक्षा के प्रचार–प्रसार से अंधविश्वास एवं रूढ़िवादिता से बचा जा सकता है। ग्रामीण क्षेत्र में आमतौर पर देखने को मिल रहा है कि अब बालिकाओं को विद्यालय से लेकर विश्वविद्यालय तक की शिक्षा के अवसर प्रदान किए जा रहे हैं। यह महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए सुखद क्षण कहे जा सकते हैं।

विकसित एवं समृद्ध समाज की कल्पना तभी की जा सकती है जब महिलाओं को पुरुषों के बराबर समान अवसर प्रदान किए जाएंगे । समाज के विकास के लिए यह बेहद जरुरी है की बालिकाओं की शिक्षा में किसी प्रकार कि बाधा उत्पन्न न हो । किसी विद्वान ने सच झी कहा है कि अगर कोई आदमी शिक्षित होगा तो वह सिर्फ अपना विकास कर पाएगा अगर कोई महिला सही शिक्षा हासिल करती है तो वह अपने साथ साथ पूरे समाज को बदलने की ताकत रखती है।

ISBN: 978-81-958181-9-8

महिलाओं को भी इस दिशा में आगे बढ़कर कार्य करना चाहिए ताकि सामाजिक विकास को प्रगति मिल सके। महिलाओं को जरुरत है कि वे अपनी क्षमता को पहचानें और प्रयास करे । अपने परिवार के साथ साथ देश और समाज के विकास के प्रति भी अपनी भूमिका को निभा सके। शासन और प्रशासन सत्र पर भी ऐसी योजनाएं चलाई जानी चाहिए जिनमें महिलाओं की अधिकतम भागीदारी सुनिश्चित की जा सके। भारत सरकार द्वारा 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' जैसे कार्यक्रमों का संचालन इस दिशा में सराहनीय कदम कहा जा सकता है।

आज की नारी के जीवन की परिभाषा बदल चुकी है। अब तो एक पढ़ी लिखी, आत्मविश्वास से लबरेज एक सशक्त नारी है। वह आज अपने अधिकारों एवं कर्त्तव्यों से भली–भांति परिचित है । इस प्रकार कहा जा सकता है कि महिलाएँ आधुनिक परिवेश में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करा रही है। शिक्षा खेल संगीत कृषि कानून राजनीति आदि कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है जिनमें महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित में हुई हो। ग्रामीण परिवेश में भी अब रूढ़िवादी धारणा में व्यापक बदलाव आया है। शिक्षित महिला सफल ग्रहणी के साथ–साथ सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थाओं में भी अपने प्रतिभा के बल पर यह सिद्ध कर चुकी हैं की उन्हें समाज की गहरी समझ है तथा आने वाले समय में देश के सर्वांगीण विकास हेतु इनका योगदान अनिवार्य है।

Improving Skillset

ISBN: 978-81-958181-9-8

वर्तमान परिवेश में महिलाओं की सकारात्मक भूमिका

डॉ. रमेश कुमार, असिस्टेंट प्रोफेसर (हिंदी)
चौधरी मनीराम गोदारा राजकीय महिला महाविद्यालय,
भोडिया खेड़ा (फतेहाबाद)
मोबाइल 9416542925

सदियों से शोषित वंचित भारतीय नारी वर्तमान युग में अपनी योग्यता का लोहा मनवाते हुए जीवन के विविध आयामों में अपने महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है। वर्तमान भारतीय नारी यह सिद्ध करती है कि वह किसी भी महत्वपूर्ण कार्य को करने में पुरुष से कमतर नहीं है। नारी ने अपने विषय में बनी हुई अनेक भ्रांतियों को मिथक साबित किया है। आज की भारतीय नारी प्रत्येक क्षेत्र में अपने आप को साबित करने में सफल रही है।

आधुनिक काल में परिवर्तित हो रही सामाजिक व्यवस्थाओं में यह माना जा रहा है कि स्त्री और पुरुष वास्तव में समकक्ष है। महिलाओं ने सामाजिक सरोकारों को ध्यान में रखते हुए अर्थी को कंधा देने से लेकर अंतिम संस्कार तक के कार्य में भाग लिया है। सामान्यतः समाज में लड़के के जन्म के समय ही कुआं पूजन का आयोजन किया जाता है परंतु आज के दौर में लड़की के जन्म पर भी वह पूजन का आयोजन किया जा रहा है ।

नारी सशक्तीकरण में यह सामाजिक परिवर्तन महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। भारतीय संविधान के प्रस्तावना में वर्णित समानता स्वतंत्रता बंधुता एवं न्याय को अंगीकृत करते हुए समाज के बहुत बड़े तबके ने आगे बढ़कर नारी को पुरुष के समान दर्जा देने में किसी भी तरह की हिचकिचाहट नहीं दिखाई है। नारी सामाजिक आर्थिक राजनीतिक क्षेत्रों में अग्रणी भूमिका निभा रही है। आधुनिक भारतीय नारी संविधान द्वारा प्रदत्त संवैधानिक अधिकारों से सशक्त होकर जीवन की हर क्षेत्र में अपनी अग्रणी भूमिका निभा रही है।

सामान्य गृहिणी से लेकर सशस्त्र बलों में उच्च पदों पर भी नारी विराजमान है। गृहिणी, श्रमिक, नौकरी, स्वरोजगार आदि अनेक क्षेत्रों से होती हुई महिला मंत्री, प्रधानमंत्री एवं राष्ट्रपति के पदों को भी सुशोभित कर चुकी है व कर रही है। स्वाधीन भारत में महिला वर्ग में चेतना का संचार बड़ी तेजी से हुआ है।

स्वाधीनता से पूर्व भारत में महिलाएँ केवल घरों में रहती थीं। उन्हें घर से बाहर निकलने, पढ़ने–लिखने, खेलने, पुरुषों की तरह बाहर काम करने आदि अनेक क्षेत्रों में अनुमति नहीं थी। भारतीय संविधान में महिला एवं पुरुष दोनों के लिए समान अधिकार बनाए गए हैं, किन्तु निरक्षरता एवं घरेलू तथा भारतीय धार्मिक परंपराओं की वजह से महिलाएँ उन समस्त अधिकारों का सम्पूर्ण उपयोग नहीं कर पाई हैं। वर्तमान परिवेश में अपने स्तर पर हर क्षेत्र में सफलता हासिल की है। अगर हम शिक्षा के क्षेत्र में बात करें तो पुरुषों की अपेक्षा, महिलाओं में अशिक्षा का स्तर ज्यादा है, किन्तु अगर शिक्षित नारी की शिक्षित पुरुष से तुलना की जाए तो वह उनसे कहीं आगे है। हम अकसर समाचार–पत्रों में पढ़ते हैं – हाईस्कूल परीक्षा परिणाम में छात्राओं ने बाजी मारी, आईआईटी परीक्षा परिणाम में छात्रा सर्वप्रथम । अतः महिलाएँ अपने प्रयास और प्रयत्न में पीछे नहीं हैं, किन्तु आवश्यकता है उन्हें सही अवसर प्रदान करने की।

ISBN: 978-81-958181-9-8

इसी तरह विज्ञान, व्यापार, अंतरिक्ष, खेल, राजनीति हर क्षेत्र में भारतीय नारी ने नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं। जिस तरह सरदार वल्लभभाई पटेल को 'लौह पुरुष' कहा जाता है उसी तरह इंदिरा गाँधी ने प्रधानमंत्री के रूप में भारत का नाम संपूर्ण विश्व में गौरवान्वित किया है। सौन्दर्य के क्षेत्र में ऐश्वर्या राय, सुस्मिता सेन ने न केवल भारत बल्कि पूरे विश्व में सम्मान प्राप्त किया है। संगीत की दुनिया में लता मंगेशकर को साक्षात सरस्वती माँ का दर्जा दिया गया है। किरण बेदी, पीटी उषा, कल्पना चावला जैसी महिलाओं ने साबित किया है कि वे किसी से कम नहीं हैं। पिछले कुछ सालों में यह देखा गया है कि महिलाएँ खेलों में भी पुरुषों के बराबर एवं उनसे आगे निकल रही है।

आज तक केवल खेलों के नाम पर क्रिकेट को महत्व दिया जा रहा था और उसमें भी पुरुष प्रधानता थी । हमारे समाज में केवल लड़कों को अपने बचपन से खेल एवं बाहर की गतिविधियों में शामिल करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, वहीं पर लड़कियों को घर के काम एवं शिक्षा तक ही सीमित रखा जाता है, परंतु वर्तमान परिवेश में परिस्थितियाँ बदली हैं। आज लड़कियाँ लड़कों से खेल, शिक्षा, तकनीक आदि क्षेत्रों में उनके बराबर दिखाई दे रही है ।

सर्वप्रथम कई महिलाओं ने स्पोर्ट्स को बढ़ावा देने का काम किया जैसे एमसी मैरी कॉम, सानिया मिर्जा आदि ऐसी महिलाएँ हैं, जिन्होंने खेल जगत में अपना पहला कदम बढ़ाया तथा अन्य महिलाओं के लिए प्रेरणा–स्रोत बनी । इसी के फलस्वरूप आज महिलाएँ पुरुषों के समान प्रतिभा का लोहा मनवा रही हैं भारत सरकार ने भी महिलाओं की खेलों में भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए अनेक योजनाएँ चलाई है।

विदित हो कि 19वीं शताब्दी में विभिन्न समाज सुधारकों – राजा राममोहन राय, स्वामी विवेकानंद, दयानंद सरस्वती, सर सैयद अहमद खान आदि ने महिलाओं की दयनीय स्थिति को सुधारने का महत्वपूर्ण प्रयास किया। यह प्रयास न केवल हिंदू धर्म की महिलाओं, बल्कि मुस्लिम महिलाओं के उत्थान के लिए भी था। महिला शिक्षा, विधवा विवाह, पारिवारिक संपत्ति में अधिकार, पर्दा प्रथा, सती प्रथा का विरोध, ऐसे कई मुद्दे जिस पर समाज सुधारकों द्वारा आंदोलन किया गया और बाद में उन्हें सफलता भी मिली।

बहुत ही रोचक बात यह है कि विश्व के कई मुस्लिम बाहुल्य (लगभग 80–90 प्रतिशत) देश में सार्वजनिक स्थल पर हिजाब, बुर्के पर कुछ कारणों– जिनमें आधुनिकीकरण, धर्मनिरपेक्षता और कई देशों ने सुरक्षा की दृष्टि से प्रतिबंध लगा दिया गया। लेकिन अपने देश के बारे में बीते दिनों प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने संसद में कहा कि भारत लोकतंत्र की जननी है। ऐसे में एक ऐसा लोकतांत्रिक देश जो सर्व समावेशी समाज पर बल देता है, महिला सशक्तीकरण की बात ही नहीं, बल्कि यहां महिलाओं के नेतृत्व में विकास पर बल दिया जा रहा है।

Improving Skillset

आज हिजाब पहनने को लेकर आंदोलन किया जा रहा है, जो बेहद दुर्भाग्य की बात है। इस विवाद ने महिला सशक्तीकरण को हास्यास्पद बना दिया है। जो महिलाएं बिना हिजाब के कार्यस्थल पर जाती हैं, उनके चरित्र पर न केवल सवालिया निशान खड़ा करता है, बल्कि भेदभाव को भी बल प्रदान करता है। वर्षों से महिलाएं लैंगिक समानता, स्वतंत्रता और अधिकार के लिए सतत प्रयास और संघर्ष करती आई हैं।

परिणामस्वरूप आज विश्व के लगभग सभी देश विकास प्रक्रिया में आधी आबादी की महत्वपूर्ण भूमिका को समझते हुए उनकी सहभागिता को सुनिश्चित कर रही है। चाहे वह निर्णय निर्माण प्रक्रिया हो या सैन्य क्षेत्र, मेडिकल, कला, विज्ञान और खेल जगत, ऐसे कई अन्य क्षेत्रों में महिलाएँ बढ़ चढ़ कर हिस्सा

ISBN: 978-81-958181-9-8

ले रही हैं,परंतु इस तथ्य को नकारा नहीं जा सकता कि महिलाएँ स्वतंत्र होकर भी स्वतंत्र नहीं हैं और पुरुषों के समकक्ष होकर भी समान नहीं हैं। कहीं न कहीं हमारी सामाजिक संरचना और समाज में लोगों की मानसिकता अभी भी यही बनी हुई है कि महिलाएँ अपना निर्णय स्वयं और सही ढंग से नहीं ले सकती हैं।

परिवार से लेकर सार्वजनिक स्थलों तक उनसे संबंधित निर्णय जब तक वे स्वयं नहीं लेंगी, जब तक समाज में लोगों की मानसिकता में बदलाव नहीं आएगा, तब तक महिला सशक्तीकरण की बात करना निरर्थक होगा। सरकारें अपना कार्य कर रही हैं।

आज भारतीय नारी हर क्षेत्र में आगे बढ़ने के प्रयास में कार्यरत है, किन्तु हमारी मानवीय सोच ही उनकी प्रगति में बाधक है। जब कोई विवाहित महिला अपने करियर में आगे बढ़ना चाहती है, आत्मनिर्भर बनना चाहती है तो सर्वप्रथम उसके परिजन ही उसमें आपत्ति करते हैं । इसी तथ्य को हिंदी सिनेमा में भी कई बार दिखाया गया है। वर्तमान समय की सुपरहिट फिल्म 'चक दे इंडिया' इसी का एक उदाहरण है।

आज महिलाएँ अपने सीमित दायरे से निकल कर अपनी रचनात्मकता और योग्यता के बल पर विकास प्रक्रिया में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं, वहीं वर्तमान में देश के भीतर हिजाब पर हो रहा विवाद एक ज्वलंत मुद्दा बना हुआ है। कुछ राजनीतिक दलों के द्वारा इस मुद्दे का राजनीतिकरण किया जा रहा है। इंटरनेट मीडिया पर हिजाब पहनी हुई एक छात्रा का सड़क पर लगाया जा रहा एक चर्चित नारे का वीडियो सामने आने के बाद से उसे निडर और बहादुर कहा जा रहा है।

इसी क्रम में कुछ राजनीतिक दलों द्वारा बयानबाजी भी कर दी गई कि महिलाओं को यह अधिकार है वह कुछ भी पहन सकती है और यह उनका व्यक्तिगत मामला है। मुस्लिम समुदाय के कुछ नेता इस मामले में धार्मिक स्वतंत्रता और धर्मनिरपेक्षता का हवाला दे रहे हैं। इस ज्वलंत मुद्दे के पीछे तथाकथित लोगों के कुछ तत्कालीन कारण या यूं कहें कि अवसर निहित है जो कि देश के विभिन्न राज्यों में हो रहे चुनाव में समुदाय विशेष का समर्थन प्राप्त करने के उद्देश्य से उनको बरगलाया जा रहा है।

राजनीतिक लाभ के कारण कट्टरपंथियों द्वारा हिजाब का मुद्दा खड़ा किया गया है। आज हम एक ऐसे वैश्विक परिवेश में रह रहे हैं, जहां विश्व में लगभग सभी देश महिला स्वतंत्रता, समानता और अधिकार जैसी अवधारणाओं की केवल बात ही नहीं करते, बल्कि जमीनी स्तर पर इसे क्रियान्वित करने का प्रयास भी कर रहे हैं। महिला सशक्तीकरण और महिला शिक्षा जैसी बातों पर विमर्श में बदलाव वैश्विक स्तर पर तो परिलक्षित हो ही रहा है, बल्कि अब महिलाओं के नेतृत्व में विकास जैसी प्रगतिशील बातें भी हो रही हैं।

Improving Skillset

प्रश्न यह है कि क्या महिला सशक्तीकरण का संबंध केवल सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक अधिकारों तक ही सीमित है? बिल्कुल नहीं, बल्कि इसका संबंध देश की आधी आबादी के आत्मनिर्णय, समाज की दकियानूसी रुढ़िवादी प्रथाओं के प्रति जागरूक होना भी है। वास्तव में महिला सशक्तीकरण आधी आबादी की प्रगति, उनमें चेतना का संचार और जागरूकता से संबंधित है।

अंततः हम यही निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि स्वतंत्रता के इतने वर्षों में भारतीय नारी हर क्षेत्र में आगे बढ़ी है। महिलाओं ने कई उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं, किन्तु आगामी समय में प्रवेश करने के पहले हमें जरूरत है उन्हें आत्मनिर्भर बनाने की, जिसके लिए आवश्यकता है, विचार परिवर्तन की। सामाजिक संकीर्णताओं से

ISBN: 978-81-958181-9-8

मुक्ति पाने की। शिक्षा के साथ–साथ मीडिया के क्षेत्र में भी निरंतर महिलाएँ अपनी उपस्थिति दर्ज करवा रही हैं । भारतीय महिला अपना आसमान खुद तलाश लेगी, अगर वातावरण अनुकूल हो।

TAKSHILA FOUNDATION
Improving Skillset

ISBN: 978-81-958181-9-8

महिलाओं के बढ़ते कदम

रोहताश कुमार
सहायक प्रोफेसर हिंदी
महाराजा अग्रसेन कॉलेज ऑफ एजुकेशन, हिसार

इंडियन वूमेन अर्थात भारतीय महिला इस शब्द को सुनते ही हर नागरिक के मन में एक छवि उभरने लगती है। भारतीय महिला अर्थात एक अच्छी संस्कारी बेटी, बहन, माँ, पत्नी, इत्यादि। आज हमारे देश के जिस प्रकार से नारी के जीवन में बदलाव आया है और वो जिस तरह से अपने जीवन में संघर्षों से लड़कर निरंतर आगे बढ़ रही है। वो बहुत ही सराहनीय है। स्वतंत्रता के कई वर्षों पश्चात महिलाओं को बहन, बेटी, माँ, व पत्नी इन्हीं रूप में देखते हैं। इस बात में कोई संदेह नहीं है कि स्वतंत्रता के वर्षों बाद भारतीय महिला वर्ण में बड़ी तेजी से परिवर्तन हुआ है।

प्राचीन समय से महिलाएं सिर्फ घर की चारदीवारी में रहकर घर का कामकाज करती थी। उन्हें घर में बाहर निकलने, पढ़ने लिखने, खेलने, पुरुषों की तरह बाहर काम करने आदि क्षेत्रों में अनुमति नहीं थी। भारतीय संविधान में महिला एवं पुरुष दोनों के लिए समान अधिकार बनाए गए हैं किंतु निरक्षरता एवं घरेलू तथा भारतीय धार्मिक परंपराओं की वजह से महिलाएं उन समस्त अधिकारों का संपूर्ण उपयोग नहीं कर पाई है।

आज की नारी के जीवन की परिभाषा बदल चुकी है अब वे एक पढ़ी लिखी आत्मविश्वास से भरी हुई एक सशक्त नारी बनने मैं काफि सफलतम कदम आगे बढ़ा रही है आज भारतीय नारी ने अपने स्तर पर हर क्षेत्र में सफलता हासिल की है। अगर हम शिक्षा के विषय में बात करें तो पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं में अंतर ज्यादा है। किंतु अगर शिक्षित नारी की शिक्षित पुरुष से तुलना की जाए तो वह उनसे कहीं आगे है।

अब वह एक पढ़ी–लिखी आत्मविश्वास से भरी हुई एक सशक्त नारी है। वह आत्मनिर्भर है और अपनी मेहनत के बल पर अपने जीवन में आगे बढ़ चुकी है। अब वो समय आ गया है जब औरत अपने घर की चौखट तक ही सीमित थी वो घर के काम और चूल्हा चौका के अलावा और कुछ नहीं करती थी पढ़ी–लिखी ना होने के कारण वह अपने बच्चों को पढ़ाने में भी असमर्थ थी।

विदित हो कि 19वीं शताब्दी में विभिनता समाज सुधारकों राजा राममोहन, स्वामी विवेकानंद, दयानंद, सरस्वती अहमद खान, आदि ने महिलाओं की दयनीय स्थिति को सुधारने का महत्वपूर्ण प्रयास किया। यह प्रयास न केवल हिंदू धर्म की महिलाओं बल्कि मुस्लिम महिलाओं के उत्पाद के लिए भी था। महिला शिक्षा विधवा विवाह पारिवारिक संपत्ति में अधिकार, पर्दा प्रथा, सती प्रथा का विरोध, ऐसे कई मुद्दे जिस पर समाज सुधारको द्वारा आंदोलन किया गया और बाद में उन्हें सफलता भी मिली।

वर्षों से महिलाएं समानता स्वतंत्रता और अधिकार के लिए प्रयास और संघर्ष करती आई हैं। परिणाम स्वरूप आज विश्व के लगभग सभी देश विकास में आदि की महत्वपूर्ण भूमिका को समझते हुए उनकी को सुनिश्चित कर रही है। वह निर्णय निर्माण की प्रक्रिया है या सैन्य क्षेत्र, मेडिकल, कला, विज्ञान और खेल जगत ऐसे कई अन्य क्षेत्रों में महिलाएं बढ़ चढ़कर हिस्सा ले रही हैं।

ISBN: 978-81-958181-9-8

इसी तरह विज्ञान व्यापार, खेल, राजनीति, हर क्षेत्र में भारतीय नारी ने नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं। जिस तरह सरदार वल्लभ भाई पटेल को लौह पुरुष कहा जाता है। उसी तरह इंदिरा गांधी ने प्रधानमंत्री के पद में भारत का नाम संपूर्ण विश्व में गौरवचित किया है। सौंदर्य के क्षेत्र में ऐश्वर्या राय, सुष्मिता सेन ने ना केवल देश बल्कि पूरे विश्व में सम्मान प्राप्त किया। संगीत की दुनिया में लता मंगेशकर गोश्त साक्षात सरस्वती मां का दर्जा दिया गया है। किरण बेदी, पीटी ऊषा, कल्पना चावला आदि महिलाओं ने साबित किया है कि वह किसी से कम नहीं है।

आज भारतीय नारी हर क्षेत्र में आगे पढ़ने के प्रयास में कार्यरत हैं। किंतु हमारी मानवीय सोच ही उनकी प्रगति में बाधक है। जब कोई विवाहित एवं दिव्य महिला अपने करियर में आगे बढ़ना चाहती है, आत्मनिर्भर बनना चाहती है तो सर्वप्रथम उसके परिवार जन को ही उसमें आपत्ति होती है। इस बार गणतंत्र दिवस की में महिलाओं की सेना की टुकड़ी को सलामी देते हुए देखकर देश के लोग गर्वित हो उठे।

आज वही जिस तरह से अपने देश का नाम रोशन कर रही हैं वह किसी से छुपा नहीं है। बहुत ही गर्व की बात है पूर्णविराम बेटी हो या बेटा दोनों का नहीं किया जा सकता है। बेटे अगर माथे का तिलक है तो बेटियां सर का ताज होती हैं।

परंतु इस तथ्य को नकारा नहीं जा सकता कि महिलाएं स्वतंत्र होकर भी स्वतंत्र नहीं है और पुरुषों के समक्ष होकर भी समान नहीं है। कहीं ना कहीं हमारी सामाजिक संरचना और समाज में लोगों की मानसिकता यही बनी हुई है कि महिलाएं अपना निर्णय स्वयं और सही ढंग से नहीं ले सकती हैं। परिवार से लेकर सार्वजनिक स्थलों तक उनसे संबंधित निर्णय जब तक वह स्वयं नहीं लेगी तब तक समाज के लोगों की मानसिकता में बदलाव नहीं आएगा अब तक महिलाएं की बात करना निरथक होगा धन्यवाद।

Improving Skillset

ISBN: 978-81-958181-9-8

नारी के बढ़ते कदम और चुनौतियाँ

डॉ.राजा राम,
सहायक प्राध्यापक हिंदी,
राजकीय महाविद्यालय भट्टू कलां (फतेहाबाद)
dr.rajaramagrawal@gmail.com
संपर्क–9896789100

आज भारतीय नारी ने अपने स्तर पर हर क्षेत्र में सफलता हासिल की है। इंडियन वूमन अर्थात भारतीय महिला– इस शब्द को सुनते ही हर नागरिक के मन में एक विशेष छवि उभरने लगती है। भारतीय महिला अर्थात एक अच्छी बेटी, अच्छी बहन, माँ, पत्नी इत्यादि। समाज के हर क्षेत्र में महिलाओं का योगदान भुलाया नहीं जा सकता है। अगर हम शिक्षा के विषय में बात करें तो पुरुषों की अपेक्षा, महिलाओं में अशिक्षा का स्तर ज़्यादा है किन्तु अगर शिक्षित नारी की शिक्षित पुरुष से तुलना की जाए तो वह उनसे कहीं आगे है।

विकसित व सभ्य समाज में भी महिलाओं के समक्ष कड़ी चुनौतियाँ हैं। महिलाओं ने विपरीत परिस्थितियों में ही असीम धैर्य, अद्वितीय साहस और सूझ–बूझ से कई कीर्तिमान स्थापित किए हैं। इस तथ्य के बावजूद कि महिलाएं हमारे समाज का एक अभिन्न अंग हैं और कई महिलाएं घर और बाहर विविध और दोहरी तिहरी जिम्मेदारियों को निभा रही हैं, उनकी स्थिति और अधिकारों को न तो ठीक से समझने का प्रयास किया जाता है और न ही उन पर ध्यान दिया जाता है। सतही तौर पर, महिलाओं के बारे में बहुत कुछ कहा जाता है और वादे किए जाते हैं। वास्तव में महिलाओं का सम्मान एक पारंपरिक भारतीय आदर्श है और सैद्धांतिक रूप से इसे समाज में व्यापक स्वीकृति भी मिली है। उन्हें 'देवी' कहा जाता है। दुर्गा, सरस्वती और लक्ष्मी के रूप में इनकी पूजा की जाती है और इनकी स्तुति भी 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता ' जैसे दैवीय वाक्यों से की जाती है। किसी भी शुभ कार्य या अनुष्ठान की शुरुआत गौरी और गणेश की पूजा से होती है। यह सब समृद्धि बढ़ाने और अधिक शक्ति प्राप्त करने की इच्छा को पूरा करने और अधिकतम क्षमता का एहसास करने के लिए किया जाता है। लेकिन आज चंहु ओर जिस तरह से महिलाओं के खिलाफ हिंसा विशेषकर यौन बढ़ रही है, वह महिलाओं के प्रति समाज की प्रतिबद्धता और निष्ठा पर गंभीर सवालिया निशान खड़ा करती है। देश के किसी भी कोने से कोई भी किसी भी दिन का अखबार उठा लें,किसी भी माध्यम से खबर सुन लें, तो महिलाओं की उपेक्षा और अत्याचार की खबरें प्रमुख रूप से उपस्थित हो जाती हैं। महिलाओं के खिलाफ हर तरह के अपराध बढ़ रहे हैं। न केवल उनकी सुरक्षा और सम्मान बल्कि उनके मूलभुत मानवी अधिकारों की भी अक्सर अनदेखी की जा रही है। यह परिदृश्य महिला सक्षमता और सशक्त बनाने की संभावनाओं पर गंभीरता से ध्यान देने की मांग करता है, विशेष रूप से ऐसे उपाय जो उन्हें समर्थ बनाने में मदद करते हैं। इसके लिए सामाजिक पारिस्थितिकी में सकारात्मक बदलाव जरूरी होगा जिसके भीतर महिलाओं का जीवन सन्निहित होता है।

स्वतंत्रता के इन 75 वर्ष पश्चात भी हम महिलाओं को सामान्यतः दोयम दर्जे की नागरिक के रूपों में देखते हैं। इस बात में कोई संदेह नहीं है कि स्वतंत्रता के 75 वर्षों में भारत में महिला वर्ग में बड़ी तेजी से परिवर्तन हुए हैं।समाज और राष्ट्र जीवन के हर क्षेत्र में महिलाओं के कदम निरंतर बढ़ते ही जा रहे

ISBN: 978-81-958181-9-8

हैं,आजादी से पूर्व भारत में अधिकतर महिलाएँ केवल घरों में रहती थीं। उन्हें घर से बाहर निकलने, पढ़ने–लिखने, खेलने, पुरुषों की तरह बाहर काम करने आदि अनेक क्षेत्रों में अनुमति,सामाजिक स्वीकृति नहीं थी। भारतीय संविधान में महिला एवं पुरुष दोनों के लिए समान अधिकार बनाए गए हैं, किन्तु निरक्षरता एवं घरेलू तथा कुछ पुरातन धार्मिक परंपराओं की वजह से महिलाएँ उन समस्त अधिकारों का सम्पूर्ण उपयोग नहीं कर पाई हैं।

यद्यपि आज भारतीय नारी ने अपने स्तर पर हर क्षेत्र में सफलता हासिल की है। अगर हम शिक्षा के विषय में बात करें तो पुरुषों की अपेक्षा, महिलाओं में अशिक्षा का स्तर ज्यादा है किन्तु अगर शिक्षित नारी की शिक्षित पुरुष से तुलना की जाए तो वह उनसे कहीं आगे है। हम अकसर अखबारों में पढ़ते हैं– हाईस्कूल परीक्षा परिणाम में छात्राओं ने बाजी मारी, आईआईटी परीक्षा परिणाम में छात्रा सर्वप्रथम। अतः महिलाएँ अपने प्रयास और प्रयत्न में पीछे नहीं हैं, किन्तु आवश्यकता है उन्हें सही अवसर प्रदान करने की।

इसी तरह विज्ञान, व्यापार, अंतरिक्ष, खेल, राजनीति हर क्षेत्र में भारतीय नारी ने नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं। जिस तरह सरदार वल्लभभाई पटेल को लौह पुरुष कहा जाता है उसी तरह इंदिरा गाँधी ने प्रधानमंत्री के रूप में 'लौह महिला'की ख्याति अर्जित कर भारत का नाम संपूर्ण विश्व में गौरवान्वित किया है।सौन्दर्य के क्षेत्र में ऐश्वर्या राय, सुस्मिता सेन ने न केवल भारत बल्कि पूरे विश्व में सम्मान प्राप्त किया है। संगीत की दुनिया में लता मंगेशकर को साक्षात सरस्वती माँ का दर्जा दिया गया है। किरण बेदी, पीटी उषा, कल्पना चावला जैसी महिलाओं ने साबित किया है कि वे किसी से कम नहीं हैं।

आज भारतीय नारी हर क्षेत्र में आगे बढ़ने के प्रयास में कार्यरत है, किन्तु हमारी पारंपरिक सोच ही उनकी प्रगति में बाधक है। जब कोई विवाहित महिला अपने करियर में आगे बढ़ना चाहती है, आत्मनिर्भर बनना चाहती है तो सर्वप्रथम उसके परिजनों को ही उसमें आपत्ति होती है।

समय आ गया है कि हम समीक्षा करें कि उन्होंने सामाजिक व आर्थिक रूप से कितनी प्रगति की है जिससे उनके सशक्तिकरण का अंदाजा लगाया जा सके। यह दुखद है कि कुछ अपवादों को छोड़कर प्रोफेशनल और सार्वजनिक जीवन में महिलाओं का प्रतिनिधित्व बहुत कम है।

भारत की सबसे तेजी से बढ़ रही अर्थव्यवस्था के तौर पर चर्चा की जाती है पर सच ये भी है कि यह महिलाओं के लिए दुनिया में सबसे असुरक्षित स्थानों में से एक बन गया है। हर रोज महिलाओं के खिलाफ हिंसा के समाचार आते हैं। महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए पुरूषों के रवैये में बदलाव आना जरूरी है पर महिलाओं की सुरक्षा अंततः राज्य की जिम्मेदारी है। महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए उन्हें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाना जरूरी है।

हालांकि कुछ महिलाएं अच्छा कर रही हें लेकिन कुल मिलाकर काम में महिलाओं की भागीदारी श्रम बल के तौर पर अन्य ब्रिक्स देशों की तुलना में बहुत कम 26 प्रतिशत ही है। इसका कारण महिलाओं के सामने आने वाली वे सभी बाधाएं हैं जिनका सामना काम करने पर करना पड़ता है। कई मामलों में पति की अच्छी आय शुरू होते ही वे काम करना बंद कर देती हैं। कई पुरूष भी कामकाजी महिलाओं को पसंद नहीं करते

ISBN: 978-81-958181-9-8

हैं। उनका मानना है कि वे घर की जिम्मेदारी और बच्चों के पालन–पोषण को उपेक्षित करती हैं। मध्य व उच्च आय वर्ग में महिलाओं के घरेलू बने रहने पर ज्यादा जोर है।

आज भी कई क्षेत्रों महिलाओं का पारिश्रमिक पुरूषों से काफी कम है। दूरदराज के गांवों में महिलाओं को पानी भरने से लेकर इंधनध्जलावन के लिए लकड़ी एकत्र करना, मवेशियों की देखभाल और घर के बुजुर्गों और बच्चों की सेवा करनी पड़ती है। उनका पूरा दिन इस भाग दौड़ में गुजर जाता है। लाखों ग्रामीण महिलाओं के लिए जीवन कठोर है। इनमें से कईयों को गैर सरकारी संगठनों ने इस दुष्चक्र से निकलने में मदद कीय आज इन महिलाओं को एक साथ काम करने, नए हुनर सीखने और इसके एवज में होने वाली कमाई से आनंद मिलता है।

कृषि में महिलाओं के साथ बहुत ज्यादा भेद–भाव होते है। हालांकि वे औसतन घर के पुरूष से कहीं ज्यादा काम करती हैं पर उनके इस काम का न कोई भुगतान है न पहचान।काम को आय का स्रोत ही नहीं माना जाता ।

संसद में भी महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण देने के कई प्रस्ताव आए और अस्वीकार हुए। भारत में संसद में लगभग 12.2 प्रतिशत महिलाएं हैं। पंचायतों में हालांकि 1993 में ही महिला आरक्षण हो गया था जो ग्रामीण विकास के क्षेत्र में मील का पत्थर है। निकट भविष्य में यह आरक्षण 50 प्रतिशत तक जाने की संभावना है।

विधवाओं की स्थिति तो और भी बुरी है। समाज में, खासकर हिंदुओं में, उन्हें बड़े खराब तरीके से रखा जाता है। बहुत से मामलों में उनके परिवार वाले उन्हें छोड़ देते हैं या एक अभाव भरी जिंदगी बिताने के लिए वृंदावन या बनारस भेज देते हैं। वृंदावन में लगभग 6,000 विधवाएं अपने बूते या दान पर निर्भर होकर अकेले रह रही हैं। रूढ़ियां देश में महिलाओं को स्थिति को खराब करती हैं। इसके लिए उन्हें काम कर आर्थिक स्वतंत्रता हासिल करनी होगी, अपने प्रजनन स्वास्थ्य का ध्यान रखना होगा, परिवार के मामलों में मजबूती से आवाज रखनी होगी तथा राजनीति में उचित अनुपात में प्रतिनिधत्व हासिल करना होगा।

अंततः हम यही निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि स्वतंत्रता के इतने वर्षों में भारतीय नारी हर क्षेत्र में आगे बढ़ी है। उसने कई उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं किन्तु जरुरत है उन्हें आत्मनिर्भर बनाने की, जिसके लिए आवश्यकता है, विचार परिवर्तन की। सामाजिक संकीर्णताओं से मुक्ति पाने की। महिला वर्ग को एहतियात बरतनी होगी कि यौन उच्छश्रीन्खालता से बचे ,देहसत्ता से मुकाम हासिल करने को अपनी मंजिल न बना लें, भारतीय महिला अपना आसमान खुद तलाश लेगी, अगर वातावरण अनुकूल हो।

ISBN: 978-81-958181-9-8

महिलाओं के बढ़ते कदम

डॉ प्रवेश सूद
प्राचार्य शांति शिक्षण महाविद्यालय
नकडोह जिला ऊना (हि० प्र०)

आज हमारे देश में जिस प्रकार से नारी के जीवन में बदलाव आया है और वो जिस तरह से अपने जीवन में संघर्षों से लड़कर लगातार आगे बढ़ रही है वो बहुत सराहनीय है। आज की महिला समाज में सशक्त महिला के रूप में उभर कर सामने आई है। आज हम देखते हैं कि जिस तरह से नारी अपने जीवन में आगे बढ़ रही है वो देखकर गर्व होता है क्योंकि आज कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है जहां उसने सफलता ने हासिल की हो। आज वो एक डॉक्टर है, वकील है, इंजीनियर है, शिक्षिका, लेखिका, कलाकार, नृत्यांगना है। राजनीति के क्षेत्र में उसने अपनी जगह बनाई है इसके अलावा खेलकूद में अपने देश का नाम रोशन किया है। लगभग सभी क्षेत्रों में वो अपनी मेहनत तथा लगन के दम पर सफल हो रही है। ऐसी महिलाओं के जज्बे को सलाम है।

महिलाओं के शिक्षित होने से ही गांव, समाज, देश और राष्ट्र का विकास होता है। शिक्षित महिलाएँ इस समाज में अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होती हैं। शिक्षित महिलाएँ स्वयं का व्यवसाय भी आरंभ कर सकती हैं और देश की उन्नति में अपना योगदान भी दे सकती हैं। बदलते समय के साथ आधुनिक युग की नारी पढ़ लिखकर स्वतंत्र है। वह अपने निर्णय स्वयं लेती है। अब वह चारदीवारी में निकलकर देश के लिए विशेष महत्वपूर्ण कार्य करती है। महिलाएँ हमारे देश की आबादी का लगभग आधा हिस्सा है। इसी वजह से राष्ट्र के विकास में महान काम में महिलाओं की भूमिका और योगदान को पूरी तरह और सही परिपेक्ष्य में रखकर ही राष्ट्र निर्माण के लक्ष्य को हासिल किया जा सकता ळें

आज की भारतीय महिला शिक्षित होकर विभिन्न क्षेत्रों में अच्छा प्रदर्शन कर रही है। नारी ने पुरुष प्रधान समाज में प्रमाणित कर दिया कि उसकी प्रतिभा तथा दृष्टिकोण पुरुष से पीछे नहीं है। अगर हम महिलाओं की आज की अवस्था को पौराणिक समाज की स्थिति से तुलना करें तो यह तो साफ दिखता है कि हालात में कुछ तो सुधार हुआ है। कई क्षेत्रों में तो महिला पुरुष से भी आगे निकल गई है। महिलाएं परिवार बनाती हैं, परिवार घर बनाता है, घर समाज बनाता है और समाज ही देश बनाता है। इसका सीधा–सीधा अर्थ यही है कि महिला का योगदान हर जगह है। महिला की क्षमता को नजरअंदाज करके समाज की कल्पना करना व्यर्थ है।

भारतीय समाज आज कल्पना चावला, सानिया मिर्जा, शबाना आजमी, अरुणिमा सिन्हा, साइना नेहवाल, पूजा ठाकुर, राशि बंसल, तानिया सचदेवा जैसी आज के भारत की और साधारण महिलाओं को लेकर गौरवान्वित महसूस करता है। उच्च शिक्षा प्राप्त कर महाविद्यालयों में प्राध्यापक होने वाली महिलाओं की संख्या भी कम नहीं है। भारत में महिलाओं का भविष्य उज्ज्वल तथा सुरक्षित प्रतीत होता है आज उनकी भूमिका पत्नी, माँ, पुत्री तक ही सीमित न रहकर बहुत विस्तृत हो गई है।

अंत में मैं यह कहना चाहता हूं कि नारी मातृत्व का रूप होती है। नारी जीवन का मूल आधार है। हमें नारी का सम्मान करना चाहिए। नारी से अधिक शक्ति और सहनशक्ति इस संसार में किसी के पास नहीं है। भारतीय संस्कृति को बनाए रखते हुए हमें महिलाओं का सम्मान करना चाहिए।

ISBN: 978-81-958181-9-8

कामकाजी महिलाओं का जीवन संघर्ष

अमन प्रीत कौर
सहायक प्रवक्ता,
मो. 9671533093
मनोहर मैमोरियल शिक्षण महाविद्यालय
फतेहाबाद (हरियाणा)

भारत जैसे विशाल देश में जहाँ घर व जीवन के सारे निर्णय पुरुष या बुजुर्ग महिला लेती थी आर्थिक जिम्मेदारियां पुरुषों पर रहती थी। आज परिस्थितियां बदल रही है घर की महिला भी आर्थिक विकास के लिए कदम बढ़ा रही है वह भी पुरुषों के कंधे से कंधा मिला कर चल रही है। घर की चारदीवारी को लांघ कर बाहरी दुनिया में प्रवेश कर चुकी है। वह घर और बाहर, बच्चों, दफ्तर, बॉस व सास ससुर, पत्नी धर्म व बाहरी दुनिया के भ्रष्टाचार, शोषण व अनेकानेक समस्याओं का वरण करते हुए अपने अस्तित्व को बेहतर संतुलन बनाने की कोशिश करती जाती है। आज की गृहिणी घर से दफ्तर तक पहुंचने की चाह में अपनी आर्थिक समस्याओं को दूर करने की कोशिश में थकी जा रही है। एक कामकाजी महिला को अपने जीवन में दोहरी भूमिका निभानी होती है जिसमें बाहर कामकाजी महिला के रूप में सांमजस्य व घर में गृहिणी व माँ के रूप में संतानो व अन्य जिम्मेवारियों के साथ सामजस्य स्थापित करना फिर भी कहीं न कहीं उसके जीवन में संघर्ष उत्पन्न होता रहता है। उसे कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। कामकाजी महिलाओं को दोहरी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। अपने घर परिवार, रिश्तो के साथ–साथ ऑफिस आदि के बीच में संतुल बनाना पड़ता है। पुरुषों की अपेक्षा नारी को दोहरी जीवन जीना पड़ता है। उससे आज भी यही उम्मीद रखी जाती है कि आफिस जाने से पहले वह घर का सारा काम वह जिम्मेदारियों को पूरा करके के जाए। पहले औरतों को घर का सारा कार्यभार संभालना होता था तथा पुरुष बाहर जाकर कार्य करता था। तब की स्थिती अलग थी, क्योंकि तब महिलाएं घर पर ही रहती थी। लेकिन अब महिलाएं पुरुषों के बराबर बाहर निकलकर काम करने लगी है, तब भी यह सोच बरकरार है तथा उनसे बाहर के कार्य के साथ– साथ घर का सारे काम की उम्मीद की जाती है। पुरुषों के मुकाबले महिलाओं को दुगना काम करना पड़ता है।

कामकाजी होने के बावजूद भारतीय समाज में महिला की स्थिती आज भी कमजोर है महिला आज भी कमजोर वर्गो में शामिल है। समाज में महिलाएं आज की उपेक्षा व तिरस्कार का शिकार होती है। महिला परिवार की तथा समाज की आधारशिला है। सामाजिक विकास उसी के सहप्रयासों से सम्भव है। जिस समाज में महिलाये उपेक्षा व तिरस्कार का शिकार होती है वह समाज कभी प्रगति नहीं कर सकता। कामकाजी होने के बाद भी घर तथा समाज में उसे वह इज्जत व सम्मान नही मिलता जिसकी वह हकदार होती है पढीलिखी व कामकाजी होने के बावजूद उसे परिवारिक उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है। भारतीय संविधान में महिलाओं को समान अधिकार दिया गया उसमे यह कहा गया है कि हर क्षेत्र में भारतीय महिलाओं को बराबरी का अधिकार दिया जाएगा, उनके साथ किसी प्रकार का कोई भेद नहीं होगा लेकिन उसके अपने घर मे ही उसके साथ कार्य पक्षपात किया जाता है घर के सारे कार्य का भार उसके उपर डाल दिया जाता है। विवाह के बाद महिलाओं को फर्ज घर तथा बाहर दोनों कार्यों में सौंप दिया जाता है। वह घर तथा बच्चों को संभालने के अलावा बहार कमाने भी जाती है तथा पुरुष केवल बाहर कमा कर ही अपने सरे फर्जों से मुक्त हो जाता है। यदि कोई पुरुष घर के कामों में हाथ बटाते है तो

ISBN: 978-81-958181-9-8

उसे घर वाले ही बुरा–भला कहते हैं कि ओरतों वाले काम मर्द होकर करता है। जब तक यह सोच घर परिवार के सदस्यों द्वारा नही बदलती तब तक महिलाओं की स्थिति में पूर्ण सुधार नही हो सकता। जब वह औरत होकर बाहर जाकर कमा सकती है, घर चलाने में पति का सहयोग कर सकती है तो पुरुष घर के कामों में औरत का सहयोग क्यों नही कर सकता। निश्चित तौर पर आज महिलाओं की स्थिति में सुधार के प्रति लोंगों में चेतना बढ़ी है लेकिन महिलाओं के सामने आज भी कई चुनौतियां खड़ी नजर आती है, इसमें सबसे बड़ी चुनौती उसकी सुरक्षा के प्रति समाज में लापरवाही वाला नजरिया है, जिसकी वजह से महिलाएं परिवार से लेकर सड़क तक हिंसा की शिकार होती है। आज भी महिलाएं घर व बाहर दोनों ओर सुरक्षित नहीं है। बाहर उन्हें हर पल कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। पदोंन्ति में भेदभाव, योन उत्पीडन इत्यादि। जब तक महिलाओं के साथ ये भेद–भाव होगा तब तक महिलाओं का यह जीवन संघर्ष खत्म नही हो सकता।

TAKSHILA FOUNDATION
Improving Skillset

ISBN: 978-81-958181-9-8

महिलाओं के बढ़ते कदम में सरकार का योगदान

Name: Sunita Rani
Lecturer in science (D.El.Ed)
M.M. college of education fatehabad
Email : sunitasiger87@gmail.com

हर समाज का विकास उसकी महिलाओं के विकास से सीधे जुड़ा होता है। महिलाओं का सम्मान और सशक्तिकरण भारतीय समाज के विकास के लिए महत्वपूर्ण है। इतिहास गवाह है कि महिलाओं के योगदान के बिना कोई समाज पूर्ण रूप से समृद्ध नहीं हो सकता। हालांकि, भारत में दीर्घकालीन सामाजिक और पारंपरिक मान्यताओं ने महिलाओं को उनके अधिकारों से वंचित रखा है। अभी भी भारत के कई हिस्सों के समाज में महिलाओं को उचित अधिकार प्राप्त नहीं है उन्हें पुरुषों से कमतर समझा जाता है इसीलिए हमें जरूरत है महिला सशक्तिकरण की। बिना महिला सशक्तिकरण के देश का विकास रफ्तार नहीं पकड़ सकता। आज भी भारत समेत दुनिया के कई ऐसे देश हैं जहां महिलाओं को पुरुषों से कम अधिकार प्राप्त हैं। महिलाओं को समानता, अधिकार, और स्वतंत्रता के लिए समर्पित करने के माध्यम से समाज में उच्च स्थान प्रदान किया जाना चाहिए। महिला सशक्तिकरण के बिना अन्याय, लैंगिक पक्षपात और असमानता को दूर नहीं किया जा सकता है। यदि महिलाएं सशक्त नहीं हैं तो वे अपनी खुद की पहचान विकसित नहीं कर सकती हैं।

इसलिए, भारत सरकार ने विभिन्न योजनाओं की शुरुआत की है जो महिलाओं की समृद्धि और सशक्तिकरण को प्रोत्साहित करने के लिए विशेष महत्व देती हैं। जो समाज की सभी महिलाओं को लाभ पहुंचाने का प्रयास करती हैं। महिलाओं के सम्मान, स्वावलंबन, शिक्षा, स्वास्थ्य और सुरक्षा के क्षेत्र में सकारात्मक परिवर्तन के लिए विभिन्न सरकारी योजनाओं का शुरूआती और सक्रिय रूप से समर्थन किया जा रहा है। भारतीय सरकार के इन कदमों से महिलाओं को समानता, स्वावलंबन, और उनकी समृद्धि को बढ़ाने का मौका मिलता है। इससे महिलाओं का दिग्गज योगदान समाज को मिलता है और एक सशक्त और समृद्ध राष्ट्र की नींव बनती है। महिलाओं की सशक्तिकरण को बढ़ाने के लिए और उन्हें समृद्ध बनाने के लिए और उन्हें समृद्ध बनाने के लिए सरकार और समाज दोनों का सहयोग आवश्यक है। इसके लिए सरकार ने विभिन्न योजनाएं शुरू की हैं जो महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक, शिक्षा, स्वास्थ्य, और न्यायिक स्थिति में सुधार लाने का प्रयास करती हैं। भारतीय सरकार ने महिलाओं को सशक्त बनाने और उनकी समृद्धि को बढ़ाने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। कुछ महत्वपूर्ण योजनाएँ निमन्लिखित हैः—

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना

''बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ'' योजना को 2015 में भारत के प्रधानमंत्री ने हरियाणा में शुरू किया था। इसका मुख्य उद्देश्य था बालिकाओं के अस्तित्व, सुरक्षा और शिक्षा की सुनिश्चितता है। इसके तहत, सामाजिक जागरूकता बढ़ाने के लिए अभियान चलाया जाता है और लड़कियों के लिए विकसित कल्याणकारी सेवाओं की पहुंच बढ़ाई जाती है। इस योजना के तहत लड़कियों के लिए बचत खाता खोलने और उनकी शिक्षा को प्रोत्साहित किया जाता है। यह योजना भारत भर में लागू है और इसका लाभ सभी परिवारों को मिल सकता है। इस योजना का लक्ष्य घटते हुए लिंगानुपात के मुद्दों का समाधान करने, सामाजिक जागरूकता पैदा करने और लड़कियों के लिए विकसित कल्याणकारी सेवाओं की पहुंच में वृद्धि करना है। योजना के

ISBN: 978-81-958181-9-8

तहत निम्नलिखित समूहों को लाभ मिलता हैः प्राथमिक समूह (युवा और विवाहित जोड़े, गर्भवती माताएं और माता–पिता), माध्यमिक समूह (युवा, किशोर, ससुराल वाले, डॉक्टर, निजी अस्पताल, नर्सिंग होम, डायग्नोस्टिक सेंटर), तृतीयक समूह (आम जनता, धार्मिक नेता, स्वैच्छिक संगठन, अग्रिम पंक्ति के कार्यकर्ता, अधिकारी, मीडिया और महिला एसएचजी क्षेत्र)। पात्रता मानदंड हैंः बालिका की आयु 10 वर्ष से कम होनी चाहिए और परिवार के सदस्यों के पास किसी भी राष्ट्रीयकृत बैंक में ''सुकन्या समृद्धि खाता'' होना चाहिए।

कामकाजी महिला छात्रावास

यह योजना 6 अप्रैल 2017 को केंद्र सरकार के द्वारा शुरू की गई। जिसका उद्देश्य महिला छात्रों को समर्पित आवास सुविधा प्रदान करना है। यह योजना भारत सरकार द्वारा संचालित की जाती है और महिला शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए अहम भूमिका निभाती है। कामकाजी महिला छात्रावासों में, महिला छात्राओं को सुरक्षित और शुद्ध आवास सुविधा प्रदान की जाती है ताकि वे अध्ययन करते समय निरंतरता और प्रगति की ओर ध्यान केंद्रित कर सकें। छात्रावास में आवास के साथ–साथ भोजन, सुरक्षा, स्वास्थ्य सेवाएं और आवश्यक सुविधाएं भी प्रदान की जाती हैं। इससे महिला छात्रों को उच्चतर शिक्षा लेने का मौका मिलता है और उनका स्वावलंबन बढ़ता है। कामकाजी महिला छात्रावास योजना महिला शिक्षा और उन्नति को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

वन स्टॉप सेंटर योजना

भारत सरकार द्वारा हिंसा से प्रभावित महिलाओं का समर्थन और सहायता करने के लिए 1 अप्रैल 2015 से वन स्टॉप सेंटर योजना लागू की गई थी। ''वन स्टॉप सेंटर'' योजना भारत में महिला सशक्तिकरण योजनाओं की एक और महत्वपूर्ण पहल है। यह योजना एक केंद्र प्रायोजित योजना है और निर्भया फंड के माध्यम से वित्तपोषित होती है। इस योजना के तहत, राज्य सरकारों को सार्वजनिक और निजी स्थानों पर हिंसा के प्रभावित होने वाली महिलाओं की सुरक्षा के लिए केंद्रीय सहायता प्रदान की जाती है। यह योजना महिलाओं के खिलाफ होने वाली सभी प्रकार की हिंसा के सामरिक, चिकित्सा, कानूनी सहायता और परामर्श, और गैर–आपातकालीन सेवाओं की प्रदान करती है।वन स्टॉप सेंटर योजना के तहत योजना के लाभार्थी सभी हिंसा से प्रभावित महिलाएं हैं, चाहे वे किसी भी वर्ग, जाति, क्षेत्र, धर्म, वैवाहिक स्थिति या यौन रुझान की हों। यह योजना महिला एवं बाल विकास मंत्रालय को लक्षित करती है और महिला एवं बाल विकास क्षेत्र के विकास और सुरक्षा को बढ़ाने का लक्ष्य रखती है।वन स्टॉप सेंटर योजना का लाभ उठाने के लिए पात्रता मानदंड में 18 वर्ष से कम आयु की लड़कियां और सभी महिलाएं पात्र हैं।

Improving Skillset

महिला हेल्पलाइन योजना

महिलाओं की मदद के लिए यह सेवा आठ मार्च 2016 को '181' महिला हेल्पलाइन सेवा शुरू की थी। योजना के संचालन की जिम्मेदारी निजी क्षेत्र की कंपनी 'जीवीके एमआरआई' को पांच वर्षों के लिए दी गई थी योजना भारत में सरकारी महिला सशक्तिकरण योजनाओं में से एक है, जिसका उद्देश्य है निजी या सार्वजनिक स्थानों पर हिंसा से प्रभावित महिलाओं को **24*7** आपातकालीन सहायता प्रदान करना। महिला हेल्पलाइन नंबरों का सार्वभौमिकरण प्रत्येक राज्य और केंद्र शासित प्रदेश में टोल–फ्री नंबर (181) के माध्यम से किया गया है, जो देश भर में महिलाओं को तत्काल सहायता प्रदान करता है। इसके साथ ही यह योजना महिला सशक्तिकरण से संबंधित योजनाओं और कार्यक्रमों के बारे में जागरूकता फैलाती है।महिला

ISBN: 978-81-958181-9-8

हेल्पलाइन योजना के तहत लाभार्थी में हिंसा का सामना कर रही महिलाएं या लड़कियां। जिन्हें महिला संबंधी योजनाओं और कार्यक्रमों के बारे में जानने की इच्छा हो। यह योजना महिला एवं बाल विकास मंत्रालय को लक्षित करती है और महिला एवं बाल विकास क्षेत्र के विकास और सुरक्षा को बढ़ाने का लक्ष्य रखती है। इसका मुख्य उद्देश्य महिलाओं को हिंसा और उत्पीड़न से बचाने, साथ ही उन्हें उनके अधिकारों की जागरूकता प्रदान करके सशक्त बनाना है।

महिला ई–हाट

मार्च 2018 से महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय महिला कोष (RMK) के तहत की गई है। एक पहल है जो महिला एवं बाल विकास मंत्रालय द्वारा शुरू की गई है। यह एक सरकारी योजना है जो महिला उद्यमियों को प्रौद्योगिकी का उपयोग करने का अवसर प्रदान करती है और उनके उत्पादों को एक ऑनलाइन मंच पर प्रस्तुत करती है। महिला उद्यमियों को केवल मोबाइल और इंटरनेट कनेक्शन के साथ अपने उत्पादों को विवरण और तस्वीरों के साथ प्रदर्शित करने का अवसर मिलता है। यहां, खरीदार विक्रेताओं को उनसे टेलीफोन, भौतिक, ईमेल या किसी अन्य माध्यम से संपर्क करने की सुविधा होती है। इसमें कपड़े, फैशन सहायक उपकरण, मिट्टी के बर्तन, बक्से, घरेलू सजावट, खिलौने और अन्य वस्त्र शामिल हो सकते हैं। यह पहल ''मेक इन इंडिया'' कार्यक्रम का समर्थन करने वाले एक ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से आपकी उत्पादन को बढ़ावा देने का प्रयास है। महिला ई–हाट योजना के लाभार्थी महिला उद्यमी, महिला स्वयं सहायता समूह (एसएचजी), और गैर सरकारी संगठन हो सकते हैं। यह योजना महिला एवं बाल विकास क्षेत्र को लक्षित करती है। यदि कोई महिला उद्यमी इस योजना का लाभ उठाना चाहती है, तो वह भारतीय नागरिक होनी चाहिए और उनके बेचे गए उत्पाद वैध होने चाहिए।

महिला पुलिस स्वयंसेवक योजना

महिला पुलिस स्वयंसेवी योजना को हरियाणा में 14 दिसंबर 2016 को शुरू किया गया था। इस योजना का उद्देश्य है कि महिला पुलिस स्वयंसेवकों के माध्यम से अपराध के मामलों पर पुलिस की पहुंच सुनिश्चित की जाए और सुरक्षित महिला–अनुकूल वातावरण बनाया जाए। यह योजना हरियाणा में शुरू होने के साथ ही भारत का पहला राज्य बन गई। इस योजना के अंतर्गत, महिला पुलिस स्वयंसेवी सुरक्षा कार्यों में सहायता करती हैं, पुलिस अधिकारियों को समर्थन प्रदान करती हैं, अपराध संबंधी सूचना और साक्षात्कार लेती हैं और महिलाओं का समर्थन करती हैं। इसके लिए महिलाएं निम्नलिखित पात्रता मानदंडों को पूरा करनी होंगीः (1) आयु 21 वर्ष या उससे अधिक, (2) 12वीं कक्षा पास, (3) स्थानीय भौगोलिक क्षेत्र से संबंधित होना, (4) कोई आपराधिक रिकॉर्ड नहीं होना, और (5) किसी राजनीतिक दल की सदस्य नहीं होना।

कदम

गरीबी रेखा से नीचे महिलाओं के लिए प्रशिक्षण और रोजगार कार्यक्रम का कार्यक्रम 1987 में शुरू किया गया था। यह प्रमुख महिला सशक्तिकरण योजना है जिसका पूरा नाम ''सशक्त कदमः महिलाओं के लिए प्रशिक्षण और रोजगार कार्यक्रम का समर्थन'' है। इसका उद्देश्य महिलाओं को कौशल विकास प्रशिक्षण देना और उन्हें रोजगार की सुनिश्चितता प्रदान करना है। यह योजना गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले महिलाओं, संपत्ति–विहीन ग्रामीण महिलाओं और शहरी गरीबों को लाभ पहुंचाती है। सरकार द्वारा योजना के अंतर्गत प्रशिक्षण कार्यक्रमों को आयोजित करने के लिए अनुदान प्रदान किया जाता है। योजना के तहत महिलाओं

ISBN: 978-81-958181-9-8

को उच्च–गुणवत्ता वाले प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रदान किए जाते हैं, जिससे उनकी कौशलों का विकास होता है और वे रोजगार के अवसर प्राप्त कर सकती हैं। योग्यतापूर्वक प्रशिक्षित संगठनों और संस्थानों को अनुदान प्रदान करके योजना का समर्थन किया जाता।

स्वाधार गृह

स्वाधार योजना, भारत में महिला सशक्तिकरण के लिए 2001–2002 में शुरू की गई एक सरकारी योजना है। इसका मुख्य उद्देश्य महिलाओं को आश्रय, भोजन, कपड़े, सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य सुरक्षा प्रदान करना है। योजना के अंतर्गत महिलाओं को कानूनी सहायता और समाज में पुर्नस्थापना के लिए मदद भी प्रदान की जाती है। स्वाधार गृह के लाभार्थी महिलाएं विभिन्न कठिनाईयों से गुजरने वाली, बेघर, एड्स और एचआईवी से पीड़ित, और तस्करी से बचाई गई महिलाएं होती हैं। योजना उन्हें समाज में पुर्नस्थापित करने और स्वतंत्रता–स्वायत्तता की प्राप्ति के लिए आवश्यक सहायता प्रदान करती है। योजना के तहत योग्यता मानदंडों को पूरा करने वाले व्यक्ति इसका लाभ उठा सकते हैं, जिनमें 18 वर्ष से अधिक आयु होनी चाहिए और समाजी–सामाजिक संस्थानों या सहकारी समितियों के सदस्य होना शामिल है।

महिला शक्ति केंद्र

नवम्बर 2017 में प्रधानमंत्री श्रीं नरेंद्र मोदी ने महिला शक्ति केंद्र की शुरुआत की। इसकी लाभार्थी ग्रामीण महिलाएं होती हैं। यह योजना ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाली महिलाओं को सामाजिक और आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए अपनाई जाती है। महिला शक्ति केंद्र (एमएसके) भारत में एक प्रमुख महिला सशक्तिकरण योजना है, जिसका मुख्य उद्देश्य महिलाओं को कौशल विकास, रोजगार के अवसरों का सृजन करना और डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देने के लिए वन–स्टॉप अभिसरण सहायता सेवाएं प्रदान करना है। यह योजना कई स्तरों पर संचालित होती है, जैसे राष्ट्रीय स्तर, राज्य स्तर और जिला स्तर। सरकार का उद्देश्य है कि 920 महिला शक्ति केंद्रों की स्थापना करके 115 सबसे पिछड़े जिलों को कवर किया जाए। महिला भारत की निवासी होनी चाहिए। यह योजना भारतीय महिलाओं के लिए उपलब्ध है।महिला शक्ति केंद्र उच्चतम स्तर की प्रशिक्षण, कौशल विकास, उदयमिता को प्रोत्साहित करने, आधारित रोजगार के अवसर प्रदान करने, आर्थिक सशक्तिकरण को सुनिश्चित करने और आपातकालीन प्रतिस्पर्धा में महिलाओं की पहचान को सुरक्षित रखने के लिए विशेष योजनाएं प्रदान करता है। इसके अलावा, यह महिलाओं को डिजिटल साक्षरता के क्षेत्र में अवसर प्रदान करता है ताकि वे आधुनिक तकनीकी उपकरणों का उपयोग कर सकें और डिजिटल युग में सक्रिय भूमिका निभा सकें।

Improving Skillset

राजीव गांधी राष्ट्रीय क्रेच योजना

''राजीव गांधी राष्ट्रीय क्रेच योजना'' 1 जनवरी, 2017 को शुरू की गई। इस योजना के अंतर्गत कामकाजी महिलाओं को क्रेच सुविधा प्रदान की जाती है ताकि वे अपने बच्चों की देखभाल के लिए इसका लाभ उठा सकें। इससे बच्चों को क्रेच सुविधाएं मिलती हैं और उनके स्वास्थ्य और पोषण में सुधार किया जाता है। यह योजना माता–पिता को बाल देखभाल के तरीकों और तकनीकों की जागरूकता देने के लिए शिक्षित करती है और बच्चों के समग्र विकास को प्रोत्साहित करती है। इसका मुख्य उद्देश्य महिला बाल विकास क्षेत्र को समृद्ध करना है। यह योजना माताओं को कामकाजी जीवन में समानता, स्वतंत्रता और सशक्तिकरण प्रदान करने का प्रयास है। पात्रता मानदंड के तहत बच्चे 6 महीने से 6 साल की आयु के बीच होने चाहिए

ISBN: 978-81-958181-9-8

और कामकाजी महिलाओं को महीने में कम से कम 15 दिन या साल में 6 महीने काम पर रहना चाहिए। यह योजना ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में उपलब्ध है और सरकारी, सामुदायिक और गैर सरकारी संगठनों के सहयोग का उपयोग किया जाता है। इससे बच्चों के विकास और माताओं के पेशेवर आगे बढ़ने का प्रयास किया जाता है और महिलाओं को स्वायत्तता और सशक्तिकरण की प्राप्ति में मदद की जाती है

सुकन्या समृद्धि योजना

सुकन्या समृद्धि योजना भारत सरकार द्वारा प्रारंभ की गई एक सरकारी योजना है। इसकी शुरुआत 22 जनवरी 2015 को की गई थी। यह योजना बालिकाओं को आर्थिक सुरक्षा और उच्च शिक्षा की सुविधा प्रदान करने का उद्देश्य रखती है। इसके अंतर्गत, एक बालिका के नाम पर एक खाता खोला जाता है और उसके नाम पर नियमित रूप से जमा राशि का उपयोग उच्च शिक्षा, विवाह या स्वयं के लिए किया जा सकता है। इस योजना में निवेश की गई राशि नियमित ब्याज दर पर बढ़ती है और समय के साथ योजना के अंतिमिकरण पर राशि में मैच्योर बोनस भी प्रदान किया जाता है। इस योजना का उद्देश्य बालिकाओं के भविष्य के लिए सुरक्षा सुनिश्चित करना और उन्हें स्वावलंबी बनाने में सहायता प्रदान करना है।

प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना

1 मई 2016 को माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने नेतृत्व में एक सामाजिक कल्याण योजना – ''प्रधानमंत्री उज्जवला योजना'' की शुरूआत की। भारतीय सरकार द्वारा शुरू की गई एक महत्वपूर्ण कल्याणकारी योजना है । इसका उद्देश्य गरीब परिवारों को मुफ्त गैस सिलेंडर और स्वच्छ गैस संयंत्र प्रदान करना है। योजना के तहत गरीबी रेखा से नीचे के गृहिणियों को मुफ्त गैस सिलेंडर और संयंत्र की सुविधा प्रदान की जाती है। इससे उन्हें शौचालय को सुरक्षित और स्वच्छ बनाने में मदद मिलती है। योजना का उद्देश्य गृहिणियों को जहरीले धुएं के संपर्क से होने वाली स्वास्थ्य समस्याओं को रोकना और उनकी सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक स्थिति में सुधार लाना भी है। योजना के अंतर्गत महिलाओं को मुफ्त गैस सिलेंडर, प्रेस्टेल स्टेवर्ट, गैस स्टोव, गैस कनेक्शन ट्यूब, और सिक्योरिटी डिपॉजिट दिया जाता है। इसके लिए पात्रता मानदंड जैसे गरीबी रेखा में होना और पहले से गैस कनेक्शन न होने की शर्तें होती हैं। योजना ने अब तक लाखों गरीब गृहिणियों को स्वच्छ गैस संयंत्र प्रदान किया है और उनकी जीवनशैली और स्वास्थ्य में सुधार किया है। इससे महिलाओं को आत्मनिर्भरता का माध्यम मिलता है और स्वच्छता के मानकों को पूरा करने में मदद मिलती है।

सुरक्षित मातृत्व आश्वासन सुमन योजना (Surakshit Matritva Aashwasan Suman Yojana)

''सुमन योजना'' को 10 अक्टूबर 2019 को केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री हर्ष वर्धन द्वारा शुरू किया गया है। यह भारतीय सरकार द्वारा शुरू की गई एक सरकारी योजना है जो मातृत्व स्वास्थ्य के क्षेत्र में गर्भवती महिलाओं के लिए सुरक्षा और सहायता प्रदान करती है। इस योजना के तहत गर्भवती महिलाओं को निःशुल्क और संबद्ध रोजगारी और स्वास्थ्य सुविधाओं के लिए सहायता मिलती है। योजना का लाभ उठाने के लिए गर्भवती महिलाओं को पंजीकरण करना पड़ता है, जिसके बाद उन्हें एक आईडी प्राप्त होती है, जिससे सभी सुविधाओं का उपयोग कर सकती हैं। योजना के अंतर्गत गर्भवती महिलाओं को निःशुल्क प्री–नाताल और पोस्ट–नाताल सेवाएं, उचित पोषण सहायता, निःशुल्क जन्म समय सेवाएं, निःशुल्क शिशु संपर्क, वैकल्पिक

ISBN: 978-81-958181-9-8

वैद्यकीय सुविधाएं और अन्य सहायता प्रदान की जाती है। इससे महिलाओं के मातृत्व स्वास्थ्य में सुधार होता है और समाज में उनकी स्थिति में सुधार लाया जा सकता है।

कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय योजना (Kasturba Gandhi Balika Vidyalaya Scheme)

''कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय योजना'' एक सरकारी शिक्षा योजना है जो भारत में गरीबी रेखा के नीचे आने वाली महिला छात्रों के लिए शिक्षा की सुविधा प्रदान करती है। यह योजना 2004 में शुरू की गई थी और इसका उद्देश्य गरीबी के कारण छात्राओं की शिक्षा को बढ़ावा देना है और उन्हें सामरिक, मानसिक, सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध व्यक्तित्व विकसित करने का समर्थन करना है। योजना के अंतर्गत, संचालित कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों में मुफ्त शिक्षा, आवास और आहार की सुविधाएं प्रदान की जाती हैं। इन विद्यालयों में विद्यालय शिक्षा के साथ–साथ शैक्षिक गतिविधियों, क्रीड़ा, कला, साहित्यिक कार्यक्रम और अन्य सामरिक गतिविधियों का भी संचालन किया जाता है। योजना का मुख्य उद्देश्य महिला शिक्षा के माध्यम से समाज में समरसता और समानता का संवर्धन करना है।

महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से केंद्र सरकार ने महिलाओं के लिए कई योजनाओं की घोषणा की है। कुछ योजनाएं यहाँ बताई गई इसके अलावा बहुत सारी और भी योजनाएं चलाई गई है, जो महिलाओ के विकास के लिए सरकार के सहयोग का समर्थन करती है।

Improving Skillset

ISBN: 978-81-958181-9-8

कुछ आम औरतों की भी सोचें

डा. ज्योति
असिस्टेंट प्रोफेसर,
एम. एम. शिक्षण महाविद्यालय, फतेहाबाद

हिन्दी में स्त्री विमर्श को लेकर जो लहर चली है वह कुछ ऐसी है जैसे फैशन का कोई ट्रैंड। एक विषय पर कोई फिल्म बनती है तो दर्जनों फिल्में उस विषय को लेकर बनने लगती है। वही दशा हिन्दी में स्त्री विमर्श की है। और खासकर तब, जब इसके साथ यौन–स्वच्छन्दता का चटाकेरदार मसाला लगा हो। कहानी, उपन्यास अब पिछड़ चले, स्त्री विमर्श की पुस्तके निकल रही है, उनमें से कुछ को फूहड़ कहना भी शायद कम करके ही आँकना होगा। दरअसल स्त्री– विमर्श एक गम्भीर मुद्दा है और वह भी तब, जब भारत जैसे देश के सन्दर्भ में लिखना हो, जहाँ स्त्री सदियों तक दबा–कुचला अस्तित्व वहन करती आ रही हो। यह मुद्दा विस्तार से समझे जाने की मांग करता है। इसके लिए

हमें, कुछ अपने, कुछ विदेशी इतिहास में कुछेक दशक पीछे जाना होगा। अपने यहाँ का तो हम जानते ही हैं कि कैसे उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वाद्ध तक स्त्रियाँ लगभग नरकीय जीवन जी रही थी। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त तक हमारे यहाँ के प्रबुद्ध पुरुषों के ही बलबूते सती– प्रथा, बाल–विवाह और बहुविवाह आदि के खिलाफ अभियान छेड़े गए, जिनपर पिछली शताब्दी के मध्य तक ही प्रभावी कानून बन पाए। लेकिन आश्चर्य न कहिए, सन 1882 तक ब्रिटेन जैसे देश में भी स्त्री पुरुष की ही सम्पत्ति समझी जाती थी। वोट देने का अधिकार भी उन्नत से उन्नत पश्चिमी देशों में भी स्त्री को बीसवीं शताब्दी के पूर्वाद्ध तक ही मिल पाया। रोजगार के क्षेत्र में तो उसके साथ भेदभाव सम्भवतः कहीं–कहीं अब भी जारी हो, अपने यहाँ तो है ही। अब आइये, देखें कि भारत में किस तरह के स्त्री–विमर्श की उपयुक्तता है। इसके लिए हमें भारतीय परिप्रेक्ष्य में नारीवाद की संकल्पना को समझना होगा। भारत में नारीवाद, भले ही आया हो पश्चिमी देशों से होकर ही, लेकिन हमारे यहाँ के नारीवाद के मूल उद्देश्यों और वहाँ के उग्र नारीवाद (रैडिकल फेमिनिज्म) में बहुत अन्तर है। सन 1960 के दशक के उत्तार्द्ध और सन 1970 के दशक के पूर्वाद्ध में उग्र नारीवादी महिलाओं ने विवाह की अवधारणा और पूंजीवाद के खिलाफ आवाज उठायी। उनके अनुसार पुरुष शोषक थे। और महिलाएं शोषित। वे क्रान्तिकारी संघर्ष द्वारा अपनी मुक्ति चाहती थी। पश्चिम का नारीमुक्ति आन्दोलन, पुरुषों के खिलाफ था। विवाह को उन्होंने विधिमान्य बलात्कार कहा। औरतों ने यह कहा कि उन्हें अपने शरीर पर हक है और वे जब चाहें, जिस किसी के साथ अपने शरीर को आनन्द दे सकती है। बहरहाल, हमारे यहाँ के महिला आन्दोलन की शुरुआत दूसरे ढंग से हुई। फिर भी हमारे यहाँ का आन्दोलन कई दृष्टियों से उनसे भिन्न था। हमारी लड़ाई सेक्स की आजादी की लड़ाई न होकर, अन्धविश्वास, रूढ़ियों और स्त्री की उपेक्षित अवस्था की लड़ाई थी। हमारा संघर्ष पुरुष प्रभुसत्ता के खिलाफ न होकर, उनसे हमारे उत्थान की अधिकाधिक अपेक्षाओं को लेकर था। हमारे यहाँ तो पुरुष समाज सुधारक स्वयं स्त्रियों के उत्थान के प्रयासों में लगे थे। गाँधी जी सम्भवतः देश के पहले नेता थे जिन्होंने पहली बार खुलकर, अपने पत्र यंग इण्डिया (सन 1931) में लिखा, मैं उस भारत के निर्माण के लिए काम करूँगा, जिसमें महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त होंगे ।संविधानसभा में अखिल भारतीय महिला परिषद् की कुछ सदस्यों का सम्मिलित होना दुनिया–भर के महिला आन्दोलन के इतिहास में एक अनोखी बात थी। पश्चिम के सन 1960 और सन 1970 के दशक का जो महिला आन्दोलन भारत आया, इसने भी हमारे यहाँ आकर हमारी

ISBN: 978-81-958181-9-8

परिस्थितियों के अनुकूल रूप ढाल लिया। यद्यपि हमारे यहाँ भी नारी मुक्ति आन्दोलन की कर्ता–धर्ता पढ़ी–लिखी शहरी महिलाएँ ही थीं, जिनकी मांग यही थी कि घर के भीतर और बाहर हिंसा न हो, इन दोनों जगहों पर उसके साथ समानता और सम्मान का व्यवहार हो । दहेज के लिए उसकी प्रताडना बन्द हो । यौन– उन्मुक्ति की बातें तो बहुत बाद की हैं। स्वल्पता के मारे कुपोषित शरीर को अच्छे स्वास्थ्य की कामना होगी, बेटे–बेटियों में फर्क करनेवाले समाज में स्त्री शिक्षा के अधिकार के लिए लड़ेगी, रोजगार के समान अवसरों के लिए लड़ेगी, दहेज के लिए सतायी जानेवाली स्त्री घर और बाहर अपने आत्मसम्मान और आदर–मान के लिए लड़ेगी, न के यौन उन्मुक्ति की माँग को लेकर। और पहले यह तो बताइये कि यह माँग आखिर है क्या। अवैध–सम्बन्धों को वैधता दिलाने की माँग? वह अधिकार तो समाज और कानून में पुरुष को भी नहीं मिला । यौन–सम्बन्धों के मामलों में जो कुछ भी होता है, चोरी–छिपे ही तो होता और उसमें स्त्री को भी कुछ भी करने से रोक ही कौन सकता है? जो लड़ाइयां पश्चिम में भी पुरानी पड़ चुकी हैं, उन्हीं को स्त्री–विमर्श के नाम पर मिर्च–मसाले लगातार भुनाना कत्तई सम्माननीय नहीं कहा जा सकता है। तोड़ना है तो यौनिकता की लक्ष्मण–रेखाओं को क्यों, उन रीति–रिवाजों और सामाजिक नियमों–विधानों को तोड़ें, जो स्त्री– पुरुष के बीच असमानता के आधार पर रिश्ते तय करते हैं। स्त्री–विमर्श के दायरे में क्या सिर्फ शहरों की कुछेक प्रतिशत स्त्रियां ही आएंगी, जिनकी बाकी सब भूखे तुष्ट हो चुकी, सिर्फ यौन की भूख ही शेष रह गई हो कि उसके लिए लड़ा जाय। क्यों नहीं लिखी जाती कहानियां, उन दस लाख ग्राणीण स्त्रियों के स्त्री विमर्श पर जो संविधान के 73वे 74वें संशोधन के बाद (अप्रैल सन 1993) में आरक्षण के तहत पहली बार पंचायती इकाईयों और नगर निकायों में चुनकर आई?

स्त्री–विमर्श हैं मध्य प्रदेश के मंदसौर जिले के मुहम्मदपुरा गाँव की सरपंच लीलाबाई की कहानी, जो कभी घूम–वूस कर सब्जियां बेचा करती थी और अब अपने गाँव की सरपंच है। स्त्री–विमर्श है डेबरी पटपटा पंचायत की सरपंच है 2 वोटिया के बारे में बात करना, जिसने महिलाओं की भागीदारी 3 ऐसे–ऐसे कामों को सम्पन्न किया, जो पुरुषों ने कभी सोचे भी नहीं थे। उसने गाँव–गाँव में कूड़ेदान बनवाए, कच्ची सड़कों को पक्का करवाया, शौचालय बनवाए, पानी की पाइप लाइनें बिछाई और बूढों को पेंशन दिलाई। स्त्री–विमर्श के दायरे में आती है गुजरात के पंचमहल जिले के कलोल तालुक की एक पंचायत की सरपंच सरस्वती बेन, जिसने दंगों के समय अपने गाँव के अनेक दूसरी जाति के परिवारों को सुरक्षित स्थानों में भेजा, उनके पुनर्वास की व्यवस्था कराई। स्त्री– विमर्श के भीतर आने को तड़प रहे हैं ऐसे मुद्दे जिन्हें उठकर स्त्री प्रजातन्त्र में अपनी सहभागिता की अहमियत को समझा सके। सिर्फ यौन–स्वतन्त्रता की माँग पर, पन्ने के पन्ने भरना या पुरुषों को कोसना– गरियाना और फिर उन्हीं के साथ गृहस्थी के आनन्द को भी भोगते रहना, स्त्री–विमर्श कत्तई नहीं है। स्त्री के सर्वागीण विकास की दिशा में उसके विभिन्न पक्षों पर रास्ते में आनेवाली दिक्कतों या खुलते रास्तों पर, उसके सामने खुले अवसरों के अनन्त आकाश पर चर्चा ही स्त्री– विमर्श की दिशा में, खासकर भारत जैसे देश के सन्दर्भ में, एक सुनियोजित कदम होगा।

ISBN: 978-81-958181-9-8

नारी शक्ति

काजल
छात्रा (बी. एड.) द्वितीय वर्ष
मनोहर मेमोरियल शिक्षण महाविद्यालय (फतेहाबाद)

- **प्रस्तावना :–**

नारी में सहनशीलता, धैर्य और ममता जैसे, गुण मौजूद है। किसी भी समाज की कल्पना नारी के बिना नहीं की जा सकती है। जब कोई नारी कोई भी चीज करने की ठान लेती है तो वह कर दिखाती है।

नारी की हिम्मत और सहनशीलता पुरुषों से भी अधिक है। नारी अपने वादे से पीछे नहीं हटती है। नारी अपने जिम्मेदारियों को निभाती हैं और कठिन परिस्थितियों में अपनी शक्ति का परिचय देती हुई नजर आती है।

देश में कई महिलाओं ने विभिन्न क्षेत्र में अपने साहस और सूझ बूझ का परिचय दिया है। झांसी की रानी लक्ष्मीबाई ने अग्रेजों के खिलाफ निडर होकर जंग लड़ी थी। उन्होंने आजादी के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी थी।

नारी ने अपने हर रूप में यह साबित किया है कि वह अबला नारी नही है। वक्त आने पर वह अपने हालातो से लड़ भी सकती है और उसे काबू में भी ला सकती है। नारी चाहे, वह माँ हो, या बहन, या फिर पत्नी, उसके हर रूप में उसका सम्मान करना चाहिए।

- **घर संभालना और अपनो की देखभाल :–**

नारी के गर्भ से जीवन का आरम्भ होता है। नारी अपने जीवन में, कई भूमिकाएं निभाती है। वह एक दिन में, बिना थके घंटो काम करती है। वह अपने परिवार के सदस्यों की देख रेख करती है। परिवार के लोगों को अच्छी सलाह देती है।

जब परिवार का कोई भी सदस्य कभी बीमार पड़ता है, तो वह उसकी देख भाल करती है। जब घर का कोई सदस्य थक कर घर आता है, तो महिलाएं खाना परोसती है और कोई भी परिवार के सदस्य की चिंता और थकान अपने बातों से दूर कर देती है।

Improving Skillset

वह बच्चों की शिक्षक बन जाती है और उन्हें पढ़ाती है और अपने घरेलू नुस्खों से परिवार के सदस्य का इलाज भी करती है। वह बिना शर्त रखे, सभी काम करती है, और अपनो को खुश रखती है और वह दुसरों की जिंदगी में खुशी लाने के लिए बलिदान भी करती है।

- **महिलाएं अब नहीं है कमजोर :–**

आज महिलाएं कमजोर नहीं है। वह शिक्षित हो रही है। वह अपने विचारों को घर– बाहर निडर होकर रखती है। वह सम्मान और मर्यादा में रहना जानती है। वह संस्कारों का पालन करती है। उन्हें कोई भी

ISBN: 978-81-958181-9-8

असम्मान करे, तो अब वह चुप नहीं रहती है। महिलाओं ने अपने अधिकारों को पहचान लिया है और हर क्षेत्र में अपनी सशक्त भूमिका निभा रही है।

- **प्रेरणादायक स्रोत :–**

इंदिरा गाँधी, कल्पना चावला, सरोजिनी नायडू जैसी महान शख्सियत ने अपने आपको अपने क्षेत्र में ना केवल साबित किया, बल्कि लोगों के लिए वे प्रेरणादायक स्त्रोत भी बनी।

- **आत्म निर्भर और स्वयं निर्णय लेना :–**

पहले के जमाने में लड़कियों का पढ़ना–लिखना अच्छा नहीं माना जाता था। उन्हें घर के चार दीवारों में कैद कर लिया जाता था। वह अपना कोई भी निर्णय खुद नहीं ले पा रही थी। आज नारी शिक्षित हो रही है।

ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जहां महिलाएं काम ना कर रही हो। आज महिलाएं पुरुषों के साथ कंधे से कन्धा मिलाकर चल रही है। पुरुषो से किसी मामले में वह कम नहीं, है। किसी–किसी स्थान में महिलाओं ने पुरुषों को पीछे छोड़ दिया है।

आजकल महिलाएं उच्च पदों पर काम कर रही है और घर चला रही है। वह घर और दफ्तर दोनों को बराबर सम्भाल रही है। महिलाएं खुद अपने पाँव पर खड़ी हो रही है और घर का खर्चा भी चला रही है।

- **आत्म विश्वास के साथ जिन्दगी जीना :–**

नारी शिक्षित हो गयी, है और आज देश में महिलाओं की प्रगति के लिए, अभियान चलाये जा रहे हैं। नारी आत्मविश्वास के साथ सभी मुश्किलों का सामना करके आगे बढ़ रही है। हर क्षेत्र में वह सफलता प्राप्त कर रही है

- **अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाना :–**

जिस देश में, देवी की पूजा की जाती है, वहाँ कुछ लोग ऐसे भी है जो महिलाओं का असम्मान करते हैं। कुछ घरों और समाज में आज भी महिलाओं के साथ अत्याचार होता है। आज वर्तमान युग में नारी पहले से अधिक जागरूक और समझदार हो गयी है।

अब उनपर अत्याचार बढ़ जाता है तो वह उसके खिलाफ विरोध करना भी जानती है। बेवकूफ है वह लोग जो महिलाओं को कमजोर समझते है। अब वक्त आ गया है कि पुरुष भी महिलाओं की सोच और उनके विचार धाराओं का सम्मान समाज और घर में उन्हें अवश्य दे।

- **नारी शक्ति :–**

जब – जब महिलाओं पर अत्याचार बढ़ जाता है। तो वह काली माँ जैसा रूप धारण कर लेती है और अपराधियों का सर्वनाश कर देती है। जो लोग महिलाओं का सम्मान नहीं करते है और उन्हें कमजोर समझते हैं वे नारी शक्ति के प्रभावशाली शक्ति से परिचित नहीं होते हैं।

ISBN: 978-81-958181-9-8

नारी शक्ति के कई उदाहरण है और वर्तमान युग में महिलाओं ने अपनी शक्ति और मजबूती का परिचय भी समय समय पर दिया है।

- **नारी और उसका स्वभाव :–**

नारी बहुत ही साधारण और मीठे स्वभाव वाली होती है। जितनी सहनशीलता नारी में है, उतनी सहनशीलता पुरुषों में नहीं है। वह हर हालत को सोच समझ कर और धैर्य के साथ सभाल लेती है। पहले के जमाने में लड़की को सिर्फ बोझ समझा जाता था।

पहले के जमाने में लोग नारी को घर के कामों में संलग्न कर देते थे। घर वाले सोचते थे कि लड़कियाँ, पढ़–लिखकर क्या करेगी, आगे जाकर उन्हें शादी करनी है और घर संभालना है। उस जमाने में लडकियों के सोच को अहमियत नही दी जाती थी।

- **संघर्ष करने की शक्ति :–**

नारी में संघर्ष करने की अपार शक्ति होती है वह हर परिस्थिति के अनुसार अपने आपको ढाल लेती है। जब भी घर में मुश्किल हालात पैदा होते है, तो महिलाए सभी सदस्यों को संभालती है और संयम के साथ सबको सलाह देती है।

जब कोई उनके संयम की परीक्षा लेना चाहता है और उन्हें जरूरत से ज्यादा परेशान करता है, तो वह नारी शक्ति का रूप धारण कर लती है। पहले के जमाने में महिलाओं को अपने ससुराल में रहकर ताने सुनने पड़ते थे।

वही सहमी हुई रहती थी। अशिक्षित होने के कारण वह विवश रहती थी। लेकिन आज इक्कीसवी सदी में हालात में परिवर्तन आ गया है। अब महिलाओं का बोझ नहीं एक प्रभावशाली नारी शक्ति के रूप में देखा जाता है।

रानी लक्ष्मीबाई नारी शक्ति का जीता जागता उदाहरण है। उनका विवाह कम उम्र में हो गया था। वह बचपन से ही अन्याय के विरुद्ध लड़ना जानती थी। जब उनके पति की मृत्यु हुई, तब उन्होंने झाँसी की सभाल और अंग्रेजों के खिलाफ आखिरी दम तक जंग लड़ी। उन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ते हुए अपने साहस का परिचय दिया।

- **आज की नारी**

Improving Skillset

आज की नारी मजबूत है और उनके आँखों में, कई सपने है। आज की नारी शिक्षित और वह पहले के कुप्रथाओं से बाहर निकलकर आ चुकी है। आज की नारी डॉक्टर है, इंजीनियर है, शिक्षक भी है।

वह पुरुषों से, किसी मामले में ना तो कमजोर है और ना ही कम है। आजकल कई जगहों में महिलाओं के साथ अत्याचार और अन्याय हो रहे हैं और वह चुपचाप सहन कर रही है। नारी आगे बढ़ रही है, क्षेत्र में अपने देश का नाम रोशन कर रही है। अब वक्त आ गया कि सभी पुरुष नारी और उनकी सोच का सम्मान करें।

ISBN: 978-81-958181-9-8

- **निष्कर्ष :–**

नारी को देवी माँ का स्वरूप माना जाता है। अब परिवारों और समाज को भी नारी का और उसके अस्तित्व का सम्मान करना होगा। आज नारी हर कार्य में पुरुषों से भी बेहतर साबित हो रही है और अपनी एक अलग पहचान बना रही है। सदियों से चल रही कुप्रथाओं को तोड़कर वह हौसलों की नई उड़ान भर रही है।

Reference :- with the help of (Hindiarticles.n)

Improving Skillset

ISBN: 978-81-958181-9-8

महिलाओं के बढ़ते कदम

शोभा रानी
पूर्व छात्रा (Alumni)
मनोहर मेमोरियल शिक्षण महाविद्यालय (फतेहाबाद)

नारी के बढ़ते कदम आजकल हमें देखने को मिलते हैं। नारी आजकल हर क्षेत्र में अपने कदम बढ़ा रही है चाहे वह कोई सा भी क्षेत्र हो।

आजकल नारी पुरुष से किसी भी क्षेत्र में कम नहीं है, वो आज पुरुष से कदम से कदम मिलाकर चल रही है और अपने सभी तरह के कार्यों को अच्छे तरीके से कर रही है। आजकल के इस आधुनिक युग में चाहे कोई सा भी व्यापारी हो या कोई सा भी नौकरी हर एक क्षेत्र में नारी पुरुष से कम नहीं है। बड़े–बड़े बिजनेस को करके नारी बिजनेस वूमेन बनकर हर किसी के लिए प्रेरणा स्त्रोत बन रही है।

प्राचीन काल में लोग पुरुष से ज्यादा नारी को कमजोर समझते थे। लेकिन पिछले कुछ समय से लेकर आज के आधुनिक युग तक नारी ने जो कर दिखाया है वह किसी के लिए और आने वाली भावी पीढ़ियों के लिए प्रेरणा बन रही है।

एक समय था जब भारतीय महिलाओं की भूमिका सिर्फ घर की चारदिवारी तक ही सीमित थी। वही आज उनकी भूमिकाओं में घर की चारदीवारी को तोड़ते हुए उन्हें अंतरिक्ष में पहुंचा दिया है। पिछले कुछ सालों में महिलाएं कई क्षेत्रों में आगे आई हैं। उनमें नया आत्मविश्वास पैदा हुआ है और वह अब हर काम को चुनौती के रूप में स्वीकार करने लगी है। अब महिलाएं सिर्फ चूल्हे चौके तक सीमित नहीं रह गई है।

भारतीय समाज आज कल्पना चावला, सानिया मिर्जा, शबाना आजमी, अरुणिमा सिन्हा, साइना नेहवाल, तानिया सचदेवा इत्यादि जैसी आज के भारत की असाधारण महिलाओं को लेकर गौरवन्तित महसूस करती है। निश्चित ही एक ऐसे समाज में जहां एक समय महिला का शिक्षित होना आश्चर्य की दृष्टि से देखा जाता था, वही आज नारी का व्यक्तित्व नये आयाम की ओर बढ़ रहा है।

निसंदेह नारी को अपने अस्तित्व के लिए काफी संघर्ष करना पड़ रहा है। समय के अनुसार सोच बदल रही है। इसके (प्रति) लिए महिलाओं को अपने मूल अधिकारों के प्रति जागरूक होना होगा। भारत के ग्रामीण एवं दूरस्त इलाकों में आज महिलाएं भी शिक्षा के अधिकार से वंचित हैं।

सरकार ने महिलाओं की शिक्षा के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए वर्षों से कई योजनाएं शुरू की हैं, जैसे सर्व शिक्षा अभियान, ब्लैक बोर्ड ऑपरेशन, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, और भी इत्यादि। शिक्षा महिलाओं को अच्छे और बुरे की पहचान करने, उनके दृष्टिकोण, सोचने के तरीके और चीजों को संभालने के तरीके को बदलने में मदद करती है। शिक्षा महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने में मदद करती है।

शिक्षा सभी का मौलिक अधिकार है और किसी को भी शिक्षा के अधिकार से वंचित नहीं किया जाना चाहिए। शिक्षा जीवन की आवश्यकताओं को पूरा करने में मदद करती है, घरेलू हिंसा तथा यौन उत्पीड़न के खिलाफ आवाज उठाने में आत्मविश्वास पैदा करती है।

ISBN: 978-81-958181-9-8

आज महिलाओं में उच्च शिक्षा ग्रहण कर समाज एवं देश विकास में न केवल पुरुष की बराबरी कर कंधे से कंधा मिलाकर अपनी भूमिका का निर्वहन कर रही, बल्कि अपनी योग्यता व क्षमता से चहुमुखी विकास की ओर अग्रसर भी है। महिलाओं ने हर क्षेत्र में अपनी पकड़ मजबूत की। चिकित्सा, इंजीनियरिंग, कंप्यूटर, प्रौद्योगिकी व उच्च प्रशासनिक एवं पुलिस सेवाओं में उनका पुरुषों के समान ही सम्मानजनक स्थान पाकर सेवाएं दे रही हैं।

पुलिस सेवा में कार्यकुशलता से एवं बहआयामी प्रतिभाओं से किरण बेदी जैसी अनेक महिलाएं अपनी कार्यकुशलता का लोहा मनवा चुकी हैं। देश की महिलाओं में वायुयान संचालन एवं सेना, पुलिस और परिवहन के क्षेत्र में भी कार्य करके पुरुषों की बराबरी का साहस दिखाया है।

राष्ट्रीय महिला सशक्तिकरण नीति 2001 के अनुसार महिलाओं को सामाजिक सशक्तिकरण में महिलाओं और लड़कियों के लिए शिक्षा तक समान पहुंच सुनिश्चित किया जाएगा और किया गया है। भेदभाव मिटाने, शिक्षा को जन–जन तक पहुंचाने, निरक्षरता को दूर करने, लिंग संवेदी शिक्षा पद्दति बढ़ाने, तकनीकी कौशलों के साथ–साथ पर्यंत शिक्षण को सुलभ बनाने के लिए शिक्षा का गुणवत्ता में सुधार के लिए विशेष उपाय किए जाएंगे।

एक नारी शिक्षा प्रदान करती है तो वह आने वाले भावी पीढ़ियों और एक अच्छे समाज का निर्माण करती है। इसलिए बदलाव का हिस्सा बने, और शिक्षा की मदद से एक महिला को सशक्त बनाएं। वास्तव में नारी अपने आप में परिपूर्ण है। नारी के कदम यदि इसी तरह आगे बढ़ते गए तो हमारा भारत देश एक नए ढंग से उभरता हुआ देश बनेगा।

Improving Skillset

ISBN: 978-81-958181-9-8

महिला सशक्तिकरण

प्रोमिला
छात्रा (बी. एड.) द्वितीय वर्ष
मनोहर मेमोरियल शिक्षण महाविद्यालय (फतेहाबाद)

सशक्तिकरण :–

आज के आधुनिक समय में "महिला सशक्तिकरण" एक विशेष चर्चा का विषय है। हमारे आदि ग्रंथों में नारी के महत्व को मानते हुए यहां तक बताया गया है, कि "यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता" अर्थात जहां नारी की पूजा होती है, वहां देवता निवास करते हैं।

लेकिन विडंबना तो देखिए नारी में इतनी शक्ति होने के बावजूद भी उसके सशक्तिकरण की अत्यंत आवश्यकता हैं। महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण का अर्थ उनके आर्थिक फैसलों, आय, संपत्ति और दूसरे वस्तुओं की उपलब्धता से है, इन सुविधाओं को पाकर ही वह अपने सामाजिक स्तर को ऊंचा कर सकती हैं।

भारत में महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए सबसे पहले समाज में उनके अधिकारों और मूल्यों को मारने वाली उन सभी राक्षसी सोच को मारना जरूरी है। जैसे – दहेज प्रथा, अशिक्षा, यौंन हिंसा, असमानता, भ्रुण हत्या, महिलाओं के प्रति घरेलू हिंसा, वेश्यावृत्ति, मानव तस्करी और ऐसे ही दूसरे विषय।

राष्ट्र के विकास में महिलाओं का महत्व और अधिकार के बारे में समाज में जागरूकता लाने के लिए मातृ दिवस, अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस आदि जैसे कई सारे कार्यक्रम सरकार द्वारा चलाए जा रहे हैं। महिलाओं को कई क्षेत्र में विकास की जरूरत है।

नारी सशक्तिकरण का अर्थ तब समझ में आएगा जब भारत में उन्हें अच्छी शिक्षा दी जाएगी और उन्हें इस काबिल बनाया जाएगा कि वह हर क्षेत्र में स्वतंत्र होकर ऐसे ले कर सके।

महिला सशक्तिकरण का अर्थ :–

महिला सशक्तिकरण का अर्थ महिलाओं के सामाजिक और आर्थिक स्थिति में सुधार लाना है। ताकि उन्हें रोजगार, शिक्षा, आर्थिक तरक्की के बराबरी के मौके मिल सके, जिससे वह भी पुरुषों की तरह अपनी आकांक्षाओं को पूरा कर सकें।

Improving Skillset

भारत में महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता :–

भारत में महिला सशक्तिकरण के बहुत सारे कारण सामने आते हैं। प्राचीन काल की अपेक्षा मध्य काल में भारतीय महिलाओं के स्तर में काफी कमी आयी है। जितना सम्मान उन्हें प्राचीन काल में दिया जाता था, मध्यकाल में वह सम्मान घटने लगा था।

- आधुनिक युग में कई भारतीय महिलाएं कई सारे महत्वपूर्ण राजनीतिक तथा प्रशासनिक पदों पर पदस्थ हैं, फिर भी सामान्य ग्रामीण महिलाएं आज भी शिक्षित होते हुए भी अपने घरों में रहने के लिए बाध्य हैं।

ISBN: 978-81-958181-9-8

- भारत के शहरी क्षेत्रों की महिलाएं ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं की अपेक्षा अधिक रोजगारशील है, आंकड़ों के अनुसार भारत के शहरों में सॉफ्टवेयर इंडस्ट्री में लगभग 30% महिलाए कार्य करती हैं, वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में लगभग 90 फीसदी महिलाएँ मुख्यतः कृषि और इससे जुड़े क्षेत्र में दैनिक मजदूरी करती हैं।
- भारत में महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता का एक और मुख्य कारण वेतन में असमानता भी है। एक अध्ययन में सामने आया है, कि समान अनुभव और योग्यता के बावजूद भी भारत में महिलाओं को पुरुषों की अपेक्षा 20% कम वेतन दिया जाता है।
- आधुनिक समाज में महिलाओं के अधिकार को लेकर ज्यादा जागरूकता की आवश्यकता है, जिसका परिणाम स्वरूप कई सारे स्वयं सेवी समूह और एन.जी.ओ. आदि इस दिशा में कार्य कर रहे हैं।

भारत में महिला सशक्तिकरण के मार्ग में आने वाली बाधाएं :–

भारतीय समाज एक ऐसा समाज है जिसमें कई तरह के रिवाज, मान्यताएं शामिल है। इसमें से कुछ पुरानी मान्यताएं और परंपराएं ऐसी भी है जो भारत में महिला सशक्तिकरण के लिए बाधा सिद्ध होती है। उन्हीं बाधाओं में से कुछ निम्नलिखित हैः

- पुरानी और रूढ़िवादी विचारधाराओं के कारण भारत में कई सारे क्षेत्रों में महिलाओं को घर से निकलने की पाबंदी है।
- रुढ़िवादी विचारधाराओं के वातावरण में रहने के कारण महिलाएं खुद को पुरुषों से कम समझने लगती हैं।
- कार्यक्षेत्र में होने वाला शोषण भी महिला सशक्तिकरण में एक बड़ी बाधा है।
- भारत में अभी भी कार्यस्थलों में महिला को पुरुष की अपेक्षा कम भुगतान किया जाता है।
- महिलाओं में अशिक्षा और बीच में पढ़ाई छोड़ने जैसी समस्याएं भी सशक्तिकरण में बाधा है।
- कन्या भ्रुण हत्या की महिला सशक्तिकरण में आने वाली महत्वपूर्ण बाधा है।

भारत में महिला सशक्तिकरण में सरकार की भूमिका :–

भारत सरकार द्वारा महिला सशक्तिकरण के लिए कई सारी योजनाएं चलाई जाती है। इनमें से कई सारी योजनाएं रोजगार, कृषि और स्वास्थ्य जैसी चीजों से संबंधित होती है। इन योजनाओं का गठन भारतीय महिलाओं के परिस्थिति को देखते हुए किया गया है, ताकि समाज में उनकी भागीदारी को बढ़ाया जा सके। "महिला एवं बाल विकास मंत्रालय" का गठन भी महिलाओं की सुविधाओं एवं सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए बनाया गया है। इनमें से कुछ योजनाएं निम्नलिखित हैंः

1. मनरेगा सर्व शिक्षा अभियान
2. जननी सुरक्षा योजना
3. बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना
4. महिला हेल्पलाइन योजना
5. उज्ज्वला योजना
6. स्पोर्ट्स टू ट्रेंनिंग एंड एंप्लॉयमेंट प्रोग्राम फॉर वूमेन
7. महिला शक्ति केंद्र
8. पंचायती राज योजनाओं में महिलाओं के लिए आरक्षण
9. संसद द्वारा महिला सशक्तिकरण के लिए पास किए गए कुछ अधिनियम :

Improving Skillset

ISBN: 978-81-958181-9-8

i. दहेज रोक अधिनियम 1961
ii. लिंग पर शिक्षण तकनीक एक्ट 1994
iii. बाल विवाह रोकथाम एक्ट 2006
iv. कार्यस्थल पर महिलाओं का शोषण एक्ट 2013

महिला सशक्तिकरण के कारण महिलाओं की जिंदगी में हुए बहुत से बदलाव :

1. महिला साक्षरता दर में वृद्धि हुई है।
2. महिलाएं अपनी जिंदगी से जुड़े फैसले खुद कर रही है।
3. महिलाएं आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने लगी हैं।
4. महिलाओं के गर्भ से बाहर जाने संबंधी कुछ हद तक रूढ़िवादी जाएं कम हुई है।
5. पुरुष और महिलाओं के फैसलों की इज्जत करने लगे हैं।
6. महिलाएं बहुत महत्वपूर्ण पदों पर आसीन हुई है जैसे राष्ट्रपति महोदय द्रौपदी मुरमू

महिला अधिकारों और समानता का अवसर पाने में महिला सशक्तिकरण की अहम भूमिका निभा सकती है। क्योंकि स्त्री सशक्तिकरण महिलाओं को सिर्फ गुजारे भत्ते के लिए ही तैयार नहीं करती बल्कि उन्हें अपने अंदर नारी चेतना को जगाने और समाजिक अत्याचारों से मुक्ति पाने का माहौल भी पैदा करती है।

References with the help of .succeeds.net.www.Hindikiduniya.com

Improving Skillset

ISBN: 978-81-958181-9-8

भारत में महिला सशक्तिकरण की ओर समग्रता में निरंतर बढ़ते कदम

संदीप
छात्रा (बी. एड.) द्वितीय वर्ष
मनोहर मेमोरियल शिक्षण महाविद्यालय (फतेहाबाद)

केंद्र की मोदी सरकार महिलाओं को मुख्यधारा में लाने के अथक प्रयास कर रही है। एक समावेशी सोच के साथ महिलाओं को देश के शीर्ष पदों का कार्यभार भी दिया जा रहा है। उनके बेहतर भविष्य के लिए विभिन्न योजनाओं और कार्यक्रमों को क्रियान्वित किया जा रहा है।

डा. खुशबू गुप्ता :–

आज हम एक ऐसे वैश्विक परिवेश में रह रहे है, जहां विश्व मे लगभग सभी देश महिला स्वतंत्रता, समानता और अधिकार जैसी अवधारणाओं की केवल बात ही नहीं करते, बल्कि जमीनी स्तर पर इसे क्रियान्वित करने का प्रयास भी कर रहे हैं। महिला सशक्तिकरण और महिला शिक्षा जैसी बातों पर विमर्श में बदलाव वैश्विक स्तर पर तो परिलक्षित हो ही रहा है। बल्कि अब महिलाओं के नेतृत्व मे विकास जैसी प्रगतिशील बातें भी हो रही है। परंतु पहला प्रश्न यह है कि क्या महिला सशक्तिकरण का संबंध केवल सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक अधिकारों तक ही सीमित है बिल्कुल नहीं, इसका संबंध देश की आधी आबादी के आत्मनिर्णय, समाज की दकियानूसी रूढ़िवादी प्रथाओं के प्रति जागरुक होना भी है। वास्तव मे महिला सशक्तिकरण आधी आबादी की प्रगति उनमें चेतना का संचार और जागरूकता से संबंधित है।

आज महिलाएं अपने सीमित दायरे से निकल कर अपनी रचनात्मकता योग्यता के बल पर विकास प्रक्रिया में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। वही वर्तमान मे देश के भीतर हिजाब पर हो रहा विवाद एक मुद्दा बना हुआ है। कुछ राजनीतिक दलों के द्वारा इस मुद्दे को राजनीतिकरण किया जा रहा है। इंटरनेट मीडिया पर हिजाब पहनी हुई एक छात्रा का सड़क पर लगाया जा रहा एक चर्चित नारे का वीडियो सामने आने के बाद से उसे निडर और बहादुर कहा रहा है। इसी क्रम में कुछ राजनीतिक दलों द्वारा बयानबाजी भी कर दी गई। महिलाओं को यह अधिकार है कि वह कुछ भी पहन सकती है और यह उनका व्यक्तिगत मामला है। मुस्लिम समुदाय के कुछ नेता इस मामले में धार्मिक स्वायंता और धर्मनिरपेक्षता का हवाला दे रहे हैं। इस ज्वलंत मुद्दे के पीछे तथाकथित लोगो के कुछ तत्कालीन कारण या यू कहे की अवसर निहित है जो कि देश के विभिन्न राज्यों में हो रहे चुनाव में समुदाय विशेष का समर्थन प्राप्त करने के उद्देश्य से उनको बरगलाया जा रहा है। राजनीतिक लाभ के कारण कट्टरपंथियों द्वारा हिजाब का मुद्दा खड़ा किया गया है।

विदित ही कि 19वीं शताब्दी में विभिन्न समाज सुधारकों राजा राममोहन राय , स्वामी विवेकानंद , दयानंद सरस्वती , सर सैयद अहमद खान आदि ने महिलाओं की दयनीय स्थिति की सुधारने का महत्वपूर्ण प्रयास किया। यह प्रयास न केवल हिंदू धर्म की महिलाओं, बल्कि मुस्लिम महिलाओं के उत्थान के लिए भी था। महिला शिक्षा, विधवा विवाह, परिवारिक संपत्ति में अधिकार, पर्दा प्रथा, सती प्रथा का विरोध, ऐसे कई मुद्दे जिस पर समाज सुधारकों द्वारा आदोलन किया गया और बाद में उन्हें सफलता भी मिली। ये तो रही 19 वीं शताब्दी की बात, लेकिन आज तो हम 21वीं शताब्दी में रह रहे है। स्वाधीन के 75वें वर्ष को अमृत

ISBN: 978-81-958181-9-8

महोत्सव के रूप में मना रहे है। ऐसे समय में हिजाब पहनने के लिए मुस्लिम छात्रों द्वारा देश के कई क्षेत्रों में आंदोलन करना और कट्टरपंथियों के बहकावे में आकर सड़कों पर उतरना कहां तक सही है ? यदि मैं गलत नहीं हूँ तो एक महिला संभवत: अपनी इच्छा से पर्दा या हिजाब का चयन तो नही करती, बल्कि धर्म की आड़ में बचपन से ही उस पर पर्दा थोपा जाता रहा है तथा उन पर सामाजिक दबाव बनाया जाता है।

बहुत ही रोचक बात यह है की विश्व के कई मुस्लिम बाहुल्य (लगभग 80.90 प्रतिशत) देश में सार्वजानिक स्थल पर हिजाब, बुर्के पर कुछ कारणों जिनमे आधुनिकीकरण, धर्मनिरपेक्षता और कई देशों ने सुरक्षा की दृष्टि से प्रतिबंद लगा दिया गया। लेकिन अपने देश के बारे में बीते दिनों प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने संसद में कहा कि भारत लोकतंत्र की जननी है। ऐसे में एक ऐसा लोकतांत्रिक देश जो सर्व समावेशी समाज बात पर बल देता है, महिला सशक्तिकरण की बात ही नहीं, बल्कि यहां महिलाओं के नेतृत्व में विकास पर बल दिया जा रहा है। आज हिजाब पहनने को लेकर आंदोलन किया जा रहा है जो बेहद दुर्भाग्य की बात है। इस विवाद ने महिला सशक्तिकरण को हास्यास्पद बना दिया है। जो महिलाएं बिना हिजाब के कार्यस्थल पर जाती है। उनके चरित्र पर न केवल सवालिया निशान खड़ा करता है, बल्कि भेदभाव भी को बल प्रदान करता है।

गौरतलब है कि यह केवल हिजाब विवाद का ही मुद्दा नहीं है। समाज में महिलाओं की स्थिति, समान अधिकार, स्वतंत्रता, स्वयं का निर्णय स्व – चेतना का मुद्दा है। महिला होने के नाते यह समय है स्वयं की स्थिति पर पुनः विचार करने का ऐसी सभी प्रथाओं और कुरीतिये का विरोध करने का, जो उनको स्वाधिनता की तरफ ले जाए। धार्मिक कट्टरपंथियों को आईना दिखने का जो महिलाओ एक वस्तु समझने की भूल करते है। समय है स्वयं के अस्तित्व पर विचार करने का कि क्या हम महिलाएं सही मायने से स्वतंत्र हैं? वह किसी भी धर्म समुदाय को ही, क्या महिलाएं स्वतंत्र के मूलभूत सार को समझ रही हैं, उसका उपभोग कर पा रही है?

वर्षो से महिलाएं लैंगिक समानता, स्वतंत्रता और अधिकार के लिए संघर्ष करती आई है। परिणामस्वरूप आज विश्व के लगभग सभी देश विकास प्रक्रिया में आधी आबादी की महत्वपूर्ण भूमिका को समझते हुए उनकी सहभागिता को सुनिश्चित कर रही है। चाहे व निर्णय निर्माण प्रक्रिया हो या सैन्य क्षेत्र, मेडिकल, कला, विज्ञान, और खेल जगत, ऐसे कई अन्य क्षेत्रों में महिलाएं बढ़ चढ़ कर हिस्सा ले रही है। परंतु इस तथ्य को नकारा नही जा सकता है कि महिलाएं स्वतंत्र होकर भी स्वतंत्र नही है। कहीं न कहीं हमारी सामाजिक सरंचना और समाज में लोगो की मानसिकता अभी भी यही बनी हुई है कि महिलाएं निर्णय स्वयं और सही ढंग से नहीं ले सकती है। परिवार से लेकर सार्वजनिक स्थलों तक उनसे संबंधित निर्णय जब तक वे स्वयं नहीं लेंगी जब तक समाज में लोगो की मानसिकता मे बदलाव नही आएगा, तब तक महिला सशक्तिकरण की बात करना निरर्थक होगा।

References:-

Jagran.com

www.Jagran.Com

ISBN: 978-81-958181-9-8

भारत में महिलाएं

मनीषा रानी
छात्रा (बी. एड.) द्वितीय वर्ष
मनोहर मेमोरियल शिक्षण महाविद्यालय (फतेहाबाद)

भारत में महिलाओं की स्थिति ने पिछली कुछ सदियों में कई बड़े बदलावों का सामना किया है। प्राचीन काल में पुरुषों के साथ बराबरी की स्थिति से लेकर मध्ययुगीन काल के निम्न स्तरीय जीवन और साथ की कई सुधारकों द्वारा समान अधिकारियों को बढ़ावा दिए जाने तक, भारत में महिलाओं का इतिहास काफी गतिशील रहा है। आधुनिक भारत में राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, लोकसभा अध्यक्ष, प्रतिपक्ष की नेता आदि जैसे शीर्ष पद पर आसीन हुई है।

इतिहास :-

विशेष रूप से महिलाओं की भूमिका की चर्चा करने वाले साहित्य के स्त्रोत बहुत ही कम है। 1730 ई० के आसपास तंजावुर के एक अधिकारी यम्बक्यज्वन का स्त्री धर्म पद्धति इसका एक महत्वपूर्ण अपवाद है। इस पुस्तक में प्राचीन काल में अपस्तंभ सूत्र (चौथी शताब्दी ई० पू०) के काल के नारी सुलभ आचरण संबंधी नियमों को संकलित किया गया है इसका मुखड़ा छंद इस प्रकार है :-

मुख्यो धर्मः स्मृतिषु विहितो भार्तृशुश्रूषानम हिः अर्थात् स्त्री का मुख्य कर्तव्य उसके पति की सेवा से जुड़ा हुआ है।
जहाँ सुश्रूषा शब्द (अर्थात सुनने की चाह) में ईश्वर के प्रति भक्त की प्रार्थना से लेकर एक दास की निष्ठापूर्ण सेवा तक कई तरह के अर्थ समाहित है।

प्राचीन भारत :-

विद्वानों का मानना है कि प्राचीन भारत में महिलाओं को जीवन के सभी क्षेत्रों में पुरुषों के साथ बराबरी का दर्जा हासिल था। हालाँकि कुछ अन्य विद्वानों का नजरिया इसके विपरीत है। पतंजलि और कात्यायन जैसे प्राचीन भारतीय व्याकरणविदों का कहना है कि प्रारंभिक वैदिक काल में महिलाओं को शिक्षा दी जाती थी। ऋग्वेदिक ऋचाएँ यह बताती है कि महिलाओं की शादी एक परिपक्व उम्र में होती थी और संभवतः उन्हें अपना पति चुनने की भी आजादी थीं। ऋग्वेद और उपनिषद जैसे ग्रंथ कई महिला साध्वियों और संतों के बारे में बताते हैं जिनमें गार्गी और मैत्रयी के नाम उल्लेखनीय है।

अध्ययनों के अनुसार प्रारंभिक वैदिक काल में महिलाओं को बराबरी का दर्जा और अधिकार मिलता था। हालाँकि बाद में (लगभग 500 ईसा पूर्व में) स्मृतियों (विशेषकर मनुस्मृति) के साथ महिलाओं की स्थिति में गिरावट आनी शुरू हो गयी और बाबर एवं मुगल साम्राज्य के इस्लामी आक्रमण के साथ और इसके बाद ईसाइयत ने महिलाओं की आजादी और अधिकारों को सीमित कर दिया।

मध्ययुगीन भारत :–

ISBN: 978-81-958181-9-8

समाज में भारतीय महिलाओं की स्थिति में मध्ययुगीन काल के दोरान और अधिक गिरावट आयीद्य जब भारत के कुछ समुदायों में सती प्रथा, बाल विवाह और विधवा पुनर्विवाह पर रोक, सामाजिक जिंदगी का एक हिस्सा बन गई थी। भारतीय उपमहाद्वीप में मुसलमानों की जीत ने परदा प्रथा को भारतीय समाज में ला दिया। राजस्थान के राजपूतों में जोहर की प्रथा थीद्य भारत के कुछ हिस्सों में देवदासियाँ या मंदिर की महिलाओं को योन शोषण का शिकार होना पड़ता था। बहु विवाह की प्रथा हिन्दू क्षत्रिय शासकों में व्यापक रूप से प्रचलित थी। कई मुस्लिम परिवारों में महिलाओं को जनाना क्षेत्रों तक ही सीमित रखा गया था।

इन परिस्थितियों के बावजूद भी कुछ महिलाओं ने राजनीति, साहित्य, शिक्षा और धर्म के क्षेत्रों में सफलता हासिल की। रजिया सुल्तान दिल्ली पर शासन करने वाली एकमात्र महिला सम्राज्ञी बनीं। गोंड की महारानी दुर्गावती ने 1590 में मुगल सम्राट अकबर के सेनापति आसफ खान से लड़कर अपनी जान गँवाने से पहले पन्द्रह वर्षों तक शासन किया। चाँद बीबी ने 1590 के दशक में अकबर की शक्तिशाली मुगल सेना के खिलाफ अहमदनगर की रक्षा की। शिवाजी की माँ जीजाबाई को एक योद्धा और एक प्रशासक के रूप में उनकी क्षमता के कारण कवीन रीजेंट के रूप में प्रदस्थापित किया गया था। भक्ति आंदोलन ने महिलाओं की बेहतर स्थिति को वापस हासिल करने की कोशिश की और प्रभुत्व के स्वरूपों पर सवाल उठाया। एक महिला संत – कवयित्री मीराबाई भक्ति आंदोलन के सबसे महत्वपूर्ण चेहरो में से एक थी।

ऐतिहासिक प्रथाएँ :–

कुछ समुदायों में सती, जौहर और देवदासी जैसी परंपराओं पर प्रतिबंध लगा दिया वाला था और आधुनिक भारत में ये काफी हद तक समाप्त हो चुकी है। कुछ समुदायों में भारतीय महिलाओं द्वाला परदा कुछ प्रथा को आज भी जीवित रखा गया है और विशेषकर भारत के वर्तमान कानून के तहत एक गैरकानूनी कृत्य होने के बावजूद बाल विवाह की प्रथा आज भी प्रचलित है।

सती प्रथा :–

सती प्रथा एक प्राचीन और काफी हद तक विलुप्त रिवाज है। कुछ समुदायों में विधवा को अपने पति की चिता में अपनी जीवित आहुति देनी पड़ती थी। हालांकि यह कृत्य विधवा की ओर से स्वैच्छिक रूप से किए जाने की उम्मीद की जाती थी। ऐसा माना जाता है कि कई बार इसके लिए विधवा को मजबूर किया जाता था। 1829 में अंग्रेजो ने इसे समाप्त दिया।

जौहर प्रथा :–

जौहर का मतलब सभी हारे हुए (सिर्फ राजपूत) योद्धाओं की पत्नियों और बेटियों को शत्रु द्वारा बंदी बनाए जाने और इसके बाद उत्पीड़न से बचने के लिए स्वैच्छिक रूप से अपनी आहुति देने की प्रथा है। अपने सम्मान के लिए मर–मिटने वाले पराजित राजपूत शासकों की पत्नियों द्वारा इस प्रथा का पालन किया जाता था।

परदा प्रथा :–

परदा वह प्रथा है जिसमें कुछ समुदायों में महिलाओं को अपने तन को इस प्रकार से ढँकना जरूरी होता है कि उनकी त्वचा और रंग रूप का किसी को अंदाजा ना लगे।

ISBN: 978-81-958181-9-8

देवदासी प्रथा :–

देवदासी दक्षिण भारत के कुछ हिस्सों में एक धार्मिक प्रथा है जिसमें देवता या मंदिर के साथ महिलाओं की शादी दी कर जाती थी।

अंग्रेजी शासन :–

यूरोपीय विद्वानों ने 19वीं सदी में यह महसूस किया था कि भारतीय महिलाएँ 'स्वाभाविक रूप से मासूम' और अन्य महिलाओं से 'अधिक सच्चरित्र' होती हैं। अंग्रेजी शासन के दौरान राम मोहन राय, ईश्वर चंद्र विद्यासागर, ज्योतिबा फुले आदि कई सुधारकों ने महिलाओं के उत्पान के लिए लड़ाइयाँ लड़ीं। झाँसी की महारानी रानी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजों के खिलाफ 1857 के भारतीय विद्रोह का झंडा बुलंद किया। आज उन्हें सर्वत्र एक राष्ट्रीय नायिका के रूप में माना जाता है। अवध की सह–शासिका बेगम हजरत महल एक अन्य शासिका थी जिसने 1857 के विद्रोह का नेतृत्व किया था। उन्होंने अंग्रेजो के साथ सौदेबाजी से इंकार कर दिया और बाद में नेपाल चली गई। चंद्रमुखी बसु, कादंबिनी गांगुली और आनंदी गोपाल जोगी कुछ शुरूआती भारतीय महिलाओ में शामिल थीं जिन्होंने शैक्षणिक डिग्रियाँ हासिल की। भारत की आजादी के संघर्ष में महिलाओं ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भिकाजी कामा, डॉ. एनी बेसेंट, प्रीतिलता वाडेकर, विजयलक्ष्मी पंडित, राजकुमारी अमृत कौर, अरुणा आसफ अली, सुचेता कृपलानी और कस्तूरबा गाँधी कुछ प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानियों में शामिल है। एक कवयित्री और स्वतंत्रता सेनानी सरोजिनी नायडू भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्ष बनने वाली पहली भारतीय महिला और भारत के किसी राज्य की पहली महिला राज्यपाल थीं।

स्वतंत्र भारत में महिलाएँ :–

भारत में महिलाएँ अब सभी तरह की गतिविधियों जैसे कि शिक्षा, राजनीति, मीडिया, कला और संस्कृति, सेवा क्षेत्र, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी आदि में हिस्सा ले रहीं हैं। इंदिरा गाँधी जिन्होंने कुल मिलाकर पंद्रह वर्षों तक भारत के प्रधानमंत्री के रूप में सेवा की, दुनिया की सबसे लंबे समय तक सेवारत महिला प्रधानमंत्री हैं।

भारत का संविधान सभी भारतीय महिलाओं को समान अधिकार, राज्य द्वारा कोई भेदभाव नहीं करने, अवसर की समानता, समान कार्य के लिए समान वेतन की गारंटी देता है।

भारत सरकार ने 2001 को महिलाओं के सशक्तिकरण वर्ष के रूप में घोषित किया था। महिलाओं के सशक्तिकरण की राष्ट्रीय नीति 2001 में पारित की गई थी। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के एक दिन बाद, 9 मार्च 2010 को राज्यसभा ने महिला आरक्षण बिल को पारित कर दिया जिसमें संसद और राज्य की विधान सभाओं में महिलाओं के लिए 33% आरक्षण की व्यवस्था है।

सार रूप में कहां जा सकता है कि भारत में महिलाओं की स्थिति इतिहास से वर्तमान समय संतोषजनक नहीं रही है। उन्हें अनेक समस्याओं यौन उत्पीड़न, दहेज, बाल विवाह, कन्या भ्रूण हत्या, घरेलू हिंसा, तस्करी आदि का पड़ता सामना आज भी करना पड़ता है। परंतु फिर भी भारत में महिलाओं ने अपनी मेहनत और काबिलियत के दम पर सफलता के कई ऐसे मुकाम हासिल किए हैं जो हर किसी लिए मिसाल हैं।

ISBN: 978-81-958181-9-8

References:-

hi.m.wikipedia.org

www.amarujala.com

www.mygkpdf.com

www.indiatimes.com

ISBN: 978-81-958181-9-8

नारी महिमा

सोमा राम डारा,
बूल, धोरीमना, बाड़मेर,
राजस्थान ।

नारी महिमा सदा अपरंपार है कि वह शिशु का आधार है चाहे कन्या हो अथवा बालक अधिक समय तक उसी के संपर्क , सान्निध्य में रहता हैं। भाषा का प्रारंभ और पोषण सबकुछ यहीं से मिलते हैं। यही वह शक्ति है जो शिशु को स्नेह व संस्कार देकर उसे महान बनाने के आदर्श रखती हैं। नारी को शक्तिरूपा कहा गया सम्मान योग्य ऊँचा स्तर दिया गया। क्या इतने में हम प्रसन्न होकर बैठ जाएं ?
आज के समय में देख लें या कि भूतकाल से भी गिन लें जिस तरह नारी को मान सम्मान मिलना चाहिए था उपलब्धि कोई विशेष संतोषप्रद नहीं लगती । नगर, महानगर, शहर, गाँव, कस्बे, ढ़ाणियां : कहीं भी देख लें व्यवहार, आचरण, स्वभाव, संबोधन और भाषा की दृष्टि से देखें तो घर को सुखद वातावरण देने वाली और ऐसे समन्वय की प्रेरणा स्रोत नारी पीड़ा और व्यथा में उद्वेलित भी दृष्टिगोचर होती हैं ।

बात तो यह है कि त्याग और समर्पण, गुण, कर्म, स्वभाव से संपन्न नारी से घर आंगन को सुख शांति समृद्धि का केंद्र बनाने के लिए पुरुष वर्ग सर्वत्र लाभान्वित होने में सफल रहे हो ऐसा कोई निश्चित तौर पर तो नहीं लगता । तथास्तु ! इसके बारे में न्यूनाधिक विवेचन आगे करेंगे ।

एक उदाहरण मैं ऐसे परिवार से संबंधित यहाँ रख रहा हूँ कि एक कन्या फिर किशोरी रूप फिर युवती और अब वैवाहिक जीवन में प्रसन्नता पूर्वक जाती हैं। उसके पैतृक घर के सदस्य उसके सुखी जीवन की कामना तो करते हैं तथापि कई जगह इससे विपरीत दशा दृष्टिगोचर हो जाया करती हैं और इसके मूल में कारण शिक्षा, संस्कार और समझ ही होती हैं। वहाँ तरह – तरह का घटनाक्रम उसे देखने को मिलता है एक बात हैं नारी हर तरह का दुःख सहन कर सकती हैं परंतु वह अपनी माँ और पिता के प्रति अशोभनीय शब्दावली और गाली गलोच सहन नहीं कर सकती।

ऐसा अवांछित वातावरण उसे कई बार तोड़ डालता है। फिर वह घर के लिए जो भोजन तैयार करेगी तो यह सब दुखी मनोदशा में होगा जो किसी के लिए भी उपयोगी, कल्याणकारी और सुखदाई नहीं हो सकता। फिर नींद में भी वह मानसिक उद्वेलना में रहेगी तो शुभ भावना के स्थान पर यही रूदन सतत रहेगा कि इनका हो सत्यानाश । परिवारों में अपशब्दों के भरमार की भाषा और नशा वृत्ति दुखद संसार रचना कर डालते हैं ।

नारी के प्रति जो विद्रूपता संसार में देखने को मिलती हैं उसके मुख्य निम्न कारण हैं : – (१) गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का अभाव, (२) बचपन या बाद के बेमेल विवाह, (३) अप्राकृतिक जीवन (४) आहार और जलीय दूषण । शिक्षा का गान सर्वत्र चल रहा था पर शिक्षित परिवारों में नारी को चौन कहाँ ? देखने में आता हैं । वह गुरूकुलीय शिक्षा थी गुणवत्ता की जीवनोपयोगी शिक्षा भौतिक ज्ञान भी संस्कार भी । विवाह में गुण, कर्म, स्वभाव का मेल नहीं देखना य एक शिष्ट स्वभाव की युवती अगर अशिष्ट और उग्र स्वभावी पुरुष के साथ गृहस्थ में बंधेगी तो परिणाम पीड़ाकारक होगा । बनावटी और अप्राकृतिक जीवन शैली , आहार, अन्न, जल, फल, सब्जियों में घुले रसायनों का दुखड़ा तो अलग ही हैं । चिकित्सालय बढ़ रहे हैं फिर भी रोग नियंत्रण में नहीं आ रहे । लंबी – लंबी पंक्तियां पुरुषों और बालकों – बालिकाओं की है तो महिलाओं की भी कम नहीं। भोजन और फल – सब्जियों का गुण और स्वाद पहले जैसा मौलिक नहीं रहा। कुल

ISBN: 978-81-958181-9-8

मिलाकर धैर्य और सहनशीलता का स्तर भी गिर गया । इस तरह यत्र – तत्र व्यवहार भाषागत और शारीरिक हिंसा को लेकर नारी व्यथित तो हैं । समग्र जागृति और जीवनशैली में परिवर्तन और सुधार से इस विद्रूपता को हल किया जा सकता हैं ।

PRAGATISHILA FOUNDATION INDIA
Improving Skillset

ISBN: 978-81-958181-9-8

Progressive Women (Pragtisheel mahilaye)

Preet kaur
Assistant professor in English
M.M.PG College Fatehabad

Women have been at the forefront of progressive movements throughout history, fighting for equality, justice, and human rights. In recent years, there has been a resurgence of progressive activism among women, with new and innovative ways of challenging the status quo.The situation of women in India has improved significantly in recent decades, but there are still many challenges that they face. In progressive India today, women have made significant gains in education, employment, and political participation. They have also made progress in fighting against violence and discrimination.

Here are some of the key challenges that women in India face today:

Gender discrimination: Women continue to face discrimination in all areas of life, including education, employment, and healthcare.

Violence against women: Violence against women is a major problem in India, and includes domestic violence, sexual assault, and honor killings.

Unequal pay: The gender pay gap is still significant in India, with women earning on average only 60% of what men earn.

Lack of representation: Women are underrepresented in leadership positions in all sectors of society.

Limited access to resources: Women in rural areas and poor households often lack access to education, healthcare, and other resources.

Here are some of the steps that progressive women are taking to make the world a more just and equitable place:

Improving Skillset

Challenging gender stereotypes: Progressive women are working to challenge the harmful stereotypes that limit women's opportunities and restrict their freedom. They are speaking out against sexism, misogyny, and violence against women. They are also working to create more inclusive and gender-sensitive spaces in all areas of life, from the workplace to the media.

Fighting for economic justice: Progressive women are working to ensure that all women have access to good-paying jobs, affordable childcare, and quality healthcare. They are also fighting for policies that will close the gender pay gap and ensure that women are represented in positions of power.

ISBN: 978-81-958181-9-8

Advancing social justice: Progressive women are working to advance social justice for all marginalized groups, including people of color, LGBTQ people, and immigrants. They are fighting against discrimination and violence, and they are working to create a more inclusive and just society.

Using technology to empower women: Progressive women are using technology to empower women and girls around the world. They are using social media to raise awareness about women's issues, and they are developing new tools and resources to help women access education, healthcare, and economic opportunities.

The work of progressive women is essential to creating a more just and equitable world. By challenging gender stereotypes, fighting for economic justice, advancing social justice, and using technology to empower women, progressive women are making a difference in the lives of women and girls around the world.

Here are some specific examples of the steps that progressive women are taking:

* In India, the organization "Shakti Shalini" is working to help women who have been victims of violence. They provide counseling, legal aid, and other support services to help women rebuild their lives.

* In the United States, the organization "Black Lives Matter" is working to end police brutality and racial injustice. They have organized protests and marches, and they have also worked to change police policies and practices.

* In the Middle East, the organization "Nazra for Women's Rights" is working to promote women's rights in the region. They have fought for women's right to vote, to hold public office, and to have equal access to education and employment.

However, there are still many areas where women in India are not treated equally to men. For example, the gender pay gap is still significant, and women are more likely to be employed in low-paying, informal jobs. They are also more likely to be victims of violence, including domestic violence, sexual assault, and honor killings.

Improving Skillset

Despite these challenges, there is a growing movement for women's empowerment in India. Women's rights groups are working to raise awareness of the issues facing women, and to advocate for change. There have also been some positive developments in recent years, such as the passage of the Sexual Harassment of Women at Workplace (Prevention, Prohibition and Redressal) Act, 2013.

Despite these challenges, there are also many positive developments for women in India today. These include:

ISBN: 978-81-958181-9-8

Increased education: The number of girls attending school has increased significantly in recent years, and more women are now completing higher education.

Growing employment: The number of women in the workforce has also increased, and women are now more likely to be employed in professional and managerial positions.

Political participation: Women are more involved in politics than ever before, and there are now more women in elected office.

Growing awareness: There is a growing awareness of the issues facing women in India, and more people are speaking out against gender discrimination and violence.

The situation of women in India is complex and constantly evolving. There are still many challenges that women face, but there are also many positive developments. It is important to continue to work towards gender equality and to ensure that all women have the opportunity to reach their full potential.

Tujhko badhta dekh zamane ki badhaye,
Jagah - jagah khadi hongi,
Har Imtehan me safal hogi tu,
Agar na ruke tere badhte kadam

Improving Skillset

ISBN: 978-81-958181-9-8

Women Empowerment: A Seed to be Sown IN Early Childhood, in Every Household

Nishma Rani
Roll No. :- 2140
B.Ed. II

For decades, women have been treated as nonexistent. Especially in countries like India, which has always been known for its male-dominated society and culture. The mentality of society is that a male child is an asset and a female child is a liability. This is the starting point for all the evils that plague women. Be it education, be it power, be it status, or be it position, women are either considered nonexistent or kept as a second option.

The status of women in our society is "weak." Society looks upon women as service providers or caretakers. No doubt a woman is a caretaker, but we don't need to label her as such on the basis of just one parameter, and that's "WOMEN". It is said that if you are a woman, you are weak, and that's all it takes to destroy her confidence. Now, talking about parameters, we don't need other parameters to put more labels on women, but we need to change our mindset and our social values that do nothing but degrade women. We need to reflect on why society is harsh to women but never to men. And the statement “Women Empowerment” can become reality only when women are given the most power and right to make decisions themselves.

"The woman who follows the crowd will usually go no further than the crowd. The woman who walks alone is likely to find herself in places no one has ever been before." - Albert Einstein

Improving Skillset

But those times are gone now. Women today, more than ever before, have gone against male-dominated societies and cultures. Today, women are showing that they too can enjoy all the freedoms and rights. They know how to be self-independent in all aspects of their lives, which women like Hima Das, Avani Chaturvedi, Indra Nooyi, Gita Gopinath, and many more have successfully proved. Today, they can hold higher positions just like men, and this has changed the face of India. They make India proud with their sterling record of achievements.

ISBN: 978-81-958181-9-8

Women are becoming more independent and successful than they were a few decades ago. They are going further and further, breaking all the stereotypes and barriers.

Education plays the role of one of the most important means of empowering women with knowledge, skills, and self-confidence. Many girls out there can't build their careers and futures because their families and society do not support them and consider it a waste of time and money. But we must address the problems and issues faced by women and stop ignoring their voices. But it also doesn't mean that we should give respect to only women. Men and women both deserve respect and appreciation for putting up a fight against society and its unrealistic rules. It's high time to stop defining gender roles and give freedom to everyone.

All it takes is to understand the depth of the concept of empowering women since it is one of the most critical and essential things for every nation's development. We must take steps to eliminate injustice, gender bias, and inequalities from every aspect of life. Only then can we contribute towards empowering women, because it's an effort for all. Respecting their dignity, granting them freedom, and giving them equal opportunities costs us nothing.

Lastly, I highly agree that women today are taking rapid strides in each and every profession and holding higher positions, but the question arises: Are our women really empowered today? The answer is "no," because still today many girls are kept away from education, married off at a young age, don't share equal rights and opportunities, and have no power or say in household decisions. The solution is only one: unless women themselves change their mindset, the social evils against them can't be erased. Everyone needs to accomplish the goal of women's empowerment by raising awareness around the causes of poor health and wellbeing that are related to gender. Let's start with each household through water, sanitation, and hygiene; health and nutrition; livelihood training; and education programmes to increase their opportunities and ability to reach their full potential. Please educate yourself, and your daughters, and sisters. Don't snatch their freedom away, and don't suppress their voices for the sake of society.

ISBN: 978-81-958181-9-8

Women Empowerment :The winds of Change

Sapna Jain
B.Tech, M.Tech, B.Ed, CTET and HTET qualified

To begin with we should understand the meaning of women empowerment. It includes all the efforts to uplift the status of women through awareness and education. We can only call our women empowered when they have the freedom and choice to make their own decisions. Since the beginning of civilization we have got so many evidence of women being considered inferior to men. They didn't have any rights. They always suffered in the hands of their male counterparts. They were treated as almost non-existent. Such behaviour of society towards women has eventually led them to retrospect their status in society and has led women all over the world to be rebellious and to reach the status what they have today. Education has played one of the most important means of empowering women. With the help of education and awareness women have realised their worth. They have made their own place in society. They have proved that they cannot be underestimated just because of their gender. The governments of different nations are also working tirelessly to provide women status of equality. These efforts are visible in numbers.The number of working women is increasing at a fast pace. Due to this women have gained financial independence and eventually women has started gaining control over their own lives. While doing so women are able to maintain a balance between their commitment towards work and family. They are playing multiple roles of a mother, daughter, sister,wife and working professional. They are giving tough competition to men in almost all spheres. We have enough proud examples in almost every field of life. Flight lieutenant Avni Chaturvedi, a young Indian Air force officer, became the first Indian woman fighter to fly MIG- 21 bison solo. The MIG-21 bison is known for its highest take off and landing speed in the world at 340 km per hour. Avni has inspired many young women by making her mark in a field dominated by men. Women empowerment is not limited to urban areas only. It is reaching towards all the women living in remote villages and towns. Internet has played a vital role in this process. It has opened all the boundaries of knowledge and awareness. Despite of all the changes we are witnessing today, violence and safety is a major threat to women. Cases of domestic violence are also increasing day by day. Even today women are afraid to speak up. We need to support, encourage and educate women so that they can speak up for themselves and never be a victim of injustice.

ISBN: 978-81-958181-9-8

Being A Women

Tanvi Monga
B.Ed. IInd

INTRODUCTION:

Women is a very strong word that combines all the values. A woman is a great mother, a great daughter, a great wife, a great social worker, etc. There is a lack of words to describe a woman, but one gem that women have is patience. Patience is a big tool to solve any problem or fight. Women with a lot of patience can win the world, and there are many examples we see in our daily lives, such as starting from home. Everyone just points out women for everything, but she has a lot of patience. Nowadays, there are many incidents that happen in day-to-day life related to girls and women, such as sexual violence, domestic violence, gender bias, etc. So, being a woman is not at all easy. We have to suffer a lot of things and put up with various social evils.

WOMEN AS A MOTHER:

As a mother she has to understand the needs of her children, to take care of them and provide them everything that she couldn't have during her time. Her experience guides her in taking proper care of children. Sometimes she has to sacrifice many things just because of their children. A mother is always a protector of their child from childhood to their old age. As we say children grow very fast but they always remain as little kids for mothers. She plays a supportive role in their child's life. A child knows, whatever they will ask from their mother she will never say no to it.

Improving Skillset

WOMEN AS A DAUGHTER:

A daughter is always the biggest support for her father and mother, as well as for the whole family. Daughters are like precious princesses, but not everyone takes care of their daughter like a princess; in fact, some treat them as taboo and beat them to death. This is the true fact that makes a daughter afraid of raising her voice against wrong. In some areas, we also see many cases of female feticide, which led

ISBN: 978-81-958181-9-8

to the deaths of two women. One baby dies inside the womb, and one mother dies of pain.

WOMEN AS A SISTER

A woman plays a very crucial and important role as a sister, and a sister is often said to be equal to a mother. After all, the heart of a woman is softer than one could think. A sister understands all the pains of their sibling, whether he is a brother or she is a sister. She is always caring and loving towards their siblings. A brother is also very protective of his sister and protects her like she does and this is the sweetest role a woman ever plays.

WOMEN AS A WIFE:

This is the most crucial period of every woman's life because she has to move to another home for the rest of her life. But she manages that very well without questioning anyone. This is the toughest time because a woman has to leave her parents. Adjustment in a new home is very difficult, but she manages to adjust and accept everyone. During marriage, she not only ties the knot with her husband but with his whole family. She takes care of everyone and their needs. But the bitter truth of marriage is dowry. The Dowry System is one of the biggest issues that every girl faces during their marriage. People don't understand when they are giving their daughter what else one can need, but they demand dowry in the form of cash, jewelry, furniture, cars, etc. When parents can't meet the expectations of their daughter's in-laws, this leads to domestic violence and, hence, the murder of that innocent heart.

Improving Skillset

WOMEN AS A SOCIAL WORKER

Social work can only be done when we have sympathy for others. The values of sympathy, love, and integrity are God-given to women. A woman as a social worker performs her task very well in all areas. They understand each and every aspect of life and save the values of culture and rituals of society when it's the society that looks down on them. Society always discourages women while all she does is help others with a lot of courage and honesty.

ISBN: 978-81-958181-9-8

MULTIPLE ROLES:

As we discussed earlier, women play many roles in her life. Nowadays a woman engages herself in every profession and has been showing her far she can go in this gender race. There is not a task which a woman cannot perform. She is always ready to accept new challenges to prove that she's no less than any man.

Even after playing so many roles as a women, they are totally committed to their professions. They can manage their personal and professional lives peacefully. This leads to an increase in their confidence and makes them independent. Today, women are totally capable of making decisions in their own lives, and they can lead the world. As we see near our homes, there are many women who are working. Our housekeeper is a prime example. She comes every morning, cleans our homes, and then manages her home and children. Women are able to create their own identities.

BUT THE QUESTION IS ARE WE APPRECIATING WOMEN FOR PLAYING THESE CRUCIAL ROLES?

Well there is a saying by Brigham Young that, “You educate a man; you educate a man. You educate a woman; you educate a generation.” Giving education to women is the most important task because if a woman is educated she can educate everyone around her and she can educate the whole world. These things should not be neglected and they should be empowered and promoted to get higher education. System is changing and women are the leaders everywhere. They are actively participating in improving their career and status in real life. Actually, nowadays women are more aware of themselves. They take every step by watching their pros and cons. Likewise they raise their children with self dignity and self respect. We must appreciate women and it only starts from our home by respecting our mother, sister, wife, daughter and like they take care of our needs we should also take care of them.

Some of the great Indian women leaders, social reformers, social workers, administrators, and literary personalities who have changed the status of women status are Indira Gandhi, Vijay Lakshmi Pandit, Annie Besant, Mahadevi Verma,

ISBN: 978-81-958181-9-8

Sachet Kripalani, P.T. Usha, Amrita Pritam, Padmaja Naidu, Kalpana Chawla, Raj Kumari Amrit Kaur, Mother Teresa, Subhadra Kumari Chauhan, etc.

So, like we pray for boys to be born, in the same way we should pray for girls to be born in each and every home.

PRAGATISHILA FOUNDATION INDIA
Improving Skillset

ISBN: 978-81-958181-9-8

ਔਰਤ ਤੇ ਕਾਨੂੰਨ

Dr. Anita

Associate Professor

Govt National College

Sirsa, Haryana

ਔਰਤ ਦੀ ਹੋਂਦ ਤੋਂ ਬਿਨਾ ਮਨੁੱਖ ਜਾਤੀ ਦੀ ਹੋਂਦ ਹੀ ਸੰਭਵ ਨਹੀਂ। ਔਰਤ ਅਤੇ ਮਰਦ ਦਾ ਸੰਯੋਗ ਹੀ ਸਮੁੱਚ ਸਭਿਆਚਾਰਕ ਸਮਾਜ ਨੂੰ ਸਾਜਣ ਦਾ ਬੁਨਿਆਦੀ ਆਧਾਰ ਹੈ। ਸਿਰਜਣ ਦੀ ਤਾਕਤ ਇਸਤਰੀ ਕੋਲ ਹੀ ਹੈ ਮਰਦ ਕੋਲ ਨਹੀਂ, ਜਿਸ ਕਰਕੇ ਉਹ ਮਰਦ ਤੋਂ ਉਚੇਰੀ ਹੋ ਨਿਬੜਦੀ ਹੈ। ਪਰ ਸ਼੍ਰੇਣੀ ਸਮਾਜ ਵਿਚ ਐਰਤ ਦੋਹਰੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਬਿਤਾਉਂਦੀ ਰਹੀ ਹੈ। ਸਾਰੇ ਦੁਖ, ਚੀਸਾਂ, ਤ੍ਰਾਟਾਂ ਅਤੇ ਤੜਪ ਉਸਦੇ ਹੀ ਹਿੱਸੇ ਆਉਂਦੇ ਰਹੇ ਹਨ। ਕਿਉਂਕਿ ਭਾਰਤੀ ਸਮਾਜ ਮਰਦ ਪ੍ਰਧਾਨ ਸਮਾਜ ਹੈ। ਇਸ ਲਈ ਇਥੇ ਮਰਦ ਦੀ ਸਰਦਾਰੀ ਹੈ। ਮਰਦ ਤੋਂ ਬਿਨਾਂ ਔਰਤ ਦਾ ਕੋਈ ਅਸਤਿਤਵ ਨਹੀਂ। ਉਹ ਸਾਰੀ ਉਮਰ ਮਰਦ ਦੀ ਕੈਦ ਹੀ ਕੱਟਦੀ ਹੈ। ਉਹ ਵਿਆਹ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਆਪਣੇ ਪਿਤਾ ਤੇ ਭਰਾ ਦੀ ਕੈਦ, ਵਿਆਹ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਪਤੀ ਦੀ ਕੈਦ ਵਿਚ ਤੇ ਉਸ ਤੋ ਬਾਅਦ ਪੁੱਤਰ ਦੀ ਕੈਦ ਵਿਚ ਰਹਿੰਦੀ ਹੈ। ਸਦੀਆਂ ਤੋਂ ਇਸ ਕੈਦ ਵਿਚ ਰਹਿੰਦਿਆਂ, ਉਹ ਇਸ ਕੈਦ ਦੀ ਆਦੀ ਹੋ ਗਈ ਹੈ। ਉਸਨੂੰ ਸਮਾਜ ਵਿਚ ਰਹਿਣ ਲਈ ਮਰਦ ਦੇ ਸਹਾਰੇ ਦੀ ਲੋੜ ਰਹਿੰਦੀ ਹੈ। ਅੰਮ੍ਰਿਤਾ ਪ੍ਰੀਤਮ ਨਾਰੀ ਦੀ ਇਸ ਸਥਿਤੀ ਬਾਰੇ ਲਿਖਦੀ ਹੈ:-

> "ਨਾਰੀ ਆਪਣੀ ਸਮੁੱਚੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਵਿਚ ਗੀਤਾਂ ਦੇ ਤਿੰਨ ਨਾਟ ਖੇਡਦੀ ਦਿਖਾਈ ਦਿੰਦੀ ਹੈ। ਪਹਿਲੇ ਨਾਟ ਵਿਚ ਉਹਦਾ ਪਿਤਾ, ਦੂਸਰੇ ਨਾਟ ਵਿਚ ਪਤੀ, ਤੀਸਰੇ ਨਾਟ ਵਿਚ ਉਸਦਾ ਪੁੱਤਰ ਤਿੰਨ ਮੁਖ ਨਾਇਕ (ਜਾਂ ਖਲਨਾਇਕ) ਕੰਮ ਕਰਦੇ ਦਿਖਾਈ ਦਿੰਦੇ ਹਨ।"

ਉਹ ਇਕੱਲਿਆਂ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਬਿਤਾਉਣ ਬਾਰੇ ਤਾਂ ਸੋਚ ਵੀ ਨਹੀਂ ਸਕਦੀ ਉਸਨੂੰ ਇਉਂ ਲਗਦਾ ਹੈ ਕਿ ਉਸਦਾ ਆਪਣਾ ਕੋਈ ਵਜੂਦ ਨਹੀਂ। ਮਰਦ ਰੂਪੀ ਰਖਿਅਕ ਦੀ ਉਸਨੂੰ ਸਦਾ ਹੀ ਲੋੜ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਕਿਉਂਕਿ ਮਰਦ ਤੋਂ ਬਿਨਾ ਸਮਾਜ ਉਸਨੂੰ ਜਿਉਣ ਨਹੀਂ ਦਿੰਦਾ। ਔਰਤ ਨੂੰ ਇਸ ਕੈਦ ਵਿਚੋਂ ਕੱਢਣ ਲਈ ਕੁਝ ਕਾਨੂੰਨ ਬਣਾਏ ਗਏ, ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਅਧਿਐਨ ਵਿਸ਼ਲੇਸ਼ਣ ਇਸ ਪ੍ਰਕਾਰ ਹੈ:-

ISBN: 978-81-958181-9-8

ਜਗੀਰਦਾਰੀ ਯੁੱਗ ਵਿਚ ਔਰਤ ਦੀ ਸਥਿਤੀ ਨਿਘਰੀ ਹੋਈ ਸੀ। ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਔਰਤਾਂ ਦੇ ਪਤੀ ਮਰ ਜਾਂਦੇ ਹਨ, ਉਨ੍ਹਾਂ ਨਾਂ ਪੁਨਰ ਵਿਆਹ ਨਹੀਂ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਸੀ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਪਤੀ ਦੀ ਮੌਤ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਪਤੀ ਨਾਲ ਸਤੀ ਕਰ ਦਿਤਾ ਜਾਂਦਾ ਸੀ। ਭਾਵ ਜਿਉਂਦੇ ਜੀ ਸਾੜ ਕੇ ਮਾਰ ਦਿਤਾ ਜਾਂਦਾ ਸੀ। ਸਥਿਤੀ ਦੀ ਵਿਡੰਬਨਾ ਇਹ ਸੀ ਕਿ ਅਜਿਹੀ ਔਰਤਾਂ ਦੀ ਪੂਜਾ ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ ਸੀ, ਜੋ ਆਪਣੇ ਮਰੇ ਹੋਏ ਪਤੀ ਨਾਲ ਸਤੀ ਹੋ ਜਾਂਦੀਆਂ ਹਨ। ਕਈ ਵਿਦਵਾਨ ਪ੍ਰਚਾਰਕਾਂ ਨੇ ਸਤੀ ਪ੍ਰਥਾ ਦਾ ਵਿਰੋਧ ਕੀਤਾ। ਇਸ ਬਾਰੇ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਜੀ ਲਿਖਦੇ ਹਨ :-

ਸਤੀਆਂ ਤੇਹਿ ਨਾ ਆਖੀਅਨਿ, ਜੋ ਮੜੀਆਂ ਲਗ ਜਲੰਨਿ॥

ਨਾਨਕ ਸੜੀਆਂ ਜਾਣੀਅਇ, ਜੋ ਬਿਰਹੁੰ ਚੋਟ ਮਰੰਨਿ॥

(ਵਾਰ ਸੂਚੀ, ਪੰਨਾ-30, ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ-78)

ਗੁਰੂਆਂ ਦੇ ਵਿਚਾਰ ਤੇ ਆਰੀਆ ਸਮਾਜ ਅਤੇ ਬ੍ਰਹਮ ਸਮਾਜ ਨੇ ਸਤੀ ਪ੍ਰਥਾ ਨੂੰ ਤਾਂ ਸਮਾਪਤ ਕਰਨ ਲਈ ਸੰਘਰਸ਼ ਕੀਤਾ, ਪਰ ਪਤੀ ਦੀ ਮੌਤ ਹੋ ਜਾਣ ਉਪਰੰਤ ਪਤੀ ਤੋਂ ਬਿਨਾ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਬਿਤਾਉਣ ਵਾਲੀਆਂ ਔਰਤਾਂ ਲਈ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਨਰਕ ਵਰਗੀ ਸੀ। ਪਤੀ ਦੀ ਮੌਤ ਹੋ ਜਾਣ ਉਪਰੰਤ ਸਮਾਜ ਵਿਚ ਔਰਤ ਦਾ ਆਦਰ-ਸਤਿਕਾਰ ਖੁਸ ਜਾਂਦਾ ਸੀ। ਉਸ ਨੂੰ ਅਭਾਗਣ ਸਮਝਦਿਆਂ ਹੋਇਆਂ ਸ਼ੁਭ ਕੰਮਾਂ ਤੋਂ ਦੂਰ ਹੀ ਰੱਖਿਆ ਜਾਂਦਾ ਸੀ। ਘਰ ਵਿਚ ਉਸ ਦੇ ਨਾਲ ਲਗਭਗ ਨੌਕਰਾਂ ਵਾਲਾ ਸਲੂਕ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਸੀ। ਲੋਕ ਉਸ ਦੀ ਪਰਛਾਈਂ ਤੋਂਵੀ ਚੁਹ ਭੱਜਦੇਸਨ। ਉਸ ਨੂੰਚਹਿਣ ਲਈ ਘਰ ਦੀ ਸਭ ਤੋਂਮਾੜੀ ਥਾਂ , ਪਹਿਨਣ ਲਈ ਸਭ ਤੋਂ ਮਾੜੇ ਕਪੜੇ ਅਤੇ ਖਾਣ ਲਈ ਮਾੜੇ ਤੋਂ ਮਾੜਾ ਖਾਣਾ ਦਿਤਾ ਜਾਂਦਾ ਸੀ। ਉਸ ਦੇ ਵਾਲ ਕੱਟ ਕੇ ਰੋਡੀ ਕਰ ਦਿਤਾ ਜਾਂਦਾ ਸੀ, ਤਾ ਕਿ ਉਸਦੀ ਖੂਬਸੂਰਤੀ ਖ਼ਤਮ ਹੋ ਜਾਵੇ। ਔਰਤ ਨੂੰ ਦਿੱਤੀ ਜਾਂਦੀ ਕੁਰੂਪਤਾ ਪਿਛੇ ਸਮਾਜ ਦੀ ਮਾਨਸਿਕਤਾ ਇਹ ਸੀ ਕਿ ਉਹ ਦੂਜੇ ਮਰਦ ਨੂੰ ਆਕਰਸ਼ਿਤ ਨਾ ਕਰ ਸਕੇ। ਉਸ ਤੋਂ ਇਹ ਆਸ ਰੱਖੀ ਜਾਂਦੀ ਸੀ ਕਿ ਉਹ ਆਪਣੀਆਂ ਸਾਰੀਆਂ ਇੱਛਾਵਾਂ ਨੂੰ ਮਾਰ ਕੇ ਧਰਮ ਕਰਮ ਵੱਲ ਧਿਆਨ ਦੇਵੇ, ਪਰ ਸਭਿਆਚਾਰਕ ਕਦਰ ਪ੍ਰਣਾਲੀ ਅਨੁਸਾਰ ਢਲੀ ਔਰਤ ਇਸ ਸਭ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਮੰਦੇ ਭਾਗਾਂ ਦਾ ਫ਼ਲ ਸਮਝਕੇ ਸੰਤੋਖ ਕਰ ਲੈਂਦੀ ਸੀ।

ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਸਤੀ ਪ੍ਰਥਾ 'ਤੇ ਰੋਕ ਲਗਣ ਉਪਰੰਤ ਵਿਧਵਾ ਔਰਤਾਂ ਦੇ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਜਿਊਣ ਦਾ ਮਾਮਲਾ ਸਾਹਮਣੇ ਆ ਖੜ੍ਹਾ ਹੋਇਆ। ਉਸ ਨੂੰ ਅਜਿਹੀ ਨਰਕ ਵਰਗੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਤੋਂ ਬਚਾਉਣ ਦਾ ਇਕੋ ਹੀ ਰਾਹ ਸੀ, ਉਸ ਦਾ ਪੁਨਰ-ਵਿਆਹ, ਪਰ ਭਾਰਤੀ ਸਮਾਜ ਨੇ ਇਸ ਨੂੰ ਪਰਵਾਨਗੀ ਨਾ ਦਿਤੀ ਅਤੇ 'ਪੁਨਰ-ਵਿਆਹ-ਨਿਖੇਧ' ਕਰਾਰ ਦਿਤਾ ਗਿਆ। ਸਮਾਜ ਦੀ ਹਰ ਇਕ ਸਮਾਜਕ ਸੱਭਿਆਚਾਰਕ ਸਮੱਸਿਆ

ISBN: 978-81-958181-9-8

ਆਪਣੇ ਅੰਤਲੇ ਰੂਪ ਵਿਚ ਸਮਾਜਕ ਆਰਥਕ ਸੰਬੰਧਾਂ ਦਾ ਉਸਾਰ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਕਿਸੇ ਵੀ ਨੀਂਹ ਵਿਚ ਬੁਨਿਆਦੀ ਤਬਦੀਲੀ ਤੋਂ ਬਿਨਾ ਉਸਾਰ ਨਾਲ ਸੰਬੰਧਿਤ ਕਿਸੇ ਵੀ ਸਮੱਸਿਆ ਦਾ ਸਮਾਧਾਨ ਸੰਭਵ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ। ਵਿਧਵਾ-ਵਿਆਹ ਦੀ ਸਮੱਸਿਆ ਦਾ ਵਿਵੇਕ ਵੀ ਜਾਗੀਰਦਾਰੀ ਸਮਾਜ ਵਿਚ ਔਰਤ ਅਤੇ ਮਰਦ ਵਿਚਲੇ ਆਰਥਕ ਅਸਾਂਵੇਪਨ ਉਪਰ ਉਸਰਿਆ ਹੋਇਆ ਸੀ ਕਿਉਂਕਿ ਜਾਗੀਰਦਾਰੀ ਸਮਾਜ ਵਿਚ ਆਰਥਕ ਸਾਧਨਾਂ ਦਾ ਮਾਲਕ ਮਰਦ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਮਰਦ ਆਪਣੀ ਇਸ ਮਲਕੀਅਤ ਕਰਕੇ ਔਰਤ ਨੂੰ ਵੀ ਮਲਕੀਅਤ ਦਾ ਇਕ ਹਿੱਸਾ ਹੀ ਸਮਝਦਾ ਹੈ। ਉਸ ਨੂੰ ਆਪਣੀ ਇਛਾ ਅਨੁਸਾਰ ਇਕ ਨਿਰਜੀਵ ਵਸਤੂ ਦੀ ਨਿਆਈਂ ਵਰਤਦਾ ਹੈ ਸਭਿਆਚਾਰਕ ਕਦਰ ਪ੍ਰਣਾਲੀ ਵੀ ਆਰਥਕ ਆਧਾਰਾਂ ਉਪਰ ਮਾਲਕੀ ਦੇ ਨਾਲ-ਨਾਲ ਔਰਤ ਉਪਰ ਵੀ ਉਸ ਦੇ ਪਤੀ ਦੀ ਮਾਲਕੀ ਨੂੰ ਪਰਵਾਨ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਪਤੀ ਦੇ ਮਰਨ ਉਪਰੰਤ ਵੀ ਔਰਤ ਉਸ ਦੀ ਜਿਊਂਦੀ ਜਾਗਦੀ ਮਲਕੀਅਤ ਅਖਵਾਉਂਦੀ ਰਹੀ, ਪਰ ਭਾਰਤੀ ਗ੍ਰੰਥਾਂ, ਸਾਹਿਤ ਅਤੇ ਲੋਕ ਵਿਹਾਰ ਵਿਚ ਵਿਚਾਰਾਂ ਨੂੰ ਮਿਲੀ ਪਰਵਾਨਗੀ ਨੇ ਔਰਤ ਨੂੰ ਅਜਿਹੇ ਮੁੱਲ ਪ੍ਰਬੰਧ ਵਿਚ ਦਿਤਾ ਕਿ ਉਹ ਆਪ ਇਸ ਮੁੱਲ ਪ੍ਰਬੰਧ ਉਪਰ ਖਰੀ ਉਤਰਨ ਲਈ ਕੁਰਬਾਨੀ ਦੇਣ ਲਈ ਵੀ ਤਿਆਰ ਰਹਿੰਦੀ ਸੀ। ਪੱਛਮੀ ਸਮਾਜ ਦੇ ਉਦਾਰਵਾਦੀ ਸਭਿਆਚਾਰਕ ਮੁੱਲ-ਵਿਧਾਨ ਤੋਂ ਪ੍ਰੇਰਿਤ ਵਿਦਵਾਨਾਂ ਨੇ ਵਿਧਵਾ-ਵਿਆਹ ਦੇ ਪ੍ਰਸੰਗ ਵਿਚ ਆਵਾਜ ਉਠਾਈ ਤੇ ਸਮਾਜ ਦੀ ਇਹ ਰੀਤ ਬਦਲ ਗਈ। ਇਸ ਲਈ ਜੋ ਕਾਨੂੰਨ ਬਣਿਆ ਉਸਦਾ ਨਾਂ ਹੈ Hindu Widows Re-Marriagee Act, 25 July 1856, ਇਸ ਕਾਨੂੰਨ ਦੇ ਬਣਨ ਉਪਰੰਤ ਵਿਧਵਾ ਇਸਤਰੀ ਦਾ ਦੂਜਾ ਵਿਆਹ ਕੀਤਾ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ।

ਭਾਰਤੀ ਸਮਾਜ ਵਿਚ ਵਿਆਹ ਸੰਬੰਧਾਂ ਵਿਚਲੀਆਂ ਹੋਰ ਸਮੱਸਿਆਵਾਂ ਦੇ ਨਾਲ- ਨਾਲ ਦਾਜ ਦੀ ਸਮੱਸਿਆ ਪਹਾੜ ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਹਰ ਇਕ ਦੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦੇ ਸਾਹਮਣੇ ਆ ਪੜੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਸਮਾਜ ਵਿਚ ਅਨਪੜ ਲੋਕਾਂ ਦੀ ਗੱਲ ਤਾਂ ਦੂਰ ਰਹੀ, ਪੜ੍ਹੀ-ਲਿਖੀ ਪੀੜ੍ਹੀ ਵੀ ਇਸਦੀ ਪਿਛਲੱਗ ਬਣੀ ਹੋਈ ਹੈ।

ਭਾਰਤੀ ਸਮਾਜ ਵਿਚ ਧੀ ਦੇ ਵਿਆਹ ਸਮੇਂ ਉਸ ਨੂੰ ਦਾਜ ਦੇਣ ਦੀ ਪਰੰਪਰਾ ਦਾ ਕਾਰਨ ਇਹ ਸੀ ਕਿ ਭਾਰਤੀ ਸਮਾਜ ਵਿਚ ਘਰ ਦੀ ਪੂੰਜੀ ਦਾ ਹੱਕ ਮਰਦ ਕੋਲ ਜਾਂਦਾ ਸੀ, ਜਿਸ ਕਰ ਕੇ ਪਿਤਾ ਦੀ ਪੂੰਜੀ ਵਿਚੋਂ ਧੀ ਨੂੰ ਕੁਝ ਨਹੀਂ ਮਿਲਦਾ ਸੀ, ਪਰ ਮਾਨਵੀ ਮੋਹ ਕਰਕੇ ਪਿਤਾ ਧੀ ਦੇ ਵਿਆਹ ਸਮੇਂ ਆਪਣੀ ਪੂੰਜੀ ਵਿਚੋਂ ਹਿੱਸੇ ਵਜੋਂ ਕੁਝ ਪੂੰਜੀ ਦਿੰਦਾ ਸੀ, ਪਰ ਸਮੇਂ ਦੇ ਬੀਤਣ ਨਾਲ ਅਤੇ ਸਰਮਾਇਦਾਰੀ ਦੇ ਪ੍ਰਭਾਵ ਅਧੀਨ ਜੋ ਦਾਜ ਧੀ ਨੂੰ ਮਾਨਵੀ ਮੋਹ ਅਧੀਨ ਦਿਤਾ ਜਾਂਦਾ ਸੀ, ਉਸ ਨੂੰਧੀ ਦੇ ਸਹੁਰੇ ਲੋੜ ਸਮਝਣ ਲਗ ਪਏ। ਜਿਸ ਕਰਕੇ ਹਰ ਲੜਕੇ ਦੇ ਮਾਂ-ਪਿਉ ਲੜਕੀ ਦੇ ਮਾਂ-ਪਿਉ ਤੋਂ ਵਿਆਹ ਸਮੇਂ ਵੱਧ ਤੋਂ ਵੱਧ ਦਾਜ ਦੀ ਮੰਗ ਕਰਨ ਲਗ ਪਏ। ਲੜਕੇ ਦੇ ਮਾਂ-ਪਿਉ ਦੇ ਵੱਧਦੇ ਲਾਲਚ ਕਰਕੇ ਲੜਕੀ ਦੇ ਮਾਂ-ਪਿਉ

ISBN: 978-81-958181-9-8

ਲਈ ਦਾਜ ਇਕ ਸਮੱਸਿਆ ਬਣ ਗਿਆ। ਇਸ ਸਮੱਸਿਆ ਕਾਰਨ ਸਮਾਜ ਵਿਚ ਲੜਕੀਆਂ ਦੀ ਇੱਜ਼ਤ ਪਹਿਲੇ ਤੋਂ ਵੀ ਘਟ ਗਈ।

ਪੁਰਾਣੇ ਸਮੇਂ ਵਿਚ ਲੜਕੀ ਨੂੰ ਜੰਮਦਿਆਂ ਹੀ ਮਾਰ ਦਿਤਾ ਜਾਂਦਾ ਸੀ ਕਿਉਂਕਿ ਧੀ ਕਰਕੇ ਪਿਉ ਨੂੰ ਦੂਜਿਆਂ ਸਾਹਮਣੇ ਝੁਕਣਾ ਪੈਂਦਾ ਹੈ। ਭਾਰਤੀ ਸਮਾਜ ਵਿਚ ਲੜਕੀ ਬੋਝ ਸਮਝੀ ਜਾਂਦੀ ਰਹੀ ਹੈ। ਇਸ ਦਾ ਬਹੁਤ ਵੱਡਾ ਕਾਰਨ ਦਾਜ ਦੀ ਸਮੱਸਿਆ ਹੈ, ਜਿਸ ਕਰਕੇ ਹਰ ਇਕ ਮਨੁੱਖ ਲਈ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਡੀ ਸਮੱਸਿਆ ਧੀ ਦਾ ਵਿਆਹ ਹੈ ਅਤੇ ਇਹ ਸਮੱਸਿਆ ਮੱਧ ਵਰਗ ਵਿਚ ਹੋਰ ਵੀ ਵਿਕਰਾਲ ਰੂਪ ਧਾਰ ਲੈਂਦੀ ਹੈ ਕਿਉਂਕਿ ਇਸ ਵਰਗ ਵਿਚ ਦਿਖਾਵਾ ਬਹੁਤ ਵੱਧ ਹੈ। ਧੀ ਦਾ ਵਿਆਹ ਮਾਂ-ਪਿਉ ਦੀ ਜਿੰਮੇਵਾਰੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਜਿਸ ਕਰਕੇ ਉਹ ਆਪਣੀ ਧੀ ਦੇ ਵਿਆਹ ਲਈ ਆਪਣੇ ਤੋਂ ਚੰਗਾ ਘਰ ਅਤੇ ਚੰਗਾ ਵਰ ਲੱਭਣ ਦਾ ਯਤਨ ਕਰਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਉਹ ਜਿੰਨਾਂ ਉੱਚਾ ਘਰ ਲਭਦੇ ਹਨ, ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਉਨਾਂ ਵੱਧ ਦਾਜ ਦੇਣਾ ਪੈਂਦਾ ਹੈ। ਲੜਕੀ ਭਾਵੇਂ ਕਿੰਨਾਂ ਪੜ੍ਹ-ਲਿਖ ਜਾਵੇ, ਉਸਦੇ ਵਿਆਹ ਤੇ ਦਾਜ ਤਾਂ ਦੇਣਾ ਹੀ ਪੈਂਦਾ ਹੈ।

ਇਸ ਸਮੱਸਿਆ ਨੂੰ ਦੂਰ ਕਰਨ ਲਈ ਦਾਜ ਦੇ ਵਿਰੁੱਧ ਕਾਨੂੰ ਬਣਾਇਆ ਗਿਆ ਹੈ। ਇਹ ਕਾਨੂੰਨ The Dowry Prohibition Act 1961 ਦੇ ਤਹਿਤ ਬਣਿਆ। ਹਰਿਆਣਾ ਨੇ ਆਪਣੇ ਕੁਝ ਨਿਯਮ ਬਣਾਏ, ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ Haryana Dowry Prohibition Rules 2003 ਦੇ ਅਧੀਨ ਰਖਿਆ ਗਿਆ। ਇਸ ਕਾਨੂੰਨ ਅਨੁਸਾਰ ਦਾਜ ਲੈਣਾ ਅਤੇ ਦੇਣਾ ਅਪਰਾਧ ਹਨ।

ਘਰੇਲੂ ਹਿੰਸਾ ਵੀ ਭਾਰਤੀ ਸਮਾਜ ਖਾਸ ਕਰਕੇ ਭਾਰਤ ਦੇ ਪਿੰਡਾਂ ਵਿਚ ਘਰੇਲੂ ਹਿੰਸਾ ਕਾਫ਼ੀ ਵੱਧ ਮਾਤਰਾ ਵਿਚ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਅਧੀਨ ਜੇਕਰ ਸੱਸ-ਸਹੁਰਾ, ਪਤੀ, ਦਿਉਰ, ਨਨਾਣ, ਵਿਆਹੁਤਾ ਇਸਤਰੀ ਨਾਲ ਲੜਾਈ-ਝਗੜਾ, ਮਾਰ-ਕੁੱਟ ਕਰਦੇ ਹਨ ਤਾਂ ਇਸਦੇ ਵਿਰੁੱਧ ਭਾਰਤ ਵਿਚ The Protection of Women from Domestic Voilence Act, 2005 ਕਾਨੂੰਨ ਹੈ, ਜਿਸਦੇ ਅਧੀਨ ਅਜਿਹੇ ਲੋਕਾਂ ਵਿਰੁੱਧ ਕਾਰਵਾਈ ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ।

ਭਾਰਤੀ ਸਮਾਜਿਕ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤੀ ਮੁੱਲ ਵਿਧਾਨ ਅਨੁਸਾਰ ਲੜਕੀ ਨੂੰ ਵਿਆਉਣ ਦਾ ਅਧਿਕਾਰ ਕੇਵਲ ਮਾਂ ਪਿਉ ਕੋਲ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਮਾਂ ਪਿਉ ਆਪਣੀ ਇੱਛਾ ਅਨੁਸਾਰ ਹੀ ਆਪਣੀ ਧੀ ਦਾ ਵਿਆਹ ਕਰਦੇ ਹਨ। ਉਸ ਸਮੇਂ ਲੜਕੀ ਨੂੰ ਇਹ ਹੱਕ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ ਸੀ ਕਿ ਉਹ ਆਪਣੀ ਇੱਛਾ ਅਨੁਸਾਰ ਵਿਆਹ ਕਰ ਸਕੇ। ਵਿਆਹ ਕਰਵਾਉਣਾ ਤਾਂ ਦੂਰ ਰਿਹਾ ਵਿਆਹ ਦੇ ਸਬੰਧ ਵਿਚ ਉਸਦੀ ਇੱਛਾ ਵੀ ਨਹੀਂ ਪੁੱਛੀ ਜਾਂਦੀ ਸੀ, ਪਰ ਪੱਛਮੀ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤੀ ਦੇ ਪ੍ਰਭਾਵ ਅਧੀਨ ਭਾਰਤ ਦੇ ਵੱਡੇ-ਵੱਡੇ ਸ਼ਹਿਰਾਂ ਵਿਚ ਮੱਧ ਵਰਗੀ ਵਿਚ ਚੇਤਨਾ ਬੜੀ ਤੇਜੀ ਨਾਲ ਪੱਛਮੀ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤੀ ਦੇ ਮੁੱਲਾਂ ਨੂੰ ਆਪਣਾਉਨ ਲਗ ਪਈ ਸੀ।

ISBN: 978-81-958181-9-8

ਉਸ ਸਮੇਂ ਮੱਧ ਵਰਗ ਦੀ ਪੜ੍ਹੀ-ਲਿਖੀ ਪੀੜ੍ਹੀ ਦੇ ਮਨ ਵਿਚ ਮਨਚਾਹੇ ਵਿਆਹ ਦੇ ਹੱਕ ਵਿਚ ਵਿਚਾਰ ਜੋਰ ਫੜ ਰਹੇ ਸਨ। ਇਸਦਾ ਕਾਰਨ ਇਹ ਸੀ ਕਿ ਨਵੀਂ ਪੀੜ੍ਹੀ ਪਰੰਪਰਾਗਤ ਸਮਾਜਕ ਬੰਧਨ, ਅਥਰਣ ਲਗ ਪਏ ਸਨ ਪੁਰਾਣੇ ਸਮਾਜ ਦੀ ਦੱਬੀ ਕੁਚਲੀ ਔਰਤ ਵੀ ਹੁਣ ਇਹ ਚਾਹੁਣ ਲੱਗ ਪਈ ਸੀ ਕਿ ਵਿਆਹ ਸਮੇਂ ਉਸਦੀ ਇੱਛਾ ਪੁਛੀ ਜਾਵੇ।

ਬਾਲ ਵਿਆਹ ਸੰਸ਼ੋਧਨ ਅਧੀਨਿਯਮ 1978 ਅਨੁਸਾਰ ਵਿਆਹ ਸਮੇਂ ਲੜਕੀ ਦੇ ਮਾਂ-ਪਿਉ ਜਾਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਪਾਲਣ ਵਾਲਿਆਂ ਦੀ ਮੰਜੂਰੀ ਸਮਾਪਤ ਕਰ ਦਿਤੀ ਗਈ। ਇਸ ਕਾਨੂੰਨ ਦੇ ਅਧੀਨ ਲੜਕਾ-ਲੜਕੀ ਮਾਂ-ਪਿਉ ਦੀ ਇਛਾ ਤੋਂ ਬਿਨਾ ਵੀ ਵਿਆਹ ਕਰਵਾ ਸਕਦੇ ਹਨ। ਕਾਨੂੰਨ ਵੱਲੋਂ ਮਿਲੀ ਇਸ ਖੁਲ੍ਹ ਨੇ ਭਾਰਤੀ ਸਮਾਜ ਖਾਸ ਕਰਕੇ ਪੱਛਮੀ ਸਭਿਆਚਾਰ ਤੋਂ ਪ੍ਰਭਾਵਿਤ ਨਵੀਂ ਪੀੜ੍ਹੀ ਨੂੰ ਬਹੁਤ ਪ੍ਰਭਾਵਿਤ ਕੀਤਾ ਹੈ। ਪੁਰਾਣੇ ਸਮੇਂ ਵਿਚ ਭਾਰਤੀ ਸਮਾਜ ਵਿਚ ਅੰਤਰਜਾਤੀ ਵਿਆਹ ਦਾ ਕਰੜਾ ਵਿਰੋਧ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਸੀ, ਪਰ ਅੱਜ ਦੀ ਪੜ੍ਹੀ-ਲਿਖੀ ਪੀੜ੍ਹੀ ਇਸ ਪ੍ਰਤੀ ਉਦਾਰ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀਕੋਣ ਦੀ ਧਾਰਨੀ ਹੈ। ਅੱਜ ਦਾ ਪੜ੍ਹਿਆ-ਲਿਖਿਆ ਵਰਗ ਜਾਤ-ਪਾਤ ਦਾ ਧਿਆਨ ਨਾ ਰੱਖ ਕੇ ਸੰਬੰਧਿਤ ਧਿਰ ਦੇ ਵਿਅਕਤੀਗਤ ਗੁਣਾਂ, ਵਿਵਸਾਇਕ ਯੋਗਤਾ ਅਤੇ ਚਰਿਤਰ ਨੂੰ ਵਧੇਰੇ ਤਰਜੀਹ ਦਿੰਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਵਰਗ ਗੋਤ ਦੇ ਅੰਦਰ ਵਿਆਹ ਨੂੰ ਵੀ ਮਾੜਾ ਨਹੀਂ ਸਮਝਦਾ। ਕਾਲਜਾਂ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀਆਂ ਵਿਚ ਦਿਤੀ ਜਾਂਦੀ ਸਹਿਸਿਖਿਆ ਅਤੇ ਦਫ਼ਤਰਾਂ ਵਿਚ ਲੜਕੇ-ਲੜਕੀਆਂ ਦੇ ਇਕੱਠੇ ਕੰਮ ਕਰਨ ਦੇ ਸਿੱਟੇ ਵੱਜੋਂ ਉਹ ਇਕ-ਦੂਜੇ ਨੂੰ ਵਧੇਰੇ ਚੰਗੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਸਮਝ ਸਕਦੇ ਹਨ। ਆਪਸੀ ਸਮਝ ਕਰਕੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਵਿਚ ਰੁਮਾਂਟਿਕ ਪਿਆਰ ਭਾਵਨਾ ਪੈਦਾ ਹੋ ਜਾਂਦੀ ਹੈ, ਜਿਸ ਦੇ ਸਿੱਟੇ ਵਜੋਂ ਪਿਆਰ ਵਿਆਹ ਹੋਂਦ ਵਿਚ ਆਉਂਦਾ ਹੈ। ਅਜਿਹੇ ਵਿਆਹਾਂ ਦੇ ਸੰਬੰਧ ਵਿਚ ਇਹ ਤੱਥ ਸਾਹਮਣੇ ਆਉਂਦੇ ਹਨ ਕਿ ਲੜਕੀ ਪਹਿਲਾਂ ਤਾਂ ਆਪਣੇ ਵਿਆਹ ਲਈ ਮਾਂ-ਪਿਉ ਦੀ ਰਜਾਮੰਦੀ ਲੈਣ ਦਾ ਯਤਨ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਪੜ੍ਹੇ-ਲਿਖੇ ਮਾਂ-ਪਿਉ ਤਾਂ ਬੱਚਿਆਂ ਦੀ ਖੁਸ਼ੀ ਲਈ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਵਿਆਹ ਦੀ ਸਵੀਕ੍ਰਿਤੀ ਦੇ ਦਿੰਦੇ ਹਨ ਪਰ ਪੁਰਾਣੇ ਵਿਚਾਰਾਂ ਦੇ ਧਾਰਨੀ ਅਜਿਹੇ ਵਿਆਹ ਨੂੰ ਪਰਵਾਣ ਨਹੀਂ ਕਰਦੇ ਤਾਂ ਲੜਕੀ ਅਦਾਲਤੀ ਵਿਆਹ ਕਰਵਾ ਲੈਂਦੀ ਹੈ।

ਭਾਰਤੀ ਔਰਤ ਦੀ ਪੀੜਿਤ ਸਥਿਤੀ ਦਾ ਇਕ ਹੋਰ ਰੂਪ ਲੜਕੀਆਂ ਨੂੰ ਵੇਚਣ ਦਾ ਰਿਵਾਜ ਵੀ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਅਣਜੋੜ ਵਿਆਹ ਦਾ ਸ਼ਿਕਾਰ ਵੀ ਔਰਤ ਨੂੰ ਹੀ ਹੋਣਾ ਪੈਂਦਾ ਹੈ। ਮਾਂ-ਪਿਉ ਕਈ ਵਾਰ ਤਾਂ 40-45 ਸਾਲ ਜਾਂ ਇਸ ਤੋਂ ਵੀ ਵੱਡੀ ਉਮਰ ਦੇ ਮਰਦ ਨਾਲ 18-19 ਸਾਲ ਦੀ ਮੁਟਿਆਰ ਵਰਗੀ ਲੜਕੀ ਦਾ ਵਿਆਹ ਕਰ ਦਿੰਦੇ ਸੀ। ਅਜਿਹੀ ਸਥਿਤੀ ਵਿਚ ਵਿਵਰਜਿਤ ਰਿਸ਼ਤਿਆਂ ਦੇ ਪੈਦਾ ਹੋਣ ਦੀ ਸੰਭਾਵਨਾ ਆਪਣੇ ਆਪ ਹੀ ਬਣ ਜਾਂਦੀ ਸੀ ਕਿਉਂਕਿ ਕੁਝ ਸਾਲਾਂ ਬਾਅਦ ਮਰਦ ਔਰਤ ਦੀਆਂ ਕਾਮੁਕ ਲੋੜਾਂ ਦੀ

ISBN: 978-81-958181-9-8

ਤ੍ਰਿਪਤੀ ਕਰਨ ਤੋਂ ਅਸਮਰਥ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਸੀ। ਅਜਿਹੀ ਸਥਿਤੀ ਵਿਚ ਕਈ ਵਾਰ ਔਰਤ ਕਿਸੇ ਗ਼ੈਰ ਮਰਦ ਨਾਲ ਨਜਾਇਜ਼ ਸੰਬੰਧ ਜੋੜ ਲੈਂਦੀ ਸੀ।

ਅੱਜ ਭਾਵੇਂ ਔਰਤ ਨੂੰ ਉੱਚ ਸਿਖਿਆ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਨ ਦੀ ਆਜ਼ਾਦੀ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੈ, ਜਿਸ ਕਰਕੇ ਉਹ ਜਾਗਰੂਕ ਹੋ ਗਈ ਹੈ। ਅੱਜ ਉਹ ਘਰ ਦੀ ਚਾਰ ਦੀਵਾਰੀ ਤੋਂ ਬਾਹਰ ਨਿਕਲ ਕੇ ਮਰਦ ਦੇ ਨਾਲ ਮੋਢੇ ਨਾਲ ਮੋਢਾ ਜੋੜ ਕੇ ਕੰਮ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਪਰ ਅੱਜ ਔਰਤ ਦੀ ਸਥਿਤੀ ਉਸ ਮਨੁੱਖ ਵਰਗੀ ਹੈ, ਜਿਸਨੂੰ ਉਸਦੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦੀ ਸਭ ਤੋਂ ਪਿਆਰੀ ਚੀਜ ਇਕ ਵਾਰ ਦਿਖਾ ਕੇ ਫਿਰ ਸਾਰੀ ਉਮਰ ਉਸ ਤੋਂ ਦੂਰ ਕਰਕੇ ਉਸ ਚੀਜ ਲਈ ਤੜਫਾਇਆ ਜਾਵੇ। ਔਰਤ ਵੀ ਮਰਦ ਨਾਲ ਬਰਾਬਰੀ ਅਤੇ ਆਜ਼ਾਦੀ ਚਾਹੁੰਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਉਸ ਨੂੰ ਮਿਲਣੀ ਵੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ। ਉਪਰੀ ਤੌਰ ਤੋ ਤਾਂ ਦਿਖਾਵੇ ਲਈ ਮਰਦ ਔਰਤ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਬਰਾਬਰ ਸਮਝਣ ਦਾ ਦਮ ਭਰਦਾ ਹੈ, ਪਰ ਅਸਲ ਵਿਚ ਸਥਿਤੀ ਇਉਂ ਨਹੀਂ। ਅੱਜ ਔਰਤ ਪਹਿਲੇ ਤੋਂ ਵੀ ਵੱਧ ਦਬੀ-ਕੁਚਲੀ ਸਥਿਤੀ ਵਿਚ ਹੈ ।

ਵਿਆਹ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਆਮ ਤੌਰ 'ਤੇ ਇਹੀ ਆਸ ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਕਿ ਪਤੀ-ਪਤਨੀ ਖੁਸ਼ੀਆਂ ਨਾਲ ਭਰਪੂਰ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਬਤੀਤ ਕਰਨ, ਪਰ ਇਹ ਜਰੂਰੀ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ ਕਿ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਸੁਖੀ ਹੋਵੇ। ਕਈ ਵਾਰ ਕੁਝ ਕਾਰਨਾਂ ਕਰ ਕੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਵਿਚਲਾ ਤਨਾਉ ਇੰਨਾਂ ਵੱਧ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਕਿ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਇਕੱਠੇ ਰਹਿਣਾ ਅਸੰਭਵ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਪੁਰਾਣੇ ਸਮੇਂ ਵਿਚ ਪਤੀ-ਪਤਨੀ ਦੇ ਸੰਬੰਧ ਨੂੰ ਜਨਮ-ਜਨਮਾਂਤਰਾਂ ਦਾ ਸੰਬੰਧ ਮੰਨਿਆ ਜਾਂਦਾ ਸੀ ਅਤੇ ਉਸ ਸਮੇਂ ਪਤੀ ਭਾਵੇਂ ਕਿੰਨਾਂ ਜ਼ਾਲਮ ਕਿਉਂ ਨਾ ਹੋਵੇ, ਪਤਨੀ ਉਸ ਤੋਂ ਵੱਖ ਨਹੀਂ ਹੋ ਸਕਦੀ ਸੀ। ਪੁਰਾਣੇ ਸਮੇਂ ਵਿਚ ਜੇਕਰ ਕੁਝ ਨਿਯਮ ਅਜਿਹੇ ਸਨ, ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਅਨੁਸਾਰ ਔਰਤ ਆਪਣੇ ਪਤੀ ਨੂੰ ਛੱਡ ਸਕਦੀ ਸੀ ਤਾਂ ਉਸ ਉੱਪਰ ਅਮਲ ਕਰਨ ਦਾ ਜ਼ੋਰਾ ਕੋਈ ਔਰਤ ਨਹੀਂ ਕਰਦੀ ਸੀ। ਕਿਉਂਕਿ ਅਜਿਹੀ ਸਥਿਤੀ ਵਿਚ ਸਮਾਜ ਉਸ ਦਾ ਜੀਣਾ ਦੁੱਭਰ ਕਰ ਦਿੰਦਾ ਸੀ, ਪਰ ਹੁਣ ਜੇਕਰ ਪਤੀ-ਪਤਨੀ ਵਿਚ ਅਣਸੁਖਾਵੇਂ ਹਾਲਾਤ ਪੈਦਾ ਹੋ ਜਾਣ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਇਕੱਠਿਆਂ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਬਿਤਾਉਣਾ ਔਖਾ ਹੋ ਜਾਵੇ ਤਾਂ ਉਹ ਇਕ ਦੂਜੇ ਤੋਂ ਵੱਖ ਹੋ ਸਕਦੇ ਹਨ। ਕਿਉਂਕਿ ਹਿੰਦੂ ਵਿਆਹ ਕਾਨੂੰਨ 1955 ਤੇ 1976 ਵਿਚ ਸੰਸ਼ੋਧਿਤ ਕਾਨੂੰਨ ਅਨੁਸਾਰ ਹਰ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੇ ਵਿਆਹ ਚਾਹੇ ਉਹ ਕਿਸੇ ਵੀ ਰਸਮ-ਰਿਵਾਜ ਅਧੀਨ ਕੀਤੇ ਗਏ ਹੋਣ, ਉਨ੍ਹਾਂ ਵਿਚ ਅਣਸੁਖਾਵੇਂ ਹਾਲਾਤ ਪੈਦਾ ਹੋ ਜਾਣ ਦੀ ਸੂਰਤ ਵਿਚ ਇਕ-ਦੂਜੇ ਤੋਂ ਵੱਖ ਹੋਣ ਦੀ ਪਰਵਾਨਗੀ ਦੇ ਦਿਤੀ ਹੈ।

ਇਸ ਕਾਨੂੰਨ ਅਧੀਨ ਪਤੀ ਜਾਂ ਪਤਨੀ ਦੇ ਵਿਆਹ-ਬਾਹਰੋਂ ਜਿਨਸੀ ਸੰਬੰਧ ਹੋਣ ਕਾਰਨ, ਜ਼ੁਲਮੀ ਹੋਣ ਕਾਰਨ, ਹਿੰਦੂ ਧਰਮ ਛੱਡ ਕੇ ਦੂਜਾ ਧਰਮ ਅਪਨਾਉਣ ਕਾਰਨ, ਮਾਨਸਕ ਸਥਿਤੀ ਅਸੰਤੁਲਿਤ ਹੋਣ ਕਾਰਨ, ਪਿਛਲੇ ਸੱਤ ਸਾਲਾਂ ਤੋਂ ਗੁੰਮ ਹੋ ਜਾਣ ਤੇ ਕਿਸੇ ਰਿਸ਼ਤੇਦਾਰ ਨਾਲ ਸੰਪਰਕ ਨਾ ਕਰਨ ਕਾਰਨ,

ISBN: 978-81-958181-9-8

ਪਤੀ ਨੇ ਕਿਸੇ ਔਰਤ ਨਾਲ ਜ਼ਬਰੀ ਜਿਨਸੀ ਸੰਬੰਧ (Rape) ਸਥਾਪਿਤ ਕੀਤੇ ਹੋਣ, ਤਲਾਕ ਦੀ ਅਰਜ਼ੀ ਦੇਣ ਸਮੇਂ ਦੋ ਸਾਲ ਤੋਂ ਵੱਖਰੇ ਰਹਿ ਰਹੇ ਹੋਣ, ਜੇਕਰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਵਿਆਹ ਅਠਾਰਾਂ ਸਾਲ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਹੋਇਆ ਹੋਵੇ ਅਤੇ ਬਾਅਦ ਵਿਚ ਉਹ ਦੋਵੇਂ ਜਾਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੋਹਾਂ 'ਚੋਂ ਇਕ ਦੇ ਉਸ ਵਿਆਹ ਨੂੰ ਨਾ ਮੰਨਣ ਅਤੇ ਪਤੀ ਜਾਂ ਪਤਨੀ ਵੱਲੋਂ ਗ੍ਰਹਿਸਥ ਜੀਵਨ ਤੋਂ ਸੰਨਿਆਸ ਲੈ ਲੈਣ ਕਾਰਨ, ਮਰਦ ਦੇ ਅਵਾਰਾ, ਨਾਮਰਦ ਜਾਂ ਸਮਲਿੰਗੀ ਹੋਣ ਆਦਿ ਕਾਰਨਾਂ ਕਰਕੇ ਪਤੀ ਜਾਂ ਪਤਨੀ ਤਲਾਕ ਦੇ ਹੱਕਦਾਰ ਹਨ। ਜਿਥੇ ਉਹ ਇਕ ਦੂਜੇ ਤੋਂ ਤਲਾਕ ਲੈ ਸਕਦੇ ਹਨ ਉਥੇ ਉਹ ਤਲਾਕ ਹੋਣ ਦੀ ਮਿਤੀ ਤੋਂ ਇਕ ਸਾਲ ਬਾਅਦ ਦੁਬਾਰਾ ਵਿਆਹ ਵੀ ਕਰਵਾ ਸਕਦੇ ਹਨ।

ਭਾਰਤੀ ਸਮਾਜ ਵਿਚ ਔਰਤ ਨੂੰ ਜਨਮ ਤੋਂ ਹੀ ਵਧੀਆ ਨਹੀਂ ਮੰਨਿਆ ਜਾਂਦਾ। ਪੁਰਾਣੇ ਸਮੇਂ ਵਿਚ ਲੜਕੀ ਨੂੰ ਜਨਮ ਲੈਂਦਿਆਂ ਹੀ ਮਾਰ ਦਿਤਾ ਜਾਂਦਾ ਸੀ ਅਤੇ ਵਰਤਮਾਨ ਸਮੇਂ ਵਿਚ ਉਸਨੂੰ ਗਰਭ ਵਿਚ ਹੀ ਮਾਰ ਦਿਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। 2011 ਦੀ ਜਨਗਣਨਾ ਮੁਤਾਬਕ ਪੰਜਾਬ ਵਿਚ ਲੜਕੇ ਤੇ ਲੜਕਿਆਂ ਦਾ ਅਨੁਪਾਤ 1000 ਲੜਕਿਆਂ ਦੇ ਪਿੱਛੇ 893 ਲੜਕੀਆਂ ਹਨ। ਆਖਰੀ ਜਨਗਨਣਾ 2011 ਵਿਚ ਹੋਈ ਜਦੋਂ ਲੜਕੇ-ਲੜਕੀਆਂ ਦਾ ਅਨੁਪਾਤ 1000-940 ਹੈ। National Family and Health Survey ਅਨੁਸਾਰ 2019 ਤੇ 2021 ਦੇ Survey ਅਨੁਸਾਰ ਲੜਕੇ-ਲੜਕੀਆਂ ਦਾ ਜਨਮ ਅਨੁਪਾਤ 1000-1020 ਹੋ ਗਿਆ ਹੈ। ਇਸਦਾ ਅਰਥ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਲੜਕੀਆਂ ਦੀ ਗਿਣਤੀ ਵੱਧ ਗਈ ਹੈ, ਜਿਸਦਾ ਕਾਰਣ ਭਾਰਤ ਵਿਚ ਭਰੂਣ ਹੱਤਿਆ ਦੇ ਵਿਰੁੱਧ ਕਾਨੂੰਨ ਬਨਣਾ ਹੈ।

ਇਹ ਕਾਨੂੰਨ ਹੈ ਭਾਰਤੀਅ ਦੰਡ ਸੰਹਿਤਾ 315 ਦੇ ਤਹਿਤ ਬੱਚੇ ਨੂੰ ਜੀਵਿਤ ਪੈਦਾ ਹੋਣ ਤੋਂ ਰੋਕਣ ਜਾਂ ਜਨਮ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਉਸਦੀ ਮੌਤ ਨਾਲ ਸੰਬੰਧਿਤ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਕਾਰਜ ਅਪਰਾਧ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਅਜਿਹਾ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਨੂੰ 10 ਸਾਲ ਦੀ ਸਜ਼ਾ ਜਾਂ ਜੁਰਮਾਨਾ ਦੋਹੇਂ ਹੋ ਸਕਦੇ ਹਨ। ਪਹਿਲਾਂ ਭਾਰਤੀ ਦੰਡ ਸਹਿੰਤਾ ਅਨੁਸਾਰ ਔਰਤ ਦੀ ਸਹਿਮਤੀ ਤੋਂ ਬਿਨਾ ਗਰਭਪਾਤ ਕਰਵਾਉਣ ਤੇ ਆਜੀਵਨ ਕਾਰਾਵਾਸ ਦੀ ਸਜ਼ਾ ਦਿੱਤੀ ਜਾ ਸਕਦੀ ਹੈ।

Improving Skillset

ਨੈਸ਼ਨਲ ਕਰਾਈਮ ਰਿਕੋਰਡ ਬਿਊਰੋ ਦੀ ਰਿਪੋਰਟ ਦੇ ਜਾਰੀ ਆਂਕੜਿਆਂ ਦੇ ਅਨੁਸਾਰ ਸਾਲ 2021 ਵਿਚ ਬਾਲਿਗ ਔਰਤਾਂ ਨਾਲ ਬਲਾਤਕਾਰ ਦੇ ਕੁਲ 28644 ਮਾਮਲੇ ਦਰਜ ਹੋਏ ਹਨ। ਦੂਜੇ ਪਾਸੇ ਨਾਬਾਲਿਗਾਂ ਦੇ ਨਾਲ 36069 ਘਟਨਾਵਾਂ ਹੋਈਆਂ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਨਾਬਾਲਿਗਾਂ ਦੇ ਆਂਕੜੇ ਦਾ ਵੱਡਾ ਹਿੱਸਾ ਪੋਕਸੋ ਦੇ ਤਹਿਤ ਦਰਜ ਹੋਇਆ।ਨੈਸ਼ਨਲ ਕਰਾਈਮ ਰਿਕੋਰਡ ਬਿਊਰੋ ਦੀ ਰਿਪੋਰਟ ਦੇ ਮੁਤਾਬਿਕ ਦੇਸ਼ ਵਿਚ ਬਾਲਿਗਾਂ ਦੀ ਤੁਲਨਾ ਵਿਚ ਨਾਬਾਲਿਗਾਂ ਨਾਲ ਰੇਪ ਦੀਆਂ ਘਟਨਾਵਾਂ ਜਿਆਦਾ ਹੋ ਰਹਿਆਂ ਹਨ।

ISBN: 978-81-958181-9-8

ਇਸ ਲਈ ਕਾਨੂੰਨ Sexual Assault in Section 375, 376, 354 or 509 IPC and the relating to section of the Code of Criminal Procedure 1979 and the Indian Evidence 1872 ਇਸਦੇ ਅਧੀਨ ਬਣਾਇਆ ਗਿਆ ਹੈ।

ਬਲਾਤਕਾਰ ਦੇ ਵਿਰੁੱਧ ਜੋ ਕਾਨੂੰਨ ਹੈ, ਉਹ ਭਾਰਤੀਅ ਦੰਡ ਸਹਿੰਤਾ 376 ਹੈ। ਜਿਸ ਵਿਚ ਅਪਰਾਧੀ ਨੂੰ ਮੌਤ ਤਕ ਦੀ ਸਜਾ ਦਿਤੀ ਜਾ ਸਕਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਨਾਲ ਅਪਰਾਧ ਦੀ ਗਿਣਤੀ ਘਟੇਗੀ।

ਅੱਜ ਭਾਰਤੀ ਸਮਾਜ ਦੀ ਔਰਤ ਨੇ ਵੀ ਬਹੁਤ ਵਿਕਾਸ ਕਰ ਲਿਆ ਹੈ। ਅੱਜ ਦੀ ਔਰਤ ਜਿਥੇ ਇਕ ਪਾਸੇ ਸਰਕਾਰੀ ਜਾਂ ਗ਼ੈਰ-ਸਰਕਾਰੀ ਅਹੁਦਿਆਂ 'ਤੇ ਬਿਰਾਜਮਾਨ ਹੈ, ਉਥੇ ਦੂਜੇ ਪਾਸੇ ਰਾਜਨੀਤੀ ਵਿਚ ਵੀ ਉਸ ਨੇ ਆਪਣੀ ਥਾਂ ਬਣਾ ਲਈ ਹੈ। ਉਹ ਮਰਦ ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਸਖ਼ਤ ਮਿਹਨਤ ਕਰਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਉਸ ਦੇ ਅਧਿਕਾਰ ਵੀ ਮਰਦ ਦੇ ਬਰਾਬਰ ਹਨ। ਕਈ ਖੇਤਰ ਤਾਂ ਅਜਿਹੇ ਹਨ, ਜਿਥੇ ਉਹ ਮਰਦ ਤੋਂ ਵੀ ਅੱਗੇ ਨਿਕਲ ਗਈ ਹੈ। ਅੱਜ ਆਰਥਕ ਪੱਖੋਂ ਉਹ ਮਰਦ 'ਤੇ ਨਿਰਭਰ ਨਹੀਂ ਰਹੀ। ਮਾਂ-ਪਿਉ ਅਤੇ ਪਤੀ ਦੀ ਜਾਇਦਾਦ ਵਿਚ ਵੀ ਉਸ ਨੂੰ ਬਰਾਬਰ ਦਾ ਹੱਕ ਹਾਸਿਲ ਹੈ। 1931 ਵਿਚ ਬਣੇ 'ਹਿੰਦੂ ਔਰਤਾਂ ਦੇ ਜਾਇਦਾਦ ਉਤੇ ਹੱਕ' ਦੇ ਕਾਨੂੰਨ ਅਧੀਨ ਵਿਧਵਾ ਔਰਤਾਂ ਨੂੰ ਵੀ ਪਤੀ ਦੀ ਜਾਇਦਾਦ ਵਿਚੋਂ ਹਿੱਸਾ ਮਿਲਣ ਲਗਿਆ। ਇਸ ਕਾਨੂੰਨ ਅਨੁਸਾਰ:-

> "ਵਿਧਵਾ ਆਪਣੇ ਪਤੀ ਦੇ ਹਿੱਸੇ ਦੀ ਜਾਇਦਾਦ ਵਿਚੋਂ ਆਪਣਾ ਵੱਖਰਾ ਹਿੱਸਾ ਲੈ ਸਕਦੀ ਹੈ ਤੇ ਇਉਂ ਵੱਖਰੀ ਰਹਿ ਸਕਦੀ ਸੀ।"

ਇਸ ਕਾਨੂੰਨ ਦੇ ਬਣਨ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਔਰਤਾਂ ਵੱਲੋਂ ਜਾਇਦਾਦ ਵਿਚ ਹਿੱਸੇ ਦੀ ਮੰਗ ਸ਼ੁਰੂ ਹੋ ਗਈ। ਇਸ ਕਾਨੂੰਨ ਦੇ ਅਧੀਨ ਸਾਰੀਆਂ ਔਰਤਾਂ ਆਪਣੇ ਪਿਤਾ ਦੀ ਜਾਇਦਾਦ ਵਿਚੋਂ ਹਿੱਸਾ ਲੈ ਸਕਦੀਆਂ ਹਨ।

1930 ਵਿਚ ਪੜ੍ਹਿਆਂ-ਲਿਖਿਆਂ ਜਾਂ ਕੰਮ ਸਿਖਿਆਂ ਨੂੰ ਆਪਣੀ ਆਮਦਨ ਵੱਖਰੀ ਰੱਖਣ ਦੇ ਅਧਿਕਾਰ ਦਾ ਕਾਨੂੰਨ ਪਾਸ ਹੋ ਗਿਆ। ਇਸ ਬਿੱਲ ਦਾ ਨਾਂ ਸੀ 'ਸਿਖਿਆ ਤੋਂ ਲਾਭ ਦਾ ਕਾਨੂੰਨ' (Beneift of Learinng Act)। ਇਸ ਕਾਨੂੰਨ ਅਨੁਸਾਰ ਜਿਸ ਮਨੁੱਖ ਦੀ ਕਮਾਈ ਕਿਸੇ ਸਿੱਖੇ ਹੋਏ ਕੰਮ ਜਾਂ ਵਿਦਿਆ ਉਤੇ ਆਧਾਰਿਤ ਹੈ, ਉਹ ਜੇਕਰ ਚਾਹੇ ਤਾਂ ਆਪਣੀ ਕਮਾਈ ਵੱਖਰੀ ਰੱਖ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਕਾਨੂੰਨ ਨੂੰ ਬਣਾਉਣ ਸਮੇਂ ਇਸ ਗੱਲ ਵੱਲ ਧਿਆਨ ਨਹੀਂ ਦਿਤਾ ਗਿਆ ਕਿ ਉਸ ਨੇ ਵਿਦਿਆ ਭਾਵੇਂ ਸਾਂਝੇ ਪਰਿਵਾਰ ਵਿਚੋਂ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕੀਤੀ ਹੋਵੇਗੀ ਅਤੇ ਉਸ ਦੇ ਪਾਲਣ-ਪੋਸਣ ਵਿਚ ਵੀ ਕੁਝ ਖਰਚ ਆਇਆ

ISBN: 978-81-958181-9-8

ਹੋਵੇਗਾ। 1930 ਅਤੇ 1931 ਵਿਚ ਬਣੇ ਇਸ ਕਾਨੂੰਨ ਅਤੇ ਉਪਰੋਕਤ ਕੁਝ ਹੋਰ ਕਾਨੂੰਨਾਂ ਅਤੇ ਆਮ ਲੋਕਾਂ ਉਪਰ ਹੋ ਰਹੇ ਪੱਛਮੀ ਪ੍ਰਭਾਵ ਕਰ ਕੇ ਸਾਂਝੇ ਪਰਿਵਾਰ ਹੌਲੀ-ਹੌਲੀ ਟੁੱਟਣ ਲਗ ਪਏ।

ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਔਰਤ ਲਈ ਬਣੇ ਕਾਨੂੰਨਾ ਨੇ ਔਰਤ ਦੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਨੂੰ ਸੁਖਾਵਾਂ ਬਣਾ ਦਿਤਾ ਹੈ।

VISHAKSHILA FOUNDATION
Improving Skillset

ISBN: 978-81-958181-9-8

Notes

Improving Skillset

ISBN: 978-81-958181-9-8

Notes

Improving Skillset